सुविचार
दुनिया बड़ी भुलक्कड़ है, केवल उतना ही याद रखती है जितने से उसका स्वार्थ सधता है, बाकी को फेंक कर आगे बढ़ जाती है।
हजारीप्रसाद द्विवेदी

Daily
THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
द फोटोन न्यूज Published from Ranchi

12
कृ की कहानी सुनी तो हंसी नहीं रोक...

Ranchi ● Thursday, 28 March 2024 ● Year : 02 ● Issue : 69 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : ₹3 ● www.thephotonnews.com
E-Paper : epaper.thephotonnews.com

SHARE

सेंसेक्स	:	72,996.31
निफ्टी	:	22,123.65

SARAFA

सोना	:	6,295
चांदी	:	80.02

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

माह-ए-रमजान

इफ्तार (गुरुवार) : 06.08
सेहरी (शुक्रवार) : 04.31

केजरीवाल को गिरफ्तारी और रिमांड से नहीं मिली राहत

दिल्ली हाईकोर्ट ने ईडी से 2 अप्रैल तक जवाब मांगा, आज सीएम पद से हटाने की अर्जी पर सुनवाई

AGENCY NEW DELHI : दिल्ली हाई कोर्ट की जस्टिस स्वर्णकांता शर्मा की बेंच ने दिल्ली आबकारी घोटाला मामले में गिरफ्तार दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की अपनी हिरासत और गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका पर ईडी को नोटिस जारी किया है। कोर्ट ने ईडी से इस मामले में 2 अप्रैल तक जवाब मांगा है। मामले की अगली सुनवाई 3 अप्रैल को होगी। इससे पहले बुधवार पूर्वाह्न में हुई सुनवाई के बाद कोर्ट ने शाम चार बजे फैसला अपलोड करने का आदेश दिया था। उधर, 28 मार्च को केजरीवाल की रिमांड अवधि खत्म हो रही है। इस मामले में गुरुवार को राउज एवेन्यू कोर्ट में सुनवाई होगी। इसके अलावा केजरीवाल को मुख्यमंत्री पद से हटाने की मांग वाली एक जनहित याचिका पर भी गुरुवार को दिल्ली हाईकोर्ट के एएसजी मनमोहन की डिवीजन बेंच सुनवाई करेगी।

- केजरीवाल की दलील का ईडी की ओर से पेश एएसजी एसवी राजू ने विरोध किया
- गिरफ्तारी को चुनौती देनेवाली केजरीवाल की याचिका पर अगली सुनवाई 3 अप्रैल को

केजरीवाल की दलील- चुनाव में पार्टी को निष्क्रिय करने लिए किया अरेस्ट

बुधवार को सुनवाई के दौरान केजरीवाल की ओर से पेश वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि केजरीवाल की गिरफ्तारी की वजह राजनीतिक है। उनको और उनकी पार्टी को लोकसभा चुनाव में निष्क्रिय करने के लिए उनको गिरफ्तार किया गया है। सुनवाई के दौरान सिंघवी ने कहा कि ये गिरफ्तारी लोकतंत्र और संविधान के बुनियादी ढांचे पर हमला है। सिंघवी ने कहा कि जांच 2022 में शुरू हुई थी। उन्होंने कहा कि केजरीवाल को अक्टूबर, 2023 में समन भेजा गया था। बिना बयान दर्ज किए पिछले हफ्ते गिरफ्तार कर लिया गया। अभी ऐसी गिरफ्तारी की क्या जरूरत थी। ऐसा क्या है, जो बिना गिरफ्तार किए ईडी नहीं कर पा रहा था। सिंघवी ने कहा कि मैंने पहले भी कहा था कि वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए पूछताछ कर सकते हैं लेकिन नहीं किया। अब गिरफ्तार करने के बाद कहते हैं कि सबूतों के साथ छेड़छाड़ कर सकते हैं जबकि इस मामले में गिरफ्तारी की जरूरत ही नहीं थी। सिंघवी की दलील खत्म होने के बाद वरिष्ठ वकील अमित देसाई ने केजरीवाल की ओर से दलील रखने की कोशिश की।

आईपीएल में बना सबसे बड़ा स्कोर, हैदराबाद ने मुंबई को 31 रनों से रौंदा

- रोहित शर्मा 12 बॉल पर 26 रन बनाकर आउट
- हार्दिक पंड्या 20 बॉल पर 24 रन बनाकर आउट
- तिलक वर्मा 64 रन बनाकर आउट हुए
- हार्दिक पंड्या एमआई के लिए 100 सिक्स लगाने वाले तीसरे बल्लेबाज बने
- तिलक वर्मा ने शाहबाज के ओवर में लगातार तीन छक्के मारे

AGENCY NEW DELHI : सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) ने इंडियन प्रीमियर लीग-2024 में पहली जीत हासिल की है। टीम ने बुधवार को मौजूदा सीजन के 8वें मैच में मुंबई इंडियंस (एमआई) को 31 रन से हराया। हैदराबाद ने आईपीएल इतिहास का सबसे बड़ा स्कोर बनाया। पिछला रिकॉर्ड आरसीबी के नाम दर्ज था। बेंगलुरु ने 2013 के सीजन में पुणे वॉरियर्स के खिलाफ 263 रन बनाए थे। राजीव गांधी इंटरनेशनल स्टेडियम में बुधवार को मुंबई ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी। हैदराबाद ने 20 ओवर में 3 विकेट पर 277 रन बनाए। जवाब में मुंबई इंडियंस की टीम 20 ओवर में 5 विकेट पर 246 रन ही बना सकी। पैट कमिंस और जयदेव उनादकट ने 2-2 विकेट लिए। हैदराबाद के लिए अभिषेक शर्मा ने 23 बॉल पर 63, ट्रैविड हेड ने 24 बॉल पर 62 रन और हेनरिक क्लासन ने 34 बॉल पर 80 रन बनाए। ऐडन मार्करम ने 28 बॉल पर 42 रन का योगदान दिया। हार्दिक पंड्या और जेराल्ड कूट्जी को एक-एक विकेट मिला। मुंबई के बैटर तिलक वर्मा ने 10वां ओवर लेकर आए शाहबाज अहमद के ओवर में लगातार तीन छक्के जमाए। उन्होंने दूसरी, तीसरी और 5वीं बॉल पर सिक्स जमाया। इस ओवर से 22 रन आए। 10 ओवर के बाद मुंबई का स्कोर 141/2 रहा। 66 रन पर दो विकेट गंवाने के बाद नमन धीर और तिलक वर्मा के बीच तीसरे विकेट के लिए अर्धशतकीय साझेदारी हो चुकी है। 9 ओवर के बाद मुंबई का स्कोर 119/2 रहा। हार्दिक पंड्या मुंबई इंडियंस के लिए 100 सिक्स लगाने वाले तीसरे खिलाड़ी बन गए है। इससे पहले रोहित शर्मा और कीरोन पोलार्ड टीम के लिए 100 से ज्यादा सिक्स लगा चुके है। तिलक वर्मा 64 रन बनाकर आउट हुए। 34 बॉल में तिलक ने 64 रन बनाए। वे पैट कमिंस की बॉल पर 15वें ओवर में आउट हुए। कमिंस को

BRIEF NEWS

राज्य में मॉर्निंग कोर्ट एक अप्रैल से

RANCHI : रांची सिविल कोर्ट सहित झारखंड के सभी जिला न्यायालयों में एक अप्रैल से मॉर्निंग कोर्ट में मुकदमों की सुनवाई शुरू हो जाएगी। बुधवार को मिली जानकारी के अनुसार झारखंड हाई कोर्ट ने पत्र जारी कर मॉर्निंग कोर्ट में सुनवाई शुरू करने की सूचना जारी कर दी है। मॉर्निंग कोर्ट में अदालत के कामकाज का समय सुबह 7 बजे से लेकर दोपहर के 12 बजे तक निर्धारित किया गया है। यह व्यवस्था 29 जून तक चलेगी। फिलहाल झारखंड की निचली अदालतों में डे कोर्ट में सुनवाई हो रही है।

वाशिंग मशीन से 2.5 करोड़ कैश बरामद

NEW DELHI : प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने पिछले कुछ समय में अलग-अलग राज्यों में छापे मारकर करोड़ों रुपये जब्त किए हैं। इस क्रम में ईडी ने एक वाशिंग मशीन में छुपा कर रखे गए करीब 2.50 करोड़ रुपये भी जब्त किए। यह कार्रवाई विदेशी मुद्रा कानून के तहत की गई है। प्रवर्तन निदेशालय के अनुसार, विदेशी मुद्रा कानून (फेमा) के कथित उल्लंघन के एक मामले के सिलसिले में विभिन्न शहरों में तलाशी के दौरान 2.54 करोड़ रुपये की नकदी जब्त की है। इसका एक हिस्सा 'वाशिंग मशीन' में छुपा कर रखा गया था। निदेशालय ने बयान में कहा कि कैपरीकोरनियान शिपिंग एंड लॉजिस्टिक्स प्राइवेट लिमिटेड जैसी कंपनियों और इसके निदेशकों विजय कुमार शुक्ला और संजय गोस्वामी तथा संबंधित कंपनियों के परिसरों में तलाशी ली गई।

कोलकाता एयरपोर्ट पर एअर इंडिया से टकराया इंडिगो विमान

NEW DELHI : कोलकाता एयरपोर्ट पर बुधवार को रनवे पर खड़े एअर इंडिया विमान से इंडिगो की फ्लाइट टकरा गई। इस टक्कर से दोनों विमानों को नुकसान पहुंचा है। एअर इंडिया फ्लाइट के पंख का एक हिस्सा टूटकर गिर गया। इस घटना को लेकर डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन (डीजीसीए) ने जांच के आदेश दे दिए हैं। साथ ही इंडिगो के पायलट और को-पायलट दोनों को ऑफ ड्यूटी कर दिया गया। डीजीसीए के एक अधिकारी ने बताया कि यह घटना इंडिगो की ए320 वीटी-आईएसएस फ्लाइट और एअर इंडिया एक्सप्रेस 737 वीटी-टीजीजी के बीच की है।

मिशन 2024 : कांग्रेस ने झारखंड में उतारे 3 उम्मीदवार

हजारीबाग से जेपी, खूंटी से कालीचरण ठोकेंगे दावा

PHOTON NEWS RANCHI : लोकसभा चुनाव 2024 के लिए झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने बुधवार को अपने 3 उम्मीदवारों की घोषणा कर दी। कालीचरण मुंडा खूंटी लोकसभा सीट से कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ेंगे। सुखदेव भगत लोहरदगा से और जेपी पटेल हजारीबाग संसदीय सीट से कांग्रेस के उम्मीदवार बनाए गए हैं। दिल्ली में हुई केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक के बाद इसकी घोषणा की गई। कांग्रेस की केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक के बाद 4 राज्यों के 14 उम्मीदवारों के नाम का ऐलान किया गया, जिसमें झारखंड के तीन उम्मीदवार शामिल हैं। भाजपा छोड़कर कांग्रेस में शामिल हुए जयप्रकाश भाई पटेल को हजारीबाग से मैदान में उतारा गया है। अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित लोहरदगा सीट पर पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सुखदेव भगत को मौका दिया गया है। कालीचरण मुंडा को कांग्रेस ने अपना उम्मीदवार घोषित किया है। रांची से सुबोधकांत सहाय को टिकट मिलने की प्रबल संभावना जताई जा रही थी, लेकिन उनके नाम का ऐलान नहीं हुआ।

जयप्रकाश भाई पटेल

कालीचरण मुंडा

सुखदेव भगत

केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक में फैसला

सहयोगी दलों से बातचीत और सीटों के बंटवारे के बाद झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष और झारखंड प्रदेश कांग्रेस के प्रभारी गुलाम अहमद मीर नई दिल्ली में आयोजित कांग्रेस चुनाव समिति की बैठक में शामिल हुए। बैठक में ये फैसला लिया गया। बैठक के बाद मीडिया से मुखातिब हुए गुलाम अहमद मीर ने पार्टी के कार्यकर्ताओं एवं नेताओं से अपील की कि वर्तमान सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए एकजुट होकर काम करें।

रांची, लोहरदगा, हजारीबाग व खूंटी सीट पर हुई गहन चर्चा

झारखंड कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेता भी इस बैठक में शामिल हुए। सूत्रों ने बताया कि सेंट्रल इलेक्शन कमेटी (सीईसी) की बैठक में झारखंड की 4 लोकसभा सीटों पर उम्मीदवारों के बारे में चर्चा हुई। ये चार सीटें रांची, खूंटी, लोहरदगा और हजारीबाग हैं। रांची को छोड़कर बाकी 3 सीटों पर उम्मीदवारों की घोषणा कर दी गई है। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की उपस्थिति में हुई कांग्रेस की सेंट्रल इलेक्शन कमेटी (केंद्रीय चुनाव समिति) की बैठक में संसदीय दल की चेयरपर्सन सोनिया गांधी भी मौजूद थीं। उनके साथ पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) केसी वेणुगोपाल और राष्ट्रीय महासचिव सह झारखंड कांग्रेस के प्रभारी गुलाम अहमद मीर एवं झारखंड प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश कुमार ठाकुर शामिल हुए।

ईडी ने महुआ मोइत्रा व दर्शन हीरानंदानी को भेजा समन, 28 को किया तलब

NEW DELHI : प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने तृणमूल कांग्रेस पार्टी (टीएमसी) नेत्री महुआ मोइत्रा और दर्शन हीरानंदानी को विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा) नियमों के उल्लंघन मामले में समन भेजा है। केंद्रीय जांच एजेंसी ने महुआ मोइत्रा को पूछताछ के लिए 28 मार्च को दिल्ली स्थित ईडी मुख्यालय में बुलाया है। आधिकारिक सूत्रों ने बुधवार को बताया कि प्रवर्तन निदेशालय ने फेमा नियमों के उल्लंघन मामले में यह समन भेजा है। उल्लेखनीय है कि केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने कैश फॉर क्वेरी मामले में महुआ मोइत्रा और दर्शन हीरानंदानी को आरोपित किया है। सीबीआई ने 19 मार्च को लोकपाल के आदेश के बाद पूर्व टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा और दर्शन हीरानंदनी और अन्य अज्ञात आरोपितों के खिलाफ आईपीसी की धारा-120 बी और प्रिवेंशन ऑफ करप्शन एक्ट की धारा 7, 8 और 12 के तहत केस दर्ज कर जांच शुरू की है।

केरल सीएम की बेटी वीणा के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग का केस

AGENCY KOCCHI : केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन की बेटी वीणा विजयन के खिलाफ ईडी ने 27 मार्च बुधवार को मनी लॉन्ड्रिंग का केस दर्ज किया। एजेंसी का कहना है कि वीणा की आईटी कंपनी एक्सालॉजिक सॉल्यूशन को प्राइवेट खनिज कंपनी कोचीन मिनरल्स एंड रूटाइल लिमिटेड (सीएमआरएल) ने 1.72 करोड़ का अवैध तरीके से भुगतान किया है। ईडी ने वीणा के अलावा उनकी कंपनी और कुछ अन्य लोगों के खिलाफ भी केस दर्ज किया है। एजेंसी मामले में शामिल लोगों को समन भी जारी करेगी। ईडी ने यह केस एसएफआईओ की शिकायत के बाद दर्ज किया है।

ईडी के जब्त 3000 करोड़ गरीबों को लौटाएंगे : PM

NEW DELHI : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को पश्चिम बंगाल की कृष्णानगर लोकसभा सीट से बीजेपी की उम्मीदवार राजमाता अमृता रॉय से फोन पर चर्चा की। बातचीत में पीएम ने अमृता से उनके चुनाव प्रचार की तैयारियों के बारे में जाना। पीएम ने उन्हें बताया कि वे उन कानूनी विकल्पों पर काम कर रहे हैं, जो ये सुनिश्चित कर सकें कि बंगाल के गरीबों से लूटा गया 3 हजार करोड़ रुपए, ईडी की ओर से भ्रष्टाचारियों से जब्त की गई संपत्ति के जरिए उन्हीं लोगों को वापस लौटाया जाए। पीएम ने अमृता रॉय से कहा कि यह बात सभी को बताएं। अमृता राय पूर्व राजघराने की सदस्य हैं। वे टीएमसी की उम्मीदवार महुआ मोइत्रा के खिलाफ मैदान में हैं। एक दिन पहले मोदी ने संदेशखाली की पीड़त भाजपा उम्मीदवार रेखा पात्रा से बात की थी।

आर्टिकल जांचे बिना हटाना मौत की सजा के बराबर

SC ने कहा- ये फ्रीडम ऑफ स्पीच के लिए खतरा, निचली अदालत के फैसले को पलटा

AGENCY NEW DELHI : सुप्रीम कोर्ट ने एक मीडिया हाउस में पब्लिश आर्टिकल को लेकर 22 मार्च को अहम फैसला सुनाया। कोर्ट ने कहा- कोई आर्टिकल कितना नुकसानदायक है, यह जाने बिना उस पर रोक लगाना मौत की सजा देने के बराबर है। कोर्ट ने कहा- ये फ्रीडम ऑफ स्पीच के लिए गंभीर खतरा है। ऐसा करने से गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। इसके साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने निचली अदालत के फैसले को पलटते हुए आर्टिकल पर लगी रोक हटा दी। यह मामला ब्लूमबर्ग में जी एंटरटेनमेंट के खिलाफ छपे एक आर्टिकल को लेकर है। लोअर कोर्ट और हाईकोर्ट ने आर्टिकल को हटाने का आदेश दिया था। जिसके बाद मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा था।

- डिस्ट्रिक्ट कोर्ट ने मीडिया हाउस को पब्लिश आर्टिकल को हटाने का दिया था निर्देश

तीन सदस्यीय बेंच ने सुनाया फैसला

भारत के चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और मनोज मिश्रा की पीठ ने इस मामले की सुनवाई की। कोर्ट ने कहा- किसी भी मीडिया आर्टिकल के पब्लिकेशंस पर रोक लगाने के आदेशों में अदालतों को सावधानी बरतनी चाहिए, खासकर जब यह साबित होना बाकी है कि ऐसे आर्टिकल का कंटेंट दुर्भावनापूर्ण या गलत तो नहीं है। 21 फरवरी को ब्लूमबर्ग ने जी एंटरटेनमेंट के खिलाफ एक आर्टिकल पब्लिश किया। ब्लूमबर्ग ने अपने आर्टिकल में कहा कि सिक्योरिटी एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी) ने जी एंटरटेनमेंट लिमिटेड के अकाउंटिंग में 241 मिलियन डॉलर को लेकर कुछ गड़बड़ पाया। हालांकि सेबी की तरफ से इस संबंध में कोई आदेश पारित नहीं किया गया था। आर्टिकल सामने आने के बाद जी कंपनी ने इन आरोपों को सिरे से खारिज कर दिया। जी ने कहा- ब्लूमबर्ग ने रएइकके ऑर्डर के बिना गलत और फर्जी रिपोर्ट छाप दी।

भारत-अमेरिकी सेनाओं के बीच 'टाइगर ट्राइंफ' अभ्यास का समुद्री चरण शुरू

और मजबूत होगी भारत-अमेरिका की ताकत, कांपेंगे दुश्मन

AGENCY NEW DELHI : भारत और अमेरिका के बीच तीनों सेनाओं के द्विपक्षीय अभ्यास 'टाइगर ट्राइंफ' का समुद्री चरण शुरू हो गया है। इसके तहत दोनों देशों की नौसेनाएं संयुक्त कमान, नियंत्रण केंद्र, संयुक्त राहत और चिकित्सा शिविर स्थापित करेंगी। यह अभ्यास दोनों देशों के बीच मजबूत रणनीतिक साझेदारी को दर्शाता है। भारतीय नौसेना और अमेरिकी नौसेना के बीच टाइगर ट्राइंफ का उद्घाटन 19 मार्च को आईएनएस जलाश्व पर हुआ था। अभ्यास का हार्बर चरण 18 से 25 मार्च तक विशाखापट्टनम में आयोजित किया गया। बंदरगाह चरण के दौरान विशेषज्ञों के साथ पेशेवर चचाओं में विभिन्न कार्यों की योजना और निष्पादन प्रक्रियाओं के बारे में विचार-विमर्श किया गया। दोनों देशों के सशस्त्र बलों के कर्मियों के बीच सौहार्द्र बढ़ाने के लिए खेल कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। इस दौरान दोनों देशों की सेनाओं के बीच त्वरित और सुचारू समन्वय सक्षम बनाने के लिए मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) के बारे में भी चर्चा हुई। समुद्री चरण का अभ्यास 26 मार्च से शुरू हुआ है, जो 31 मार्च तक चलेगा। समुद्री अभ्यास में अमेरिकी नौसेना का यूएस नेवी लैंडिंग प्लेटफॉर्म डॉक शामिल होगा, जिसमें इसके इंटेग्रल लैंडिंग क्राफ्ट एयर कुशन और हेलीकॉप्टर, एक विध्वंसक, समुद्री टोही और मीडियम लिफ्ट एयरक्राफ्ट और यूएस मरीन भी शामिल होंगे। अभ्यास में भारतीय नौसेना का एक लैंडिंग प्लेटफॉर्म डॉक, लैंडिंग शिप टैंक (विशाल) भाग लेगा, जिनमें उनके इंटेग्रल लैंडिंग क्राफ्ट और हेलीकॉप्टर, गाइडेड मिसाइल फ्रिगेट और लंबी

- विशाखापट्टनम में खत्म हुए हार्बर चरण में हुई विशेषज्ञों के साथ पेशेवर चर्चा
- समुद्री चरण में तीनों सेनाओं के विशेष कार्रवाई बल भी अभ्यास में भाग लेंगे

वायुसेना सीमापार भी दिखा सकती ताकत : चौधरी

NEW DELHI : इंडियन एयरफोर्स के प्रमुख एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी ने बुधवार को कहा कि अगर राजनीतिक इच्छाशक्ति हो तो दुश्मन की सीमा में दाखिल होकर वायुसेना की ताकत दिखाई जा सकती है। बालाकोट जैसे ऑपरेशन में यह साबित भी हुआ है। वीआर चौधरी ने यह बात दिल्ली में एयरोस्पेस पावर इन फ्यूचर कॉन्फिलक्ट्स विषय पर सेमिनार में कही। उन्होंने कहा कि रणनीतिक फायदे के लिए आज सभी देश स्पेस बेस्ड एसेट्स पर निर्भर करते हैं। अंतरिक्ष का सैन्यीकरण और शस्त्रीकरण आज की हकीकत बन गई है। 14 फरवरी 2019 को पुलवामा में सीआरपीएफ जवानों के काफिले पर हुए आतंकी हमले में 40 जवान शहीद हुए थे। इसके जवाब में इंडियन एयरफोर्स ने 26 फरवरी को पीओके के बालाकोट में एयरस्ट्राइक की थी। इसमें जैश के ठिकानों पर बम बरसाए गए, जिसमें करीब 300 आतंकी मारे गए थे।

एमपी-बिहार, बंगाल के बीजेपी स्टार प्रचारकों की लिस्ट जारी

NEW DELHI : चुनाव को लेकर तीन राज्यों के लिए स्टार प्रचारकों की लिस्ट जारी कर दी है। इनमें मध्यप्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल शामिल हैं। सभी राज्यों में भाजप के 40-40 दिग्गज नेताओं के नाम हैं। पीएम मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा तीनों राज्यों में जनसभाएं करेंगे। इधर, तृणमूल कांग्रेस पार्टी ने लोकसभा चुनावों को लेकर पश्चिम बंगाल में अपने स्टार प्रचारकों की सूची जारी कर दी है। तृणमूल कांग्रेस ने अपने स्टार प्रचारकों की लिस्ट में 40 नेताओं के नाम शामिल किए हैं, जिसमें सबसे ऊपर पार्टी सुप्रीमो और सूबे की मुख?यमंत्री ममता बनर्जी का नाम है। हालांकि, इसमें पार्टी की फायरब्रांड नेता महुआ मोइत्रा का नाम नहीं है।

मिशन 2024 : बीजेपी ने जारी की सातवीं लिस्ट

अमरावती से नवनीत राणा व चित्रदुर्ग से करजोल को टिकट

AGENCY NEW DELHI : भाजपा ने बुधवार को 2024 लोकसभा चुनाव के लिए अपनी सातवीं उम्मीदवार सूची जारी की। इस सूची में महाराष्ट्र के अमरावती और कर्नाटक के चित्रदुर्ग लोकसभा सीट से उम्मीदवारों के नामों का ऐलान किया गया है। भाजपा सातवीं सूची के साथ लोकसभा चुनाव 2024 के लिए 407 नामों का ऐलान कर चुकी है। अमरावती सीट से नवनीत राणा को टिकट दिया गया है। जबकि, कर्नाटक के चित्रदुर्ग (एससी) सीट से दोविंद करजोल को उम्मीदवार बनाया गया है। मुंबई में जन्मी नवनीत राणा भाजपा की कद्दावर नेता हैं। उन्होंने 2019 लोकसभा चुनाव में अमरावती सीट से निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर जीत दर्ज की थी। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को लोकसभा टिकट देने के बाद भाजपा ने करनाल विधानसभा सीट से मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की उम्मीदवारी भी फाइनल कर दी है।

नवनीत राणा

दोहरे हत्याकांड के 48 घंटे बाद एक और युवक की गोली मारकर हत्या

पलामू के कल्याणपुर थाना क्षेत्र की घटना, मृतक का पहले से रहा आपराधिक इतिहास

घटना के बाद अस्पताल में लगी भीड़। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS PALAMU : चैनपुर थाना क्षेत्र में दोहरे हत्याकांड के 48 घंटे के बाद तीसरे युवक की हत्या कर दी गई। इस बार घटना थाना क्षेत्र के कल्याणपुर में हुई। मनोज चौधरी नामक युवक की गोली मारकर हत्या कर दी गई। हालांकि गोली लगने के बाद युवक को इलाज के लिए एमआरएमसीएच में ले जाया गया, लेकिन डॉक्टर ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। मृत मनोज चौधरी का आपराधिक इतिहास रहा है। उसके खिलाफ कई मामले दर्ज हैं।

रविवार की सुबह चैनपुर थाना क्षेत्र के ही शाहपुर सेमरताड़ कोयल नदी में दो युवकों राजेश कुमार एवं सुजीत भुइयां उर्फ बौधा पर हमला किया गया था। राजेश को घटनास्थल पर ही तेज धारदार हथियार से मार डाला गया था, जबकि सुजीत को मेदिनीनगर शहर थाना क्षेत्र के नावाटोली में हत्या कर दी गई थी।

चैनपुर के थाना प्रभारी सोनू कुमार चौधरी ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि मनोज चौधरी की हत्या उसके गोतिया परिवार के लोगों ने की है। दो दिन पहले हुई दो युवकों की हत्या से इस घटना का कोई लेना-देना नहीं है।

उन्होंने बताया कि मंगलवार की रात करीब 9.30 बजे कल्याणपुर में मनोज चौधरी अपने घर के समीप कुछ लोगों के साथ खाना पीना कर रहा था। इसी क्रम में अचानक गोतिया के अजय चौधरी, शंभू चौधरी सहित अन्य ने उस पर अटैक किया। पहले तेजधार हथियार उसके शरीर में घोंप दिया। बाद में उसे गोली मार दी।

थाना प्रभारी ने बताया कि दो दिन पहले मनोज का गोतिया परिवार से विवाद हुआ था। मनोज ने इसे हल्के में लिया। गोतिया के लोगों ने होली का फायदा उठाया। जब मनोज नशे में हुआ तो गोतिया के लोगों ने पहले उसपर तेज धारदार हथियार से वार किया। फिर गोली मार दी। थाना प्रभारी ने कहा कि घटना में शामिल लोगों की पहचान हो गई है। गिरफ्तारी के लिए छापामारी की जा रही है।

पलामू में दिनदहाड़े गोली मारकर दो लोगों की हत्या

PALAMU : जिले में अपराधी बेलगाम हो गए हैं। हत्या मामले में जेल की सजा काटकर बाहर निकले राजमोहन पोलू समेत दो की बुधवार दोपहर हत्या कर दी गयी। जिला मुख्यालय मेदिनीनगर से सटे चैनपुर थाना क्षेत्र के शाहपुर में राजमोहन पोलू के घर में दोनों शव खून से लथपथ हालात में मिले। दिनदहाड़े हुई इस घटना से इलाके में सनसनी फैल गयी। उल्लेखनीय है कि पिछले 48 घंटे के दौरान पांच लोगों की हत्या कर दी गयी। इनमें से चार लोगों की हत्या दिन के उजाले में हुई। एक किलोमीटर के एरिया में सभी घटनाओं को अंजाम दिया गया। उल्लेखनीय है कि राजमोहन पोलू ने जनवरी, 2016 में पड़ोसी आलोक मिस्त्री की गोली मारकर हत्या कर दी थी। जमीन विवाद में हत्या करने की बात सामने आयी थी। मई, 2017 में राजमोहन पोलू को इस केस में उम्र कैद की सजा हो गयी। वह सजा काटकर डेढ़ महीने पहले जेल से निकला था।

जांच पड़ताल करती पुलिस।

दो अलग-अलग सड़क दुर्घटनाओं में एक व्यक्ति की मौत, रोड जाम

PHOTON NEWS GUMLA : गुमला के भरनो में मंगलवार की देर शाम दो अलग अलग सड़क दुर्घटनाओं में एक व्यक्ति की मौत हो गयी थी। जबकि एक घायल हो गया। ये दोनों घटना के एनएच 23 रांची गुमला मुख्य मार्ग पर घटी। मृतक की पहचान दुंबो काशीटोली गांव निवासी सिमोन बाड़ा के रुप में हुई। इसके बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने सड़क जाम कर दिया। लेकिन इसके थोड़ी देर बाद ही वहां पर एक और हादसा हो गया। जहां जाम में फंसे एक खड़े कंटेनर को कार ने पीछे से टक्कर मार दी। इस घटना में कोनबीर निवासी अनमोल तिवारी गंभीर रुप से घायल हो गये। टक्कर इतनी जोरदार थी कि कार के परखच्चे उड़ गये।

जामकर्ताओं और पुलिस के बीच झड़प

घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस प्रशासन घटनास्थल पर पहुंची और जाम करने वालों को समझाने का प्रयास किया। लेकिन मामला सुलझने की बजाय जामकताओं और पुलिस के बीच झड़प हो गयी। उग्र भीड़ ने पुलिस पर डंडे से हमला कर दिया। जिसमें भरनो थाना के सब इंस्पेक्टर के सिर पर गहरी चोट लगी। इसके अलावा थानेदार अरविंद कुमार के भी पीठ और हाथ में भी चोट लगी है।

प्रशासन ने मृतक के परिजनों को दिया सरकारी योजना का लाभ दिलाने का आश्वसन

आनन फानन में सब इंस्पेक्टर को पुलिस की वैन में बैठाकर भरनो अस्पताल पहुंचाया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए बसिया सर्किल इंस्पेक्टर जितेंद्र राम, सिसई थाना के सहायक थानेदार अनुज कुमार, कंरज थानेदार आशीष केशरी दल-बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और उग्र भीड़ समझाने में कामयाब रहे। प्रशासन ने मृतक के परिजनों को दाह संस्कार के लिए 10 हजार रुपये देने और सरकारी प्रावधान के अनुसार सरकारी योजना का लाभ व सहायता करने का आश्वसन दिया। इसके बाद शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए गुमला भेजा गया।

पुलिस ने पांच आरोपियों को किया गिरफ्तार, भेजा जेल

जानकारी देते पुलिस अधिकारी। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS HAZARIBAGH : जिले के बड़कागांव थाना क्षेत्र अन्तर्गत बलोदर गांव में पक्की सड़क एवं पुल निर्माण कार्य कर रहे लाल कंस्ट्रक्शन में कार्यरत जेसीबी को जलाने के प्रयास और फायरिंग के मामले में पांच आरोपितों को गिरफ्तार कर बुधवार को जेल भेज दिया गया।

अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, बड़कागांव, हजारीबाग के नेतृत्व में पुअनि मुकेश कुमार सिंह, थाना प्रभारी बड़कागांव थाना, थाना रिजर्व गार्ड एवं विशेष छापेमारी दल ने सुलेन्द्र गंझू, एरियल सिंह भोक्ता उर्फ एरियल गंझू उर्फ बल्लू भोक्ता, राजेश गंझू उर्फ बंधन गंझू को पकड़ा। इनकी निशानदेही पर सुनील यादव, प्रिंस कुमार सिंह को कोडरमा जयनगर स्थित घर से गिरफ्तार किया गया। शेष अन्य अभियुक्तों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी अभियान जारी है। इनके पास से पुलिस ने कट्टा, गोली और मोबाइल बरामद हुआ है।

होली मिलन में चाकूबाजी, दो सगे भाई जख्मी, पिता-पुत्र समेत तीन गिरफ्तार

PALAMU : मेदिनीनगर सदर थाना क्षेत्र के सिंगरा खुर्द में देवी मंडप के पास होली मिलन कार्यक्रम के दौरान जमकर चाकूबाजी हुई, जिससे दो सगे भाई जख्मी हो गए। इनमें से एक को बेहतर इलाज के बाद रांची रिम्स रेफर कर दिया गया है। हालांकि उसका इलाज मेडिका में चल रहा है। उसके सीने की नश कट गयी है। युवक की स्थिति चिंताजनक बताई गई है। जख्मी युवकों में सिंगरा खुर्द के गुंजन शुक्ला और धीरज शुक्ला पिता विजय शुक्ला हैं। गुंजन शुक्ला को रेफर किया गया है। एमआरएमसीएच में इलाज के दौरान धीरज शुक्ला एवं उसके साथ आए गांव के अन्य लोगों ने घटना की पूरी जानकारी दी और पुलिस से कार्रवाई करने का आग्रह किया।

गुमला में हथियार के साथ दो गिरफ्तार बड़ी वारदात को देने वाले थे अंजाम

गिरफ्तार युवक व जानकारी देती पुलिस। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS GUMLA : गुमला जिला अंतर्गत बसिया थाना की पुलिस ने दो युवकों को हथियार के साथ गिरफ्तार किया है। जिसमें लुंगटू पंडरा टोली के लक्ष्मण सिंह व लुंगटू गांव के सुनील कुमार है। इन दोनों के पास से पिस्तौल व गोली बरामद हुआ है। बताया जाता है कि ये सभी किसी घटना को अंजाम देने जा रहे थे। तभी पुलिस ने वाहन चेकिंग अभियान के दौरान दोनों को पकड़ा।

पूछताछ के बाद दोनों को जेल भेज दिया गया है। बसिया अनुमंडल के एसडीपीओ नाजिर अख्तर ने बताया कि होली पर्व को देखते हुए पुलिस अधीक्षक गुमला के निर्देश पर जिले के सभी थाना क्षेत्र में चौक चौराहों पर सघन वाहन जांच अभियान चलाया जा रहा था। इसी निर्देश के आलोक में बसिया थाना में पदस्थापित गस्ती दल एवं अन्य पुलिस पदाधिकारियों के साथ करीब रात 10।30 बजे कुम्हारी तालाब चौक पर दुपहिया एवं चार पहिया वाहनों की जांच की गयी।

तभी एक मोटरसाइकिल जेएच07जी-1619 पर पर सवार होकर दो युवक बसिया सिसई रोड से कुम्हारी चौक की ओर आ रहे थे। दोनों युवकों को पुलिस ने रूकने का इशारा किया। लेकिन पुलिस को देखते ही दोनों युवक मोटरसाइकिल को मोड़ते हुए भागने का प्रयास किया। इस वजह से पुलिस को संदेह हुआ कि वे किसी बड़ी घटना को अंजाम देने जा रहे हैं।

इसके बाद पुलिस ने उन युवकों को पीछा कर पकड़ लिया। पूछताछ में दोनों ने अपना नाम लक्ष्मण सिंह व सुनील कुमार बताया। दोनों की तलाशी लेने पर लक्ष्मण सिंह के दाहिने कमर से एक देशी पिस्तौल व चार गोली बरामद हुआ। वहीं, सुनील कुमार के जेब से तीन जिंदा गोली बरामद हुआ है। दोनों को गिरफ्तार कर गुमला जेल भेज दिया गया। छापामारी दल में पुअनि सह थाना प्रभारी पुनीत मिंज, धीरज कुमार सिंह, सअनि बुद्धदेव उरांव, आरक्षी दीपक कुमार, अल्बर्ट एक्का, करमा उरांव शामिल थे।

एकतरफा प्यार में अंधे प्रेमी ने युवती के भाई की कर दी हत्या

गिरफ्तार आरोपी। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS RAMGARH : एक तरफ जहां पूरा समाज होली के रंग में सराबोर था, वहीं दूसरी तरफ एकतरफा प्यार में अंधे एक 19 वर्षीय प्रेमी ने युवती के 14 वर्षीय भाई की हत्या कर डाली। जिले के गोला प्रखंड में हुई इस जघन्य अपराध का जब खुलासा हुआ तो हर व्यक्ति आवाक रह गया। रामगढ़ एसपी डॉ विमल कुमार ने बताया कि हत्यारे सूरज कुमार महतो को गिरफ्तार कर लिया गया है। साथ ही उसकी निशानदेही पर 14 वर्षीय बच्चे की लाश भी जंगल से बरामद कर ली गई है।

एसपी ने बताया कि 25 मार्च को रवि कुमार (14) का अपहरण उसके गांव कोराम्बे से हुआ था। रवि के पिता पिता शंकर महतो ने पुलिस को बताया था कि उसे मुरपा गांव के सूरज कुमार महतो पर शक है। क्योंकि उसने कुछ दिनों पहले ही जान से मारने की धमकी दी थी। इस मामले में दर्ज प्राथमिकी में शंकर महतो ने कहा था कि सूरज ने उनके बेटे रवि का अपहरण हत्या करने की नीयत से ही किया है। रामगढ़ एसडीपीओ परमेश्वर प्रसाद के नेतृत्व में गोला थाना प्रभारी और अन्य पुलिस पदाधिकारी ने छापेमारी शुरू की। पुलिस ने 24 घंटे के अंदर सूरज कुमार को गिरफ्तार कर लिया। सूरज ने पुलिस को बताया कि उसने रवि की हत्या कर दी है और उसकी लाश बंदा गांव के जंगल में छुपा दिया है।

सूरज पर हत्या करने की चढ़ी थी सनक : पुलिस ने जब सूरज कुमार महतो को गिरफ्तार किया तो उसने तत्काल ही अपना अपराध स्वीकार कर लिया। सूरज पर पहले से ही हत्या करने की सनक चढ़ चुकी थी। जानकारी के अनुसार सूरज शंकर महतो की बेटी की तरफ आकर्षित था। इसके लिए वह किसी भी हद को पार करने की बात करता था।

सड़क दुर्घटना में एक की मौत, दो घायल

GIRIDIH : गिरिडीह के मंडरो झ खरियोडीह मुख्य मार्ग पर हीरोडीह थाना क्षेत्र के समुआडीह गांव के पास सड़क दुर्घटना में एक युवक की मौत हो गयी। जबकि दो अन्य घायल हो गए। मृतक की पहचान हीरोडीह थाना क्षेत्र के किसगो के बिहारी मल्होत्रा 40 वर्ष के रुप में हुई है। जबकि हादसे में घायल युवकों का नाम रंजीत मल्होत्रा और भैरो मल्होत्रा है। जानकारी के मुताबित बुधवार को तीनों बाइक से सब्जी खरीदने मंडरो बाजार जा रहे थे। इसी क्रम में समुआडीह के पास बाइक का संतुलन बिगड़ गया और उनकी बाइक बांस के पेड़ से टकरा गयी।

पुलिस ने अवैध नशा कारोबारियों के खिलाफ चलाया अभियान, शराब भट्ठियों को किया ध्वस्त

मौके पर बरामद जावा महुआ। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS RANCHI : पिठोरिया पुलिस लगातर अवैध नशा कारोबारियों के खिलाफ अभियान चलाते हुए मंगलवार को थाना क्षेत्र के मंझिल कोनकी में छापेमारी की। इस दौरान लगभग एक क्विंटल जावा महुआ, महुआ शराब व भट्ठियों को ध्वस्त किया। वही पिठौरिया के मोची मुहल्ला में एक कोल्डड्रिंक और पानी की दुकान में छापेमारी कर अवैध शराब की 11 बोतल जिसमे गॉड फादर की स्टिकर लगी हुई को भी जप्त किया। बुधवार को भी गुप्त सूचना के आधार पर थाना क्षेत्र के पुसू गांव में एक किराना दुकान में छापेमारी कर अवैध 15 बियर बोतल को जप्त की। थाना प्रभारी गौतम कुमार राय ने बताया कि गुप्त सूचना मिली थी कि मोची मुहल्ला के कोल्डड्रिंक में अवैध शराब बिक्री की जाती है और पुसू गांव के भी एक किराना दुकान पर अवैध शराब बिक्री का धंधा किया जा रहा है। सूचना की पुष्टि के बाद छापेमारी दल बना कर छापेमारी की गई। मौके पर पुलिस को देख दुकानदार भागने में सफल रहा। पिठौरिया मोची मुहल्ला के दुकान संचालक कांति देवी और पुसू गांव के दुकानदार छोटेलाल मुंडा के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है। पिठौरिया थाना प्रभारी गौतम कुमार राय के द्वारा अवैध नशा कारोबारियों के खिलाफ लगातार अभियान चलाने से अवैध कारोबारियों में हड़कंप मचा हुवा है। थाना प्रभारी के इस अभियान से क्षेत्र के लोग खुश है। अभियान में एसआई मोहम्मद मोबिन सहित पिठौरिया पुलिस के जवान मौजूद थे।

जगतगुरु शंकराचार्य ने जुगसलाई स्थित राजस्थान शिव मंदिर में दिया प्रवचन, बोले-

धर्म का पालन करने से दूर होते हैं सभी कष्ट

शंकराचार्य से आशीर्वाद लेते मंत्री बन्ना गुप्ता। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : द्वारकाशारदा पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी सदानंद सरस्वती जी महाराज का शहर आगमन मंगलवार को हो गया था। बुधवार को उन्होंने जुगसलाई स्थित राजस्थान शिव मंदिर में भक्तों को गुरुदीक्षा के बाद प्रवचन दिया। उन्होंने कहा कि वेद शास्त्र ज्ञान देते हैं कि मनुष्य को धर्म का पालन करना चाहिए, परमात्मा मनुष्य से धर्मपालन की इच्छा रखते हैं। सुख की प्राप्ति धर्मपालन से संभव है, धर्म का पालन करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। ₹धर्म सर्व प्रतिष्ठितम₹ अर्थात धर्म में ही प्रतिष्ठता है, धर्म के पालन से ही संस्कार का निर्माण होता है। उन्होंने बताया कि परमात्मा के अंश से उत्पन्न जीव अपने अपभ्रम से सांसारिक बंधनो में बंध जाते हैं, तब उन्हें मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए परमात्मा मनुष्य के रूप में अवतार लेते हैं जैसे कि परमात्मा ने राम के रूप में अवतार लिया और धर्म का पालन करने के लिए उन्होंने राज्य का त्याग किया। धर्म के रथ पर सवार हो कर ही विजय की प्राप्ति संभव है। सनातन धर्म आदि-अनादि धर्म है, जिसमें देवता भी प्रार्थना करते हैं कि जब उनके पुण्यों का क्षय हो तो उन्हें मृत्युलोक की प्राप्ति भारतवर्ष में हो।

इस अवसर पर राज्य के स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता, उनकी पत्नी सुधा गुप्ता, जुगसलाई के विधायक मंगल कालिंदी, खरसावां के विधायक दशरथ गागराई आदि ने शंकराचार्य से आशीर्वाद मांगा, जबकि श्रीगुरुदेव सेवा समिति के मुख्य संरक्षक उमेश खिरवाल टप्पू ने शंकराचार्य महाराज का पूजन किया। गुरुवार 28 मार्च को प्रातः 9:30 बजे भी गुरुदीक्षा का कार्यक्रम रखा गया है, जिसमें इच्छुक भक्त राजस्थान शिव मंदिर आकर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं। दोपहर 2.30 बजे शंकराचार्य घाटशिला के लिए प्रस्थान करेंगे।

एसपी ने इंटर स्टेट चेक पोस्ट का किया निरीक्षण

GIRIDIH : लोकसभा चुनाव को लेकर एसपी दीपक कुमार शर्मा ने मंगलवार रात तीसरी प्रखंड में आने वाले नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में बूथों और इंटर स्टेट चेक पोस्ट का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने डीएसपी सहित थाना प्रभारियों को कई दिशा निर्देश दिये। एसपी ने थाना प्रभारी और डीएसपी को मतदान केंद्रों में सुरक्षा के साथ साथ अन्य सुविधाएं मुहैया कराने का निर्देश दिये हैं। सुरक्षा के दृष्टिकोण से जिन मतदान केंद्रों में कई मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग नहीं कर पाते थे, ऐसे गांवों में स्थित मतदान केंद्रों में गिरिडीह पुलिस 2024 के लोकसभा चुनाव में मतदान करवाने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके लिए गिरिडीह पुलिस ने तैयारी शुरू कर दी है। जिले की छह विधानसभा सीटों में से चार विधानसभा सीटें कोडरमा लोकसभा क्षेत्र में आती है। इन चार विधानसभा सीटं में से तीन विधानसभा क्षेत्र बिहार के बॉर्डर से सटे हुए हैं, जो इलाका बिहार से सटा हुआ है वह नक्सल प्रभावित क्षेत्र है, इस इलाके में शांतिपूर्ण मतदान कराना पुलिस के लिए हमेशा से ही चुनौती रही है। इस चुनौती को देखते हुए गिरिडीह प्रशासन अभी से ही अलर्ट मोड में है।

चार किलो गांजा के साथ 26 लाख का टैबलेट बरामद, पति-पत्नी गिरफ्तार

PHOTON NEWS PALAMU : पलामू जिले के लेस्लीगंज थाना क्षेत्र के कोट खास से पुलिस ने चार किलो चार सौ ग्राम गांजा के साथ 26 लाख का टैबलेट बरामद किया। मौके से पति-पत्नी को भी पुलिस ने अरेस्ट किया है। आरोपी पति विष्णु सिंह का आपराधिक इतिहास रहा है। इसके खिलाफ लेस्लीगंज थाने में दो-दो मामले दर्ज हैं। पलामू की एसपी रीष्मा रमेशन ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर मंगलवार को इसकी जानकारी दी।

पति-पत्नी घर से बेच रहे थे गांजा : पलामू की एसपी ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि आरोपी पति-पत्नी द्वारा अपने घर में गांजा, नशीला टैबलेट और सिरप धड़ल्ले से बेचा जा रहा है। विष्णु सिंह व फुलेश्वरी देवी पति-पत्नी हैं। एसपी के निर्देश पर लेस्लीगंज एसडीपीओ के द्वारा टीम गठित कर छापेमारी की गयी। इस दौरान आरोपी के घर से चार किलोग्राम 400 ग्राम गांजा, कोडाइन फास्फेट एवं ट्रिप्रोलाडाइन हाइड्रोक्लोराइड सिरप 141 बोतल, नाइट्रोजन 963 टेबलेट, अल्प्राजोलम 3487 टेबलेट, स्पास्मो प्रॉक्सीवोन प्लस 1440 टेबलेट, एक पीतल का छोटा तराजू 200 ग्राम, 100 ग्राम, 20 ग्राम, 10 ग्राम का बाट और 50 पैसे का सिक्का बरामद किया गया। स्टील के टिफिन बॉक्स में रखा गया 15,350 रुपये नकद बरामद किया गया है।

आरोपी का रहा है आपराधिक इतिहास : एसपी ने बताया कि जितने भी टैबलेट व सिरप पकड़े गये हैं। सभी नशीला टैबलेट है। इसे इन लोगों के द्वारा ब्लैक में ज्यादा दामों में बेचा जाता था। बताया कि नाइट्रोसन टैबलेट का दाम 67 रुपये हैं, लेकिन इसे 400 रुपये में बेचा जाता था। उन्होंने बताया कि विष्णु सिंह का पूर्व से भी आपराधिक इतिहास रहा है। इसके विरुद्ध लेस्लीगंज थाना में दो-दो मामले दर्ज है। बताया कि इनका बेटा भी मर्डर केस में जेल गया है।

BRIEF NEWS

लोहरदगा में गांजा बेचने के दो आरोपितों को पुलिस ने भेजा जेल

LOHARDAGA : जिले की भंडरा थाना पुलिस ने भंडरा बाजार टांड़ स्थित चंपा स्टोर व नौडीहा बगीचा के समीप एक घर में छापेमारी कर दो लोगों को गांजा बेचने के आरोप में गिरफ्तार किया। साथ ही गांजा भी बरामद किया। भंडरा थाना प्रभारी अरविंद कुमार सिंह ने बताया कि गांजा के साथ रवि रंजन को गिरफ्तार किया गया। साथ ही नौडीहा बगीचा के हसन अंसारी को भी गांजा के साथ गिरफ्तार कर कांड संख्या 15/2023 धारा 20/(बी) 2 (ए), 32 एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर न्यायिक हिरासत में लोहरदगा जेल भेज दिया गया।

घर से नाबालिक बच्ची को उठा ले गए युवक, किया सामूहिक दुष्कर्म, जेल

RAMGARH : रामगढ़ शहर के अरगड्डा सिरका भूली क्वार्टर में बेहद शर्मनाक घटना घटी। बुधवार को दिनदहाड़े एक नाबालिक बच्ची को उसके घर से हवस में अंधे कुछ युवक जबरन उठा ले गए। उस नाबालिक बच्ची को जंगल में ले जाकर उसके साथ सामूहिक बलात्कार किया। इस मामले की पुष्टि करते हुए एसपी डॉ. विमल कुमार ने बताया कि जैसे ही पुलिस को इसकी सूचना मिली तत्काल कार्रवाई की गई। रामगढ़ एसडीपीओ परमेश्वर प्रसाद के नेतृत्व में टीम बनाकर पुलिस ने छापेमारी की। सूचना मिलने के 2 घंटे के अंदर तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने इस मामले में पोस्को एक्ट दर्ज किया है। एसपी ने बताया कि डब्लू, दीपक और आकाश को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है। कांड की पीड़िता की चिकित्सीय जांच कराई जा रही है एवं धारा 164 का बयान भी दर्ज करने की प्रक्रिया की जा रही है।

होली में महिलाओं के साथ की छेड़छाड़, बीच बचाव करने आए लोगों को भी पीटा

RAMGARH : होली के दौरान हुड़दंग करने वालों की भी कमी नहीं रही। शहर के पतरातू बस्ती में नशे में धुत्त कुछ लोगों ने महिलाओं के साथ छेड़छाड़ की। यहां तक की बीच बचाव करने आए मोहल्ले के लोगों के साथ भी मारपीट की। इस मामले में बुधवार को पतरातू बस्ती के चादु बनर्जी और शनि सिंह को नामजद अभियुक्त बनाते हुए दो प्राथमिकी दर्ज की गई है। पहली प्राथमिकी निर्मला कुमारी ने दर्ज कराई है। जिसमें उन्होंने कहा है कि 25 मार्च को वे अपने मोहल्ले में पड़ोसियों के साथ होली खेल रही थी। इसी दौरान 8-10 लोगों के साथ चादु बनर्जी और शनि सिंह वहां पहुंचे तथा उन लोगों ने महिलाओं के साथ छेड़खानी शुरू कर दी। जब इसका विरोध किया गया तो निर्मला कुमारी के नंदोई, पति, देवर, ननद के अलावा पड़ोसियों के साथ भी उन लोगों ने मारपीट की। इस मारपीट के दौरान महिलाओं के सोने का मंगलसूत्र व अन्य आभूषण भी गुम हो गए। दूसरी प्राथमिक की पतरातू बस्ती निवासी सुमन रंजन ने दर्ज कराई है। उन्होंने बताया कि होली के दौरान चादु बनर्जी और शनि सिंह ने महिलाओं के साथ मारपीट शुरू की।

गोड्डा में नाबालिग से दुष्कर्म की प्राथमिकी दर्ज

GODDA : जिले के पोड़ैयाहाट प्रखंड में एक नाबालिग लड़की के साथ गांव के ही लड़के ने दुष्कर्म किया और गर्भपात भी कराया। इसके चार माह बाद पोड़ैयाहाट थाने में प्राथमिकी दर्ज की गई है। घटना के संबंध में लड़की के पिता ने कहा कि नाबालिग लड़की के साथ आज से चार माह पूर्व गांव के ही एक युवक ने दुष्कर्म किया था। जब उसे गर्भ रह गया तो गर्भपात भी कराया है। लड़की का पिता बाहर काम करता है। इसलिए यह मामला थाना नहीं पहुंच पाया था। होली में जैसे ही लड़की का पिता घर वापस आया तो लड़की ने सारी बात पिता को बताई। तत्पश्चात पिता लड़की को लेकर थाना पहुंचा और आवेदन देकर मामला दर्ज कराया है। थाना प्रभारी ने बताया कि आवेदन के आधार पर सुसंगत धाराओं में प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है।

BRIEF NEWS

होली के दौरान रिम्स में 533 लोगों ने कराया इलाज

RANCHI : राजधानी रांची के रिम्स में होली के दौरान 25 और 26 मार्च को 533 मरीज अस्पताल में इलाज के लिए पहुंचे थे। रिम्स से बुधवार को मिली जानकारी के अनुसार 25 मार्च को सेंट्रल इमरजेंसी में 203, न्यूरो में 24, ऑर्थो में 10, सर्जरी में 23 और 26 मार्च को सेंट्रल इमरजेंसी में 205, न्यूरो में 23,ऑर्थो में 13 एवं सर्जरी में 32 मरीज इलाज के लिए पहुंचे थे। रिम्स के पीआरओ डॉक्टर राजीव रंजन ने बताया कि होली के दौरान दो दिनों में रिम्स में 533 मरीज इलाज कराने के लिए पहुंचे थे। इसमें कुछ मरीज दुर्घटना में घायल हुए थे जबकि दूसरों को अन्य समस्याएं भी थी।

डीआईजी ने अंतरराज्यीय बॉर्डर का किया निरीक्षण

RANCHI : लोकसभा चुनाव को देखते हुए रांची डीआईजी अनूप बिरथरे ने मंगलवार को अंतरराज्यीय बॉर्डर मुरी, पुरुलिया, श्याम नगर और सोनाहातु बॉर्डर का औचक निरीक्षण किया । इस दौरान डीआईजी ने बॉर्डर पर मौजूद पदाधिकारी और पुलिस बल को 24 घंटे सीमा से आने जाने वाले हर वाहन को जांच करने का निर्देश दिया। साथ ही मादक पदार्थ, शराब, नगद रुपये सहित अन्य चुनाव को प्रभावित करने वाले वस्तु पर विशेष नजर रखते हुए चुनाव से संबंधित अन्य आवश्यक दिशा निर्देश दिये । मौके पर पुलिस उपाधीक्षक सिल्ली रणवीर सिंह एवं थाना प्रभारी मुरी ओपी, सिल्ली थाना, सोनाहातू थाना उपस्थित थे।

रांची में महिला ने की खुदकुशी

RANCHI : चुटिया थाना क्षेत्र अंतर्गत कृष्णापुरी स्थित घर में एक महिला ने फंदे से लटक कर बुधवार को खुदकुशी कर ली। महिला की शिनाख्त संध्या देवी (24) के रूप में हुई है। वह टिंकू यादव की पत्नी थी। सूचना मिलने के बाद चुटिया थाना प्रभारी मौके पर पहुंचे और शव को पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया। थाना प्रभारी ने बताया कि मृतका के परिजनों को घटना की सूचना दे दी गयी है। पूरे मामले की जांच-पड़ताल की जा रही है। परिजनों के बयान पर मामले में आगे की कार्रवाई की जायेगी।

इजहार और इश्तियाक के खिलाफ दायर चार्जशीट पर कोर्ट ने लिया संज्ञान

RANCHI : हजारीबाग के कोयला कारोबारी इजहार अंसारी और इश्तियाक अंसारी के अलावा इजहार अंसारी की एक कंपनी के खिलाफ ईडी के चार्जशीट (आरोप पत्र) पर ईडी की विशेष न्यायाधीश पीके शर्मा की अदालत ने बुधवार को संज्ञान ले लिया है। मामले में कोर्ट ने आरोपितों की उपस्थिति के लिए आठ अप्रैल की तिथि निर्धारित की है। इससे पूर्व ईडी ने 15 मार्च को अदालत में इजहार अंसारी और इश्तियाक अंसारी के अलावा इजहार अंसारी की एक कंपनी के खिलाफ चार्जशीट दाखिल किया था। ईडी ने जांच में पाए गए तमाम साक्ष्य के साथ आरोप पत्र दाखिल की थी। ईडी ने कोर्ट को यह जानकारी दी थी कि इजहार कैसे कोयले के कारोबार में संलिप्त था और अवैध कोयले के कारोबार से कैसे अकूत संपत्ति अर्जित की। इजहार अंसारी कई शेल कंपनियों के संचालक हैं। वह शेल कंपनियों के जरिए काले धन का संचालन करता है। 16 जनवरी को ईडी ने इजहार अंसारी के ठिकाने पर छापेमारी की थी। छापेमारी में 13 लाख कैश के साथ कई अहम दस्तावेज ईडी ने बरामद किया था।

राहुल शर्मा हत्याकांड का खुलासा, हत्यारे को पुलिस ने भेजा जेल

साली के साथ अवैध संबंध बनाने के बाद कर दी थी साढू की हत्या

- चतरा जिले के पचमहला गांव का रहने वाला है नीरज कुमार शर्मा
- साली ने किया प्रेम विवाह तो नाराज हो गया नीरज कुमार शर्मा
- मधुकम में नीरज के घर शिफ्ट हो गया राहुल शर्मा

CRIME REPORTER RANCHI : झारखंड की राजधानी रांची के रातू थाना क्षेत्र के छातागुंगरी चटकपुर में 20 मार्च 2024 को हुए हत्याकांड का रांची पुलिस ने खुलासा कर दिया। इस मामले में पुलिस ने नीरज कुमार शर्मा (33) को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। पुलिस ने बताया कि नीरज कुमार शर्मा चतरा जिला के जोरी थाना क्षेत्र स्थित पचमहला गांव का रहने वाला है। उसके पिता का नाम स्व गणेश मिस्त्री है। नीरज कुमार ने अपनी साली से कई बार शारीरिक संबंध बनाए थे। उसके साढू राहुल शर्मा को जब इसकी जानकारी हो गई और उसने अपनी पत्नी से दूरी बढ़ानी शुरू कर दी, तो नीरज ने अपने दोस्त बिट्टू शर्मा एवं एक अन्य के साथ मिलकर गमछा से गला दबाकर राहुल की हत्या कर दी। नीरज को अपनी साली की शादी नागवार गुजरी। वह अपनी साली से नाराज हो गया। बाद में उसकी साली राहुल के साथ मधुकम में ही किराए के एक मकान में रहने लगी। राहुल शर्मा की एक दिन शराब पीने के दौरान कुछ लोगों के साथ झड़प हो गई। बाद में नीरज ने राहुल से कहा कि उसका मकान खाली है। वह अपनी पत्नी के साथ वहीं शिफ्ट हो जाए। राहुल शर्मा को नीरज की बात जंच गई। वह नीरज के घर शिफ्ट हो गया। दोनों परिवार वहां रहने लगे। इस बीच नीरज ने अपनी साली से कई बार शारीरिक संबंध बनाए। वर्ष 2019 में उसकी साली गर्भवती हो गई। राहुल शर्मा बच्चा के लिए तैयार नहीं था। लेकिन, नीरज और उसकी पत्नी ने उसे काफी समझाया, तो वह इस बात पर बच्चे के जन्म के लिए तैयार हुआ कि बच्चे का लालन-पालन नीरज और उसकी पत्नी ही करेंगे।

राहुल शर्मा को लग गई पत्नी के अवैध संबंध की भनक

कुछ ही दिनों में राहुल शर्मा को इस बात की भनक लग गई कि उसके साढू नीरज कुमार शर्मा के उसकी साली के साथ अवैध संबंध हैं। पति-पत्नी के बीच दूरियां बढ़ने लगीं। तीन महीने में दोनों के बीच दूरियां काफी बढ़ गईं। राहुल शर्मा ने यह कहना शुरू कर दिया कि अब वह अपना बच्चा नीरज और उसकी पत्नी से वापस ले लेगा।

दोस्तों के साथ मिलकर राहुल शर्मा को रास्ते से हटा दिया

नीरज कुमार शर्मा को जब इस बात की जानकारी मिली, तो उसने राहुल शर्मा को रास्ते से हटाने का प्लान बनाना शुरू कर दिया। इसके बाद उसने अपने दोस्त बिट्टू शर्मा और एक अन्य के साथ मिलकर 19 मार्च 2024 की रात को साजिश के तहत राहुल को शराब पिलाई और बाद में गमछे से गला दबाकर उसकी हत्या कर दी।

और टूट गया नीरज शर्मा, पुलिस के सामने सच कुबूल किया

आरोपी का साली से था अवैध संबंध

रातू पुलिस ने इस संबंध में बताया है कि वादी नीरज कुमार की पत्नी दो बहन है। रांची के मधुकम में नीरज की ससुराल है। वर्ष 2014 में उसकी शादी हुई। शादी के बाद लगातार उसका ससुराल आना-जाना लगा रहता था। इसी दौरान अपनी साली के साथ उसने कई बार शारीरिक संबंध बनाए। बाद में नीरज की साली को राहुल शर्मा से प्यार हो गया। फिर उसने राहुल से शादी करके अपना घर बसा लिया।

साली के कहने पर बाद में नीरज कुमार शर्मा ने अपने साढू राहुल शर्मा को फोन किया, ताकि किसी को उस पर शक न हो। उसी के फर्द बयान के आधार पर केस दर्ज हुआ। राहुल शर्मा के शव को लेकर नीरज ही उसके गांव औरंगाबाद गया। राहुल के गांव से लौटने के बाद जब नीरज शर्मा को पुलिस ने 24 मार्च को पूछताछ के लिए बुलाया और सख्ती बरती, तो नीरज शर्मा टूट गया और अपना अपराध कबूल कर लिया। इसके बाद पुलिस ने उसे गिरफ्तार करके जेल भेज दिया।

लाभुकों की सूची में गड़बड़ी की आशंका

जांच के बाद ही आवास निर्माण के लिए खाते में जाएगी राशि

- कई ग्राम पंचायत के मुखिया पर भी लग रहे हैं आरोप
- 550 करोड़ से अधिक का हुआ है आवंटन
- तीन साल में आठ लाख को आवास देने का है टारगेट

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड सरकार द्वारा प्रारंभ की गयी अबुआ आवास योजना में लाभुकों के चयन में कई गड़बड़ी होने की शिकायत सामने आ रही है। तय लक्ष्य के अनुसार लाभुकों की सूची जो सामने आ रही है, उसमें ही गड़बड़ी किये जाने की शिकायत लगातार सरकार को मिल रही है। कई ग्राम पंचायत के मुखिया पर भी आरोप लग रहे हैं कि सूची तैयार कराने में उनकी भूमिका सही नहीं थी, वहीं कई ग्राम पंचायत के मुखिया स्वयं ही रिपोर्ट कर रहे हैं कि गलत सूची बनायी गयी है। ग्रामसभा में भी अनदेखी हुई। ऐसे में ग्रामीण विकास विभाग ने लाभुकों की सूची की विस्तृत जांच के बाद ही अबुआ आवास योजना के लिए राशि भुगतान करने का आदेश सभी जिलों को दिया है। बता दें कि, इस वित्तीय वर्ष 2023-24 में दो लाख लाभुकों को आवास देने का लक्ष्य रख कर योजना स्वीकृत की गयी। तीन साल में आठ लाख को आवास देने का टारगेट था। लाभुकों से आवेदन लिए गये करीब 30 लाख लाभुकों ने आवेदन किया। इसकी जांच प्रारंभिक रूप से करायी गयी है, जिसमें करीब 20 लाख लाभुकों को योग्य पाया गया। सरकार ने ऐसे में लाभुकों का लक्ष्य को बढ़ाकर 20 लाख तक करने की स्वीकृति दी है। अब इस सूची में शिकायत सामने आ रही है। कई जगह यह बात सामने आयी कि एक ही परिवार के कई लोगों ने आवेदन किए और इनको आवास भी स्वीकृत हुआ है। अब शिकायतें सामने आ रही है कि इनके चयन में गड़बड़ियां की गयी हैं। जांच के बाद योग्य लाभुकों के खाते में राशि भेजी जा रही है। झारखंड सरकार ने वैसे गरीबों के लिए अबुआ आवास योजना शुरू की है, जिन्हें अब तक इंदिरा आवास, पीएम आवास ग्रामीण, बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर आवास योजना सहित किसी अन्य योजना से आवास स्वीकृत नहीं हुआ।

प्रेम जाल में फंसा कर नाबालिग से दुष्कर्म करने वाले को पुलिस ने किया गिरफ्तार

तीन माह बाद गर्भवती होने पर मामला आया था सामने

CRIME REPORTER RANCHI : तमाड़ थाना क्षेत्र में पुलिस ने मंगलवार को एक युवक को नाबालिग से दुष्कर्म के आरोप में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। इस संबंध में बुंडू महिला थाना में एफआईआर दर्ज हुआ है। दर्ज प्राथमिकी के अनुसार एक साल पहले तमाड़ के कुरचूडीह निवासी सुमित कुमार महतो ने नाबालिग से दोस्ती की। फिर प्रेम जाल में फंसाया और गांव स्थित जंगल ले जाकर दुष्कर्म किया। नाबालिग को घटना के बारे में किसी से बताने पर जान से मारने की धमकी दी। डर से नाबालिग ने मामले को छिपाया लेकिन तीन माह बाद गर्भवती होने पर मामला सामने आया। इसके बाद युवक के परिजनों ने थाना जाने से नाबालिग को रोका और गर्भपात कराने का दबाव बनाया। ऐसा करने पर समाज में रीति-रिवाज से शादी करने पर राजी हुए। फिर नाबालिग को परिजन बुंडू के स्त्री और शिशु रोग विशेषज्ञ डॉक्टर प्रतिमा श्रीवास्तव के पास लेकर पहुंचे और गर्भपात कराया। गर्भपात के बाद नाबालिग घर में रहने लगी। इसी बीच नाबालिग को प्रेमी सुमित महतो ने फोन कर जमशेदपुर बुला लिया।

जमशेदपुर गम्हरिया स्थित टाटा शिव मंदिर में सुमित महतो नाबालिग से शादी की। युवक के घरवाले लड़की को पसंद नहीं करते थे। घर वाले के बहकावे में आकर युवक नाबालिग को प्रताड़ित करने लगा। इतना ही नहीं वह नाबालिग को जमशेदपुर किराये के मकान में छोड़कर भाग गया। इसके बाद नाबालिग के घरवाले शिकायत लेकर महिला थाना बुंडू पहुंचे और प्राथमिकी दर्ज कराई। बुंडू महिला थाना प्रभारी ने बताया कि आरोपित को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

ब्राउन शुगर के साथ एक आरोपी गिरफ्तार

RANCHI : सुखदेवनगर थाना पुलिस ने ब्राउन शुगर के साथ हर्ष कुमार उर्फ पल्लू को गिरफ्तार किया है। इसके पास से 1.25 ग्राम ब्राउन शुगर,10 हजार 440 रुपया और मोबाइल बरामद किया है। डीएसपी प्रकाश सोय ने सोमवार को बताया कि लोकसभा चुनाव के मद्देनजर पूरे क्षेत्र में विधि व्यवस्था और शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए अवैध शराब, आग्नेयास्त्र एवं मादक पदार्थ की बरामदगी के लिए एसएसपी को मिली गुप्त सूचना के आधार पर उनके नेतृत्व में एक टीम गठित किया गया। टीम ने सुखदेवनगर थाना के किशोरगंज के एलपी पब्लिक स्कूल के पास कुछ लड़के अवैध मादक पदार्थ ब्राउन शुगर और गांजा की खरीद बिक्री कर रहे एक आरोपित को गिरफ्तार किया। जबकि ब्राउन शुगर बेचने का मुख्य सरगना बबलु यादव उर्फ बबलु राय, कृष्णा यादव उर्फ कृष्णा राय , कन्हैया कुमार यादव उर्फ कन्हैया राय ,दुर्लभ और पवन उर्फ पवन शामिल है।

हॉर्स ट्रेडिंग मामला : अपर सचिव छह अप्रैल को एसीबी कोर्ट में रखेंगे पक्ष

क्लोजर रिपोर्ट तैयार कर केस को बंद करने का किया था आग्रह

CRIME REPORTER RANCHI : राज्यसभा चुनाव-2016 में हुए हॉर्स ट्रेडिंग मामले में एसीबी के विशेष न्यायाधीश प्रकाश झा की अदालत ने बुधवार को गृह विभाग के अपर सचिव अविनाश चंद्र ठाकुर को छह अप्रैल को उपस्थित होकर पक्ष रखने की तिथि निर्धारित की है। मामले के अनुसंधानकर्ता ने जनवरी 2024 में क्लोजर रिपोर्ट तैयार करते हुए इस केस को बंद करने का आग्रह कोर्ट से किया था। इसके बाद अदालत ने शिकायतकर्ता को नोटिस जारी किया था और अपना पक्ष रखने को कहा है। निर्वाचन आयोग के निर्देश पर 29 मार्च, 2018 को जगन्नाथपुर थाने में विशेष शाखा के तत्कालीन एडीजी सह वर्तमान सीआईडी के डीजी अनुराग गुप्ता और तत्कालीन मुख्यमंत्री रघुवर दास के प्रेस सलाहकार अजय कुमार के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई थी।

बाद में रघुवर दास को भी अप्राथमिकी अभियुक्त बनाया गया था। इन पर वर्ष 2016 के राज्यसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में कांग्रेस की विधायक निर्मला देवी को पैसे का लालच देने का आरोप लगा था। चुनाव आयोग ने झारखंड विकास मोर्चा की शिकायत पर इसकी जांच कराई थी। आयोग ने प्रथम दृष्ट्या आरोप को सही पाते हुए उनके विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज करने का आदेश दिया था।

तत्कालीन हेमंत सरकार ने 14 फरवरी, 2020 को एडीजी अनुराग गुप्ता को निलंबित कर दिया था। वे 15 महीने से अधिक समय तक निलंबित रहे। तब वे सीआईडी के एडीजी थे। उनके खिलाफ राज्यसभा चुनाव 2016 में भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में वोट देने के लिए बड़कागांव की तत्कालीन विधायक निर्मला देवी को लालच देने और उनके पति पूर्व मंत्री योगेंद्र साव को धमकाने का आरोप था।

पुलिस पदाधिकारियों और कर्मियों की छुट्टी पर सीईओ लेंगे फैसला

PHOTON NEWS RANCHI : मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी (सीईओ) लोकसभा चुनाव के मद्देनजर सभी पुलिस पदाधिकारियों और कर्मियों की छुट्टी पर फैसला लेंगे। चुनाव समाप्ति तक आकस्मिक अवकाश और मुख्यालय छोड़ने की स्वीकृति मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी देंगे। डीजीपी अजय कुमार सिंह के आदेश पर आइजी अभियान सह-स्टेट पुलिस नोडल पदाधिकारी एवी होमकर ने इस संबंध में बुधवार को आदेश जारी कर दिया है। झारखंड के विभिन्न जिलों के एसएसपी, एसपी, पुलिस के अन्य विंग के एसपी और समादेष्टा को पत्र भेज कर अवगत करा दिया गया है। भेजे गये पत्र के अनुसार 16 मार्च को लोकसभा आम चुनाव की घोषणा कर दी गई। चुनाव की घोषणा के साथ पूरे राज्य में आदर्श आचार संहिता लागू हो गई है। लोकसभा आम चुनाव 2024 की समाप्ति तक विधि-व्यवस्था के लिए प्रतिनियुक्त सभी पुलिस पदाधिकारी और पुलिसकर्मी उक्त अवधि में मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी-सह-सचिव से आकस्मिक अवकाश, मुख्यालय छोड़ने की स्वीकृति के बाद ही अवकाश में प्रस्थान करेंगे या मुख्यालय छोड़ेंगे।

प्रेमी की तलाश में प्रेमिका रांची से पहुंची गोड्डा

RANCHI : प्रेमी की तलाश करते हुए एक प्रेमिका रांची से गोड्डा पहुंची गयी। तो दूसरी तरफ प्रेमी सपरिवार घर में ताला बंद कर फरार हो गया। इसके बाद युवती अपने तथाकथित प्रेमी के घर के बाहर ही धरना पर बैठ गई और काफी हंगामा करने लगी। लेकिन लड़की की सुध लेने कोई नहीं पहुंचा। इसके बाद हताश होकर लड़की गोड्डा के नगर थाना पहुंच गई और पुलिस को पूरे मामले की जानकारी देकर न्याय की गुहार लगाई है। दरअसल रांची के बरियातू की एक आदिवासी लड़की को सोशल मीडिया के माध्यम से गोड्डा के रहने वाले युवक से प्यार हो गया था। दोनों में फोन से बातचीत होने लगी। इसके बाद युवक गोड्डा से रांची पहुंच गया। रांची में युवक और युवती लिव-इन रिलेशनशिप में रहने लगे।

बाबूलाल मरांडी ने इंडिया पर कसा तंज वीडियो शेयर कर बताया बेमेल गठबंधन

- मरांडी ने सोशल मीडिया एक्स पर साझा किया वीडियो
- इंडी अलायंस में सिद्धांत और संस्कार की राजनीति नहीं है : मरांडी

PHOTON NEWS RANCHI : लोकसभा चुनाव की तरीखों का ऐलान होते ही इंडिया गठबंधन और भाजपा ने तैयारियां शुरू कर दी है। इसके साथ ही पक्ष और विपक्ष में आरोप प्रत्यारोप का दौर शुरू हो गया है। प्रधानमंत्री मोदी से लेकर भाजपा के तमाम बड़े नेताओं ने पहले भी इंडिया गठबंधन पर निशाना साध चुके हैं। अब भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने भी सोशल मीडिया एक्स के जरिये इंडिया अलायंस पर निशाना साधते हुए इस गठबंधन को अवसरवादी नेताओं का बेमेल गठबंधन करार दिया है। दरअसल झारखंड के पहले मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने एक्स पर एक वीडियो साझा किया। वीडियो के ऊपर में लिखा है कि इंडी अलायंस में सिद्धांत और संस्कार की राजनीति नहीं है। यह स्वार्थी और अवसरवादी नेताओं का बेमेल गठबंधन है। वीडियो के अंत में लोगों से सवाल पूछते हुए कहा गया है कि क्या आपको लगता है कि ये अपने बीच दूल्हा चुन पाएंगे ? प्रधानमंत्री कैसे चुनेंगे? इसके बाद खानदानी लूटेरों की कोशिश होगी बेकार, अबकी बार 400 पार का नारा दिया गया है। गौरतलब है कि भाजपा ने झारखंड की 13 लोकसभा सीटों पर अपने प्रत्याशियों की घोषणा कर दी है। जबकि इंडिया गठबंधन की ओर से अभी प्रत्याशियों की घोषणा होनी बाकी है। जानकारी के अनुसार झामुमो, राजद, कांग्रेस और वाम दलों का गठबंधन भी जल्द ही अपने उम्मीदवारों की घोषणा कर देगा।

अपवर्जित समूहों के लिए सुगम मतदान विषयक प्रशिक्षण आयोजित

अपवर्जित समूहों के निर्वाचकों की भागीदारी सुनिश्चित कराएं : रवि कुमार

सुगम मतदान विषयक प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल पदाधिकारी।

PHOTON NEWS RANCHI : राज्य के सभी दिव्यांग शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण, पचासी वर्ष या उससे अधिक आयु वर्ग के मतदाता, गर्भवती महिलाओं एवं छोटे शिशुओं की माताओं को भी अन्य नागरिकों की तरह समान वैधानिक अधिकार प्राप्त है। चुनाव की प्रक्रिया इन्हें लोकतंत्र में समान रूप से अपनी भागीदारी निभाने का अवसर प्रदान करती है। इसलिए इनके लिए अनिवार्यरूपेण हरेक मतदान केन्द्र पर सुलभ मतदान की व्यवस्था रखी जाए। यह बातें मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने बुधवार को निर्वाचन सदन धुर्वा के सभागार में राज्य के सभी जिलों से आए जिला समाज कल्याण पदाधिकारी, जिला कल्याण पदाधिकारी एवं सहायक निदेशक, सामाजिक सुरक्षा के लिए ह्यअपवर्जित समूहों के लिए सुगम मतदानह्ल विषयक प्रशिक्षण सत्र को संबोधित करते हुए कही।

रवि कुमार ने कहा कि ऐसे नागरिकों को समान भागीदारी के लिए केंद्रीय निर्वाचन आयोग ने स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी किए हैं। इसके अलावा मतदान प्रक्रिया में इनकी सुविधा के लिए डिजिटल तकनीकों के प्रयोग पर भी बल दिया गया है। राज्य के सभी जिला समाज कल्याण पदाधिकारी इसके लिए नोडल ऑफिसर बनाए गए हैं। उन्हें अपने स्तर से हरेक विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए सेक्टर ऑफिसर नामित कर गैर-राजनैतिक एवं निरपेक्ष स्वयंसेवी संगठनों, रेजिडेंट वेलफेयर संगठनों आदि की मदद से अपवर्जित समूह के योग्य नागरिकों के डोर टू डोर सर्वे, छूटे हुए अर्हता प्राप्त नागरिकों के नाम निर्वाचक सूची में दर्ज कराने तथा मतदान में इनकी सुगमता के लिए समयबद्ध रूप से काम करना है।

अक्षम मतदाता के बूथ तक आने-जाने की व्यवस्था करें

रवि कुमार ने कहा कि अपवर्जित समूहों के ऐसे मतदाता जो मतदान केन्द्र तक स्वयं आने-जाने में अक्षम हों उन्हें मतदान केन्द्र पर आने-जाने की स्थानीय व्यवस्था के साथ-साथ मतदान केन्द्र में शेड, कुर्सी-बेंच, व्हील चेयर, स्वयंसेवकों की व्यवस्था पर विशेष ध्यान रखा जाना है। साथ ही यदि अपवर्जित समूह के कोई मतदाता जो चुनाव सिंबल खुद नहीं पहचान पाएं वहां मतदान केन्द्र के पीठासीन पदाधिकारी उन्हें सहायक के रूप में 18 वर्ष से कम आयु के किसी किशोर को वोटिंग के लिए साथ लिए जाने की अनुमति देंगे। प्रशिक्षण सत्र में निःशक्तता आयुक्त अभय नंदन अम्बष्ठ ने निःशक्तता आयोग द्वारा मतदाता के लिए किये जा रहे कार्यों के बारे में बताया। अपर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी नेहा अरोड़ा ने मतदाता सूची एवं मतदान के बारे में बताया। उन्होंने बूथ अवेयरनेस ग्रुप, स्वीप कार्यक्रम, अच्छे कार्यों के लिए बीएलओ को सम्मानित करने आदि विषयों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। निदेशक समाज कल्याण विभाग शशि प्रकाश झा ने मतदान केंद्रों पर न्यूनतम सुविधा में पेयजल, बिजली, हेल्प.डेस्क, पोस्टर.साईनेज, रैंप, दिव्यांगजनों के लिए वॉलेंटियर की उपलब्धता के साथ मतदान केंद्रों पर बीएलओ की सहायता के लिए चयनित स्वयंसेवकों के प्रशिक्षण की जानकारी साझा की। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय की ओएसडी गीता चौबे द्वारा मतदान केंद्रों पर सुनिश्चित न्यूनतम सुविधाओं को उपलब्ध कराने एवं दिव्यांग,वयोवृद्ध मतदाताओं के लिए यातायात की सुविधा, वोलेंटियर्स एवं मेडिकल किट आदि विषयों पर विस्तृत रूप से चर्चा की।

सांसद दीपक प्रकाश बने स्टार प्रचारक, बिहार में संभालेंगे मोर्चा

PHOTON NEWS RANCHI : लोकसभा चुनाव को लेकर भाजपा ने स्टार प्रचारकों की लिस्ट जारी की है। ये स्टार प्रचारक लोकसभा चुनाव में मतदान के लिए बिहार के विभिन्न इलाकों में प्रचार करेंगे। स्टार प्रचारकों की लिस्ट में 40 नेताओं के नाम हैं। इस लिस्ट में झारखंड से राज्यसभा सांसद दीपक प्रकाश भी हैं। झारखंड भाजपा से ये इकलौते नेता हैं, जो बिहार में कैंपेनिंग करेंगे। बिहार में लोकसभा चुनाव में मतदाताओं को रिझाने के लिए दीपक प्रकाश को भी मैदान में उतारने का फैसला लिया है। इस लिस्ट में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह आदि के नाम शामिल हैं। वर्तमान में भाजपा से राज्यसभा सांसद दीपक प्रकाश लंबे समय से भाजपा से जुड़े हुए हैं। पार्टी में उनकी अच्छी पकड़ मानी जाती है। उन्होंने सामान्य कार्यकर्ता से लेकर राज्यसभा सांसद तक का सफर तय किया है। झारखंड भाजपा के वे प्रदेश अध्यक्ष भी रह चुके हैं। उनकी पॉलिटिकल स्ट्रैटजी को पार्टी भी स्वीकार करती है। जानकारों की माने तो वे वर्तमान प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने काफी करीबी रह चुके हैं। कहा जाता है कि बाबूलाल मरांडी के भाजपा वापसी में सांसद दीपक प्रकाश की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

BRIEF NEWS

सुंदरगढ़ लोकसभा सीट से बीजेडी प्रत्याशी के रूप में दिलीप तिर्की का नाम घोषित

SUNDARGARH : सुंदरगढ़ लोकसभा सीट से बीजेडी उम्मीदवार के रूप में हॉकी इंडिया के चेयरमैन दीलिप तिर्की के नाम की घोषणा किया गया है। इससे पहले बीजेपी उम्मीदवार के तौर पर जोएल ओराम के नाम की घोषणा की गई थी। वही संबलपुर लोकसभा सीट से बीजेडी उम्मीदवार के रूप में प्रणब प्रकाश दास के नाम की घोषणा हुई थी। पहले बीजेपी उम्मीदवार के तौर पर केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के नाम की घोषणा की गई थी। कांग्रेस ने सुंदरगढ़ लोकसभा एवं सम्बलपुर सीट के लिए अपने उम्मीदवार के नाम की घोषणा नहीं की है।

बंद ढाबे से अवैध विदेशी शराब जब्त

ROURKELA : राउरकेला के प्लांट साईट पुलिस ने एक बंद ढाबे का ताला तोड़ कर भारी मात्र में अवैध विदेशी शराब जब्त किया गया। हालांकि इस मामले में पुलिस ने अभी तक किसी को गिरफ्तार नहीं किया है। सूचना के आधार पर पुलिस द्वारा पावर हाउस पार्किंग एरिया में ज्ञानी ढाबा में दबिश दी और ढाबा का ताला तोड़ यहां से 170 बोतल किंगफिशर बियर एवं 125 लीटर विदेशी शराब जब्त किया गया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

सीएसआइआर कैरम टूर्नामेंट में एनएमएल उपविजेता

JAMSHEDPUR : सीएसआइआर आइएमएमटी, भुवनेश्वर में 16-19 मार्च तक आयोजित शांति स्वरूप भटनागर मेमोरियल कैरम टूर्नामेंट में बमार्माइंस स्थित राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला (एनएमएल) उपविजेता रहा। सीएसआइआर-एनएमएल की कैरम टीम को एकल व युगल, दोनों प्रतियोगिता में उपविजेता का खिताब मिला। एकल टीम में मंजीत सिंह व युगल टीम में मंजीत सिंह व नीरज मेहता की जोड़ी शामिल थी। ज्ञात हो कि यह टूर्नामेंट नई दिल्ली स्थित वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआइआर) के प्रथम महानिदेशक सर शांति स्वरूप भटनागर की स्मृति में 1956 से आयोजित किया जा रहा है। इसमें पहली बार एनएमएल को यह पुरस्कार मिला है।

काले ने नई दिल्ली में किया भाजपा प्रत्याशी बांसुरी स्वराज के लिए प्रचार

JAMSHEDPUR : भाजपा के पूर्व प्रदेश प्रवक्ता अमरप्रीत सिंह काले इन दिनों दिल्ली में हैं। यहां उन्होंने बुधवार को नई दिल्ली लोकसभा क्षेत्र की भाजपा उम्मीदवार बांसुरी स्वराज के लिए प्रचार किया। ज्ञात हो कि सुप्रीम कोर्ट की अधिवक्ता बांसुरी स्वराज पूर्व केंद्रीय मंत्री सुषमा स्वराज की पुत्री हैं। इस सीट पर पिछली बार भाजपा के टिकट पर सुप्रीम कोर्ट की अधिवक्ता मीनाक्षरी लेखी जीती थीं। इस बार उनका टिकट काट दिया गया है। काले ने कहा कि हमारे ऋषि-मुनियों ने भारत के जिस परम वैभव की कल्पना की थी, उसे नरेन्द्र मोदी साकार कर रहे हैं।

अंतरराष्ट्रीय साइबर फ्रॉड दंपती को पुलिस ने दबोचा

करोड़ों की धोखाधड़ी में शामिल, हरि और लीसा के नाम से हैं चर्चित

PHOTON NEWS ROURKELA : राउरकेला पुलिस ने एक महिला समेत दो अंतरराष्ट्रीय साइबर जालसाजों को गिरफ्तार करने में कामयाबी हासिल की है। पुलिस ने गिरफ्तार धोखेबाज हरीश कुरापति और नागा वेंकट सौजन्या कुरापति के पति-पत्नी होने की जानकारी है। दोनों पति-पत्नी आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले के निवासी है। उन्हें हरि और लीसा के नाम से भी जाना जाता था।

जालसाज जोड़ी कंबोडिया से ऑनलाइन घोटाले संचालित कर

जानकारी देते पुलिस अधिकारी। ● फोटोन न्यूज

रही थी। राउरकेला पुलिस ने दोनों को हैदराबाद राजीव गांधी एयरपोर्ट से गिरफ्तार किया। इससे पहले जनवरी में राउरकेला पुलिस ने इस गिरोह के 8 सदस्यों को गिरफ्तार किया था। ये सभी राउरकेला और आसपास के इलाकों में 5 से 6 करोड़ रुपये की साइबर धोखाधड़ी में शामिल थे। पुलिस को पता चला है कि इस रैकेट में कुल 16 लोग शामिल थे। अन्य की गिरफ्तारी के लिए कंबोडियाई विदेश मंत्रालय से संपर्क किया जा रहा है। कंपनी को विभिन्न डेटिंग ऐप्स में आकर्षक निवेश का वादा करके धोखाधड़ी करने वाला पाया गया है। मालूम हो कि इस फर्जी संस्था के मालिक चीनी मूल के हैं।

राउरकेला पुलिस ने भारी मात्रा में जब्त की शराब

ROURKELA : लोकसभा और विधानसभा चुनाव को देखते हुए ओडिशा पुलिस महानिदेशक के निर्देश पर राउरकेला जिला पुलिस अवैध शराब कारोबार, अवैध शराब आदि को लेकर छापेमारी कर रही है। भारी मात्रा में शराब जब्त भी की गई है। वर्तमान में ब्राह्मणीतरंग थाने में तैनात आईपीएस सोनाली सिंह परमार के नेतृत्व में पुलिस ने वेदब्यास और उसके आसपास के इलाकों में छापेमारी कर शराब जब्त की। पुलिस के मुताबिक आने वाले दिनों में भी इस तरह की छापामारी जारी रहेगी।

लाइसेंसी हथियार है तो थाने से करा लें सत्यापन : उपायुक्त

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त अनन्य मित्तल ने निर्देश दिया है कि पूर्वी सिंहभूम जिले में जिनके पास भी लाइसेंसी राइफल, बंदूक, रिवाल्वर या पिस्तौल हो, वे अपने क्षेत्र के थाना से लाइसेंस का सत्यापन करा लें। ऐसा इसलिए किया जा रहा है, जिससे लोकसभा निर्वाचन स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराया जा सके।

जिले के सभी शस्त्र अनुज्ञप्तिधारी से अपने शस्त्र अनुज्ञप्ति में अंकित शस्त्र को संबंधित थाना में 28 से 30 मार्च तक सत्यापन कराने को कहा गया है। इसमें वैसे शस्त्र अनुज्ञप्तिधारक, जिनका शस्त्र अनुज्ञप्ति अन्य राज्य या जिले से निर्गत है, किंतु उनके शस्त्र अनुज्ञप्ति का विवरण पूर्वी सिंहभूम जिला के पंजी में दर्ज नहीं है, परंतु धारक का आवासन पूर्वी सिंहभूम जिला में है। वैसे अनुज्ञप्तिधारक भी उपरोक्त निर्धारित तिथि को ससमय संबंधित थाना में उपस्थित होकर अपने शस्त्र अनुज्ञप्ति तथा शस्त्र का सत्यापन करेंगे। निर्धारित तिथि में अपने शस्त्र का सत्यापन नहीं कराने पर जांच के क्रम में दंडाधिकारी या पुलिस पदाधिकारी द्वारा शस्त्र जब्त किया जाएगा एवं उनके विरूद्ध नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

तमिलनाडु से 21,000 किलोमीटर की यात्रा पर निकलीं 'बुलेट रानी' पहुंचीं जमशेदपुर

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : तमिलनाडु के मदुरई से 21,000 किलोमीटर की यात्रा पर निकली ह्यबुलेट रानीह्न राजलक्ष्मी मंदा बुधवार को जमशेदपुर पहुंचीं। यहां सोनारी एयरपोर्ट के पास भाजयुमो, जमशेदपुर महानगर के जिलाध्यक्ष अमित अग्रवाल की अगुवाई में कार्यकताओं ने ढोल-नगाड़ों के बीच पुष्पगुच्छ व अंगवस्त्र भेंटकर गर्मजोशी से स्वागत किया। ह्यबुलेट रानीह्न के नाम से लोकप्रिय राजलक्ष्मी

मंदा का संकल्प नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने का है। वह इसी उद्देश्य के साथ लंबे सफर पर निकली हैं, उनकी यात्रा 18 अप्रैल को नई दिल्ली में समाप्त होगी। कार्यकताओं ने राजलक्ष्मी मंदा के साथ बाइक

जमशेदपुर पहुंचीं बुलेट रानी का स्वागत करते लोग। ● फोटोन न्यूज

रैली निकालकर आदित्यपुर पुल तक नारेबाजी करते हुए गंतव्य के लिए रवाना किया। ज्ञात हो कि राजलक्ष्मी मंदा 9.5 टन के ट्रक को खींचकर पहली महिला बनने का विश्व कीर्तिमान स्थापित कर चुकी हैं। राजलक्ष्मी मंदा अब तक तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा व छत्तीसगढ़ होते हुए झारखंड पहुंची है। जमशेदपुर के पश्चात उनकी 'संकल्प यात्रा' चाईबासा के रास्ते खूंटी के लिए प्रस्थान करेगी।

होली की मस्ती में सराबोर रहा शहर गीत-संगीत व नृत्य पर झूमे लोग

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : देश भर के साथ जमशेदपुर में भी दो दिन होली मनाई, जिसमें अधिकांश लोगों ने 25 मार्च, तो कई ने 26 मार्च को रंग-अबीर लगाकर खुशियां बांटीं। राजनेताओं से लेकर सामाजिक संस्थाओं में धूमधाम से होली का आयोजन किया गया। सोशल मीडिया पर भी एक-दूसरे को बधाई देने का सिलसिला दोनों दिन चला, जबकि कुछ लोगों ने फोन करके होली की शुभकामना दी। इसी बीच कदमा के उलियान स्थित श्रीश्री लक्ष्मी नारायण मारवाड़ी मंदिर धर्मशाला में सोमवार की शाम को रंगारंग होली मिलन समारोह हुआ, जिसमें

कदमा के लक्ष्मीनारायण मंदिर में नृत्य प्रस्तुत करतीं महिलाएं व बच्चे। ● फोटोन न्यूज

उत्साह के साथ मारवाड़ी समाज के लोगों ने एक-दूसरे को अबीर-गुलाल लगाकर होली की शुभकामना दी। यहां फूलों की होली भी खेली गई। समाज के बच्चों ने फैंसी ड्रेस तथा महिलाओं द्वारा एकल एवं सामूहिक रूप में राजस्थानी नृत्य की शानदार प्रस्तुति दी गई। स्थानीय कलाकार महावीर अग्रवाल एंड टीम द्वारा भी मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया गया। इससे पहले गणेश वंदना से फाग गीतों की शुरूआत हुई। मंदिर में उड़े रे गुलाल..., फागण आयो रे सांवरिया मारा खेलो होली..., आज बिरज में होरी रे सखियां आज बिरज में होरी..., होली आई होली मस्ती आई रे..., आयो आयो रे फागणियों... आदि फाग गीतों से मंदिर का धर्मशाला परिसर होली की मस्ती में डूब गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे मंदिर कमेटी के मुख्य संरक्षक व स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता अपनी पत्नी सुधा गुप्ता के साथ शामिल हुए। कार्यक्रम को सफल बनाने में मंदिर कमेटी के अध्यक्ष संतोष अग्रवाल, महामंत्री अशोक मोदी, मुरारीलाल अग्रवाल, निर्मल मित्तल, नरेश मोदी, सांवरमल शर्मा, महावीर गुप्ता सहित निर्णायक की भूमिका में छाया गुप्ता व रेखा मित्तल आदि का योगदान रहा।

केंद्रीय रामनवमी अखाड़ा कमेटी का होली मिलन समारोह आयोजित

जिला प्रशासन स्वयंभू नेताओं को शांति समिति से हटाए : अभय सिंह

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : केंद्रीय रामनवमी अखाड़ा कमेटी, जमशेदपुर के मुख्य संरक्षक अभय सिंह ने बुधवार शाम को काशीडीह दुर्गापूजा मैदान में होली मिलन का आयोजन किया, जिसमें शहर के 165 अखाड़ा के लाइसेंसी व अध्यक्ष शामिल थे। इस दौरान अभय सिंह ने कहा कि जिला प्रशासन ऐसे लोगों को शांति समिति से हटाए, जो स्वयंभू बनकर बैठे हैं। हम जिला प्रशासन से मांग करते हैं कि विगत दिनों एवं विगत वर्ष में कुछ ऐसे लोग थे, जो अखाड़ा वाले नहीं थे। लाइसेंसी भी नहीं थे, लेकिन शांति समिति में शामिल थे। ये लोग जिला प्रशासन को भ्रमित करते रहते हैं। ऐसे लोग अपनी

रामनवमी अखाड़ा संचालकों को संबोधित करते अभय सिंह। ● फोटोन न्यूज

राजनीतिक रोटी सेकते हैं और यही सब कर अपनी दुकानदारी चलाते हैं। प्रशासन को ऐसे लोगों को चिह्नित करना चाहिए। विगत वर्ष कुछ नामचीन लोग जिन्हें जिम्मेदारी दी गई थी, वे जमशेदपुर के डीसी-एसएसपी को कैमरा में चिह्नित कराते थे। उन्होंने पूरी पूजा को बंटाधार करने का प्रयास किया था। हमें और जिला प्रशासन को भी ऐसे लोगों से सावधान रहना चाहिए। विगत वर्ष की घटना में हमें जेल जाना पड़ा, लेकिन मुझे इसका तनिक भी अफसोस नहीं है। आगामी रामनवमी के पूर्व प्रशासन बैठक बुलाए और हर समस्या के निदान की पहल करें। जमशेदपुर केंद्रीय रामनवमी अखाड़ा समिति परस्पर सहयोग के लिए तैयार है।

एसडीओ ने अधिकारियों के साथ बैठक कर बूथों की स्थिति की ली जानकारी

CHAIBASA : आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर बुधवार को पोड़ाहाट अनुमंडल कार्यालय में बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता पोड़ाहाट अनुमंडल पदाधिकारी सह निर्वाचन पदाधिकारी रीना हांसदा ने की। जहां पोड़ाहाट अनुमंडल के विभिन्न प्रखंड पदाधिकारियों के अलावे, अंचलाधिकारी व विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित हुये। बैठक के दौरान एसडीओ रीना हांसदा ने सभी अधिकारियों से बूथों की स्थिति के बारे में जानकारी ली। साथ ही मतदान केन्द्र पर पानी, बिजली, शौचालय की व्यवस्था, बूथों के अंतर्गत आने वाले मतदाता, पन्ना सत्यापन इत्यादि के संबंध में पूछताछ करते हुये कई दिशा-निर्देश दिए। एसडीओ रीना हांसदा ने कहा कि जिन स्थानों पर बूथों की स्थिति अच्छी नहीं है उसे जल्द से जल्द दुरुस्त किया जाएं, ताकि मतदाताओं को मतदान के दिन किसी प्रकार की परेशानी न हो।इस दौरान गांव से दूर मतदान केन्द्र के बारे में भी चर्चा हुई। बैठक में पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के कार्यपालक अभियंता प्रभु दयाल मंडल, बिजली विभाग के कार्यपालक अभियंता, प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी के अलावे सेक्टर पदाधिकारी मौजूद थे।

राउरकेला में होलिका दहन व रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन

होलिका दहन के अवसर पर उपस्थित लोग। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS ROURKELA : राउरकेला इस्पात शहर में विभिन्न संगठनों द्वारा होली मनाई गई। रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम ठंडाई, पकौड़ी एवं अल्पाहार का आयोजन संगठन के द्वारा किया गया। होलिका दहन दौरान सभी लोग एवं नव विवाहित महिलाओं के द्वारा होलिका की परिक्रमा की गई। इस अवसर पर पारंपरिक गीत गाती महिलाएं लाल चुनरी ओढ़ कर पूजा सामग्री लेकर होलिका की पूजा अर्चना की। शहर के बिरसा दहर रोड हनुमान मंदिर के सामने होलिका दहन कार्यकर्म की आयोजन किया गया। इसी प्रकार सिविल टाउनशिप, मधुसूदन मार्ग, उदीतनगर द्वारकापुरी के सामने गांधी रोड, बसंती कॉलोनी, पनपोष बस्ती, जनता निवास गली नवयुवक संघ की ओर से बुढ़िया बगान मैदान में होलिका दहन कार्यक्रम समेत शहर के विभिन्न अंचलों में होलिका दहन कार्यक्रम करने के साथ-साथ रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया।

आजसू पार्टी के संसदीय बोर्ड में सहिस भी शामिल

JAMSHEDPUR : आजसू पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो के नेतृत्व में संसदीय बोर्ड का गठन किया गया है, जिसमें जुगसलाई विधानसभा के पूर्व विधायक व मंत्री रामचंद्र सहिस को भी शामिल किया गया है। इनके अलावा संसदीय बोर्ड में चंद्रप्रकाश चौधरी, डोमन सिंह मुंडा, संजय बसु मल्लिक, मुकुंद चंद्र मेहता, लंबोदर मेहता, देवशरण भगत, उमाकांत रजक, कुशवाहा शिवपूजन मेहता, अकील अख्तर, हसन अंसारी, स्वपन सिंहदेव, राधेश्याम गोस्वामी व राजेंद्र मेहता भी सदस्य बनाए गए हैं।

वोटर अवेयरनेस फोरम की बैठक का आयोजन

PHOTON NEWS CHAIBASA : पश्चिमी सिंहभूम जिला समाहरणालय सभागार में जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त के निदेर्शानुसार नोडल पदाधिकारी कार्मिक कोषांग सह उप विकास आयुक्त संदीप कुमार मीणा के नेतृत्व एवं नोडल पदाधिकारी स्वीप कोषांग सह सदर चाईबासा अनुमंडल पदाधिकारी अनिमेष रंजन, नोडल पदाधिकारी मीडिया कोषांग सह जिला जनसंपर्क पदाधिकारी ईशा खंडेलवाल की मौजूदगी में लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के तदर्थ वोटर अवेयरनेस फोरम की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में जिला अंतर्गत सभी सरकारी कार्यालय, विभाग, संस्थान सहित निजी व्यवसायिक कंपनी, संगठन, बैंक आदि संस्थानों से नामित नोडल कंवेनर के द्वारा भाग लिया गया।

गोपबंधु पुस्तकालय, राउरकेला सेवानिवृत्त कर्मचारी संघ और रोटरी क्लब का होली मिलन समारोह आयोजित

गुरु व स्त्री का सम्मान हमारी संस्कृति की पहचान है: अजीत पण्डा

PHOTON NEWS ROURKELA : गोपबंधु पुस्तकालय, राउरकेला सेवानिवृत्त कर्मचारी संघ और रोटरी क्लब राउरकेला रिवरसाइड द्वारा होली मिलन समारोह आयोजित हुआ। मुख्य वक्ता गंजाम जिले के घुमसर के हास्य कलाकार अजीत कुमार पांडा थे। अजीत कुमार पांडा ने कहा कि गुरु जन और महिलाओं का सम्मान ही हमारी संस्कृति की असली पहचान है। आधुनिकता के नाम से आज हमारी संस्कृति और परंपरा का किस प्रकार तेजी से ह्रास हो रहा है, इस पर उन्होंने उदाहरणों के साथ बहुत ही शानदार ढंग से बात की और व्यंग्यपूर्ण आक्रोश व्यक्त किया।

अजीत कुमार पांडा को उनकी बहुमुखी प्रतिभा के सम्मान में तीनों संस्थानों द्वारा ₹रसराज₹ की उपाधि से सम्मानित किया गया। कवि

होली मिलन कार्यक्रम में उपस्थित लोग। ● फोटोन न्यूज

राजीव पाणी के संचालन में हुए समारोह में गोपबंधु पुस्तकालय के अध्यक्ष नवघन साहू, सेवानिवृत्त कर्मचारी संघ के महासचिव प्रोफेसर शंकर प्रसाद त्रिपाठी और रोटरी क्लब के अध्यक्ष भगवान पाढ़ी मंचासीन रहते हुए और सभी को होली की बधाई दी। पुस्तकालय संपादक प्रोफेसर ड. गिरिजा शंकर गोस्वामी ने परिचयात्मक टिप्पणी दी, जबकि साधारण संपादक हरिहर शतपथी ने स्वागत भाषण दिया और गदाधर रथ ने अतिथि परिचय दिया।

दूसरे चरण में कवि नृसिंह चरण विश्वाल के संयोजन में कवि राजीव मणि, अजय कुमार मोहंती, किशोरी मोहन कर, राजकुमार महान्ति, गदाधर रथ, नृसिंह चरण विश्वाल, भगवान पाढ़ी और अजीत कुमार पण्डा ने होली पर कविताएं सुनाईं। अंत में पुस्तकालय के कोषाध्यक्ष लक्ष्मण नाथ दास ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इन सभी कार्य कर्म के आयोजन में गदा धर रथ, गिरिजा शंकर गोस्वामी , हरिहर नायक और विश्वनाथ जेना ने मुख्य भूमिका निभाई, जबकि डॉ. प्रफुल्ल चंद्र महापात्र, प्रतीमा महापात्र, रवीन्द्र कुमार सराफ, डॉ. गोकुलानंद साहू, सविता सबिता साहू, सावित्री दास, गीता सेनापती, जयश्री पाढ़ी, गोपाल प्रसाद जेना, नमिता आचार्य, सुप्रिया महान्ति, सुरेंद्र कुमार पण्डा, पंकज कुमार प्रधान, प्रभाती गोस्वामी, तनुश्री महान्ति, ललिता दाश, राजश्री रथ, पुष्पश्री महापात्र, रमेश चंद्र सिंह, रबीनारायण सिंह, डॉ. शक्ति प्रसाद सामंतराय, स्निग्धा सामंतराय, प्रीति साहू, डॉ. महेश प्रसाद बेहरा, हरिश्चंद्र भूमिज, देबराज गौड़, निर्मल कुमार आचार्य, सूर्यमणि शतपथी, अरविंद पात्र, सूरज कुमार साहू, मधुसूदन बल, विवेकानंद जेना, देवराज राउत, रामजतन साहू, रमेश चंद्र मल्लिक, रबीनारायण सी, ध्रुव चरण नायक, प्रताप चंद्र महान्ति, जे.एम. प्रधान, हृषिकेश नायक, विजय कुमार परीडा, उदयनाथ जेना, नारायण चंद्र जेना, अर्जुन कुमार, अजीत कुमार पण्डा, अशोक कुमार बल प्रमुख शहर के सैकड़ों साहित्य-संस्कृति प्रेमी होली में शामिल होकर उत्सवी अंदाज में पुनर्मिलन का आनंद उठाया।

शहर के विभिन्न हिस्सों में रंगों का त्योहार होली मनी

होली मनाते लोग। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS ROURKELA : शहर के विभिन्न इलाकों में रंगों का त्योहार मनाया गया और एक-दूसरे को शुभकामनाएं दी गई। होली बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। अबीर उड़ाकर और मिठाई खाकर एक-दूसरे को बधाई दिया गया । होली की अवसर पर विभिन्न संगठनों की ओर से शरबत,पकौड़े और नमकीन के साथ रंगों का जश्न मनाया गया। राउरकेला में जगह-जगह लोग होली खेलते नजर आये। होली के मौके पर खासकर राउरकेला शहर के विभिन्न हिस्सों की सड़कों और गलियों में लोग नाचते, गाते और ढोल बजाते नजर आये। एक-दूसरे को रंग-अबीर लगाकर होली की शुभकामनाएं दीं।

पूर्व केंद्रीय मंत्री दिलीप राय ने कल्याणी निवास में राउरकेला की जनता को संबोधित किया। इसी तरह राउरकेला शहर के मुख्य मार्ग पर कैलाशपुरी होटल के पास रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बिरसा डाहर रोड में युवाओं ने एक-दूसरे को होली का रंग लगाया। इसी तरह डेलीमार्केट मिश्रा लेन माडू महाराज गली, पावर हाउस चौक, जनता निवास गली, मधुसूदन स्ट्रीट में भी बच्चों में होली का उत्साह देखा गया।

अमेरिकन कंपनी छोड़ शुरू किया स्टार्टअप, आज करोड़ों कमा रहे

पूर्णिया में दो दोस्तों ने मखाना को दिलाई ग्लोबल पहचान, US-सिंगापुर समेत 5 देशों में डिमांड

पूर्णिया। में दो दोस्तों का स्टार्टअप मखाने को ग्लोबल पहचान दे रहा है। अमेरिकन कंपनी की नौकरी छोड़ मनीष और सुमित नाम के 2 दोस्त अब मखाने के प्रोडक्शन में जुट गए हैं। मनीष और सुमित ने 2017 में फार्म टू फैक्ट्री नाम से मखाना स्टार्टअप की शुरूआत की। दोनों मखाने के अलग-अलग फ्लेवर्स का दूसरे देशों में एक्सपोर्ट करते हैं। इन सात सालों में दोनों की मेहनत रंग लाई और आज मखाना से बने प्रोडक्ट की डिमांड देश में ही नहीं बल्कि सात समंदर पार अमेरिका, कनाडा, सिंगापुर और वअए जैसे देशों से आ रही है। बिहार के सफेद सोना के नाम से मशहूर मखाना ने इन युवा उद्यमियों के जीवन को उजाले से भर दिया है। आज दोनों करोड़ों की कमाई कर रहे हैं साथ ही कई मजदूरों को रोजगार दे रहे हैं। इन दोनों युवाओं

से खास बातचीत की है।30 से अधिक किसान 50 एकड़ में खेती कर रहे सुमित और मनीष ने अपने स्टार्टअप की शुरूआत हरदा के रहुआ गांव में 'फार्म टू फैक्ट्री' नाम से मखाना आधारित स्टार्टअप उद्योग लगाकर की। दोनों ने खेत से लेकर प्रोडक्शन तक, साथ ही पैकेजिंग से लेकर सप्लाई तक का काम एक चेन बनाकर शुरू किया। इनके इस प्रयास से मखाने की खेती करने वाले 30 से अधिक किसान समूह में 50 एकड़ में खेती कर रहे हैं। इस स्टार्टअप से स्थानीय स्तर पर 20 से अधिक मजदूरों को गांव में ही रोजगार मिल रहा है। ट्अप की शुरूआत करने वाले मनीष कुमार और सुमित कुमार ने बताया

कि 2017 से पहले दोनों एक अमेरिकन कंपनी में काम करते थे। यहीं दोनों की मुलाकात हुई और ये मालूम हुआ कि दोनों पूर्णिया के ही रहने वाले हैं। हालांकि, मिट्टी की खुशबू उन्हें बड़े शहर की चकाचौंध से वापस पूर्णिया खींच लाई। यहां उन्होंने मखाने की खेती करने वाले किसानों में गजब की दिलचस्पी देखी, लेकिन वे किसान मखाने को बाजार न मिल पाने और बिचौलिए से परेशान दिखें, जो इनके मुनाफे में हकमारी कर रहे थे। दोनों को तभी मखाना से जुड़ा स्टार्टअप शुरू करने का ख्याल आया।2017 में यानी सात साल पहले दोनों ने रहुआ गांव के किसानों से बातचीत की और मखाने से बने उत्पादों का प्रोडक्शन शुरू किया। इसका असर हुआ कि 30 से अधिक किसान उनसे जुड़ गए। एक समूह में 50 एकड़ में मखाने की खेती शुरू की गई। इसी फैक्ट्री से उन्होंने प्रोडक्शन, पैकेजिंग और सप्लाई की शुरूआत की। दो दोस्तों की मेहनत और लग्न ने लोकल मखाने को ग्लोबल पहचान दिया है। देश में ही नहीं बल्कि मखाने से बने कई फ्लेवर के उत्पाद अमेरिका, कनाडा, यूएई, यूएस और सिंगापुर जैसी कंट्री में भेजा जा रहा है। उन्हें इन देशों से इसकी खूब डिमांड आ रही है। आगे मखाने को अन्य देशों में भी लॉन्च करने का प्लान है। सफेद सोना ने जिंदगी को उजाले से भर दिया है। 2017 में उन्होंने मखाने के जिस स्टार्टअप को शुरू किया था। आज वो कारोबार 35 से 40 लाख सालाना पर पहुंच गया है।

चोरों ने एक किराना दुकान और घर को अपना निशाना बनाते हुए चोरी की घटना को अंजाम दिया

मुजफ़्फरपुर। में पुलिस के तमाम प्रयास के बाद बेखौफ चोरों का आतंक जारी है।चोरी की घटना का नया मामला कांटी थाना क्षेत्र के साइन चौक से सामने आया है। जहां देर रात बेखौफ चोरों ने एक किराना दुकान और घर को अपना निशाना बनाते हुए चोरी की घटना को अंजाम दिया है।कांटी थाना क्षेत्र में हुई भीषण चोरी की घटना साइन के महावीर चौक की बताई जा रही है।जहां चोरों ने चौक पर स्तिथ एक दुकान और घर को निशाना बनाते हुए लाखों का सामान चोरी कर लिया गया है। सुबह में चोरी की घटना की जानकारी मिलते ही स्थानीय लोगों और दुकानदारों में हड़कंप मच गया है। सीसीटीवी का डीवीआर भी ले गए चोरी की इस घटना के सम्बंध में पीड़ित किराना दुकानदार अर्जुन कुमार ने बताया कि चोरों ने घर में पिछले हिस्से में मौजूद एक रौशनदान को तोड़कर दुकान और घर मे प्रवेश किया है। चोरों ने दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे के डिवीआर को चुरा ले गए। वहीं दुकान में लगे कैमरे को भी क्षतिग्रस्त किया गया है। वही चोरों ने उनके दुकान में रखी गई 20 हजार नगदी समेत उनकी मां और पत्नी के लाखों के जेवर की चोरी हुई है। वही इस संबंध में पीड़ित दुकानदार के द्वारा स्थानीय कांटी थाना को इस मामले की पूरी जानकारी दे दी गई है। जिसके बाद मौके पर पहुंची पुलिस की टीम चोरी के इस घटना के छानबीन में जुट गई है। इस संबंध में कांटी थाना प्रभारी संजीव कुमार ने बताया की साइन में हुई चोरी की जानकारी पुलिस को मिली है। जहां घटनास्थल पर मामले की जांच के लिए पुलिस टीम को भेजा गया है।

जीत-हार के पीछे समीकरण का खेल

पूर्णिया। की गिनती सीमांचल के महत्वपूर्ण जिले के तौर पर होती है। इसे सीमांचल की राजधानी भी बोला जाता है। यहां किसी की जीत-हार में (मुस्लिम-यादव) समीकरण को साधने की बड़ी चुनौती होती है। यहां से तीन बार सांसद रहे पप्पू यादव की कांग्रेस में एंट्री से मुकाबला दिलचस्प हो सकता है। हालांकि, पूर्णिया से महागठबंधन में किसके खाते में यह सीट जाएगी। यह तय नहीं हुआ है। पूर्णिया में पूर्व विधायक बीमा भारती आज प्रेस कॉन्फ्रेंस करेंगी। टिकट की दावेदारी को लेकर अपनी बातें रखेंगी। दरअसल पूर्णिया सीट को लेकर महागठबंधन में अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया गया है। पप्पू यादव खुद कांग्रेस से दावेदारी ठोक रहे हैं। इधर, एनडीए में जदयू के खाते में पूर्णिया सीट गई है। यहां से लगातार दो बार जदयू से सांसद रहे संतोष कुशवाहा को तीसरी बार भी उतारा गया है, लेकिन उनके लिए हैट्रिक लगाना बड़ी चुनौती हो सकती है। अब तक के चुनावों में ट फैक्टर यहां निर्णायक साबित होता रहा है। पूर्णिया में करीब 30 फीसदी मुस्लिम वोटर और 7 प्रतिशत यादव वोटर हैं। 2014 के मोदी लहर में भाजपा को इस सीट पर करारी शिकस्त झेलनी पड़ी। ये सीट करीब तीस वर्ष तक कांग्रेसियों का गढ़ रहा।

मोदी-शाह के बाद अब योगी की एंट्री

पटना। लोकसभा चुनाव में बिहार के 40 सीटों पर कब्जे को लेकर बीजेपी ने धुंआधार प्रचार करने की रणनीति बनाई है। बिहार में प्रचार के लिए बीजेपी के प्रदेश स्तर से लेकर केंद्रीय स्तर के कई बड़े चेहरे शामिल होंगे। बीजेपी ने प्रचार के लिए अपने स्टार प्रचारकों की सूची घोषित कर दिया है। बिहार में प्रचार के लिए आने वाले स्टार प्रचारकों में पीएम मोदी के साथ अमित शाह शामिल हो गई हैं। जो पहले ही बिहार के कई दायरे लगा चुके हैं । दोनो के अलावा बिहार में अब यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की भी एंट्री होने वाली है। बिहार मे हिंदुत्व और कानून के मुद्दे पर यूपी के सीएम योगी बिहार में घूमेंगे और प्रचार करेंगे। वहीं भाजपा ने एक बार फिर से पवन सिंह को बिहार से आउट कर दिया है। बिहार के आरा से लोकसभा से चुनाव की बात करने वाले पवन सिंह को भाजपा ने बिहार में कहीं टिकट नहीं दिया था। इसके बाद अब पवन सिंह को स्टार प्रचारक के लिस्ट से भी बाहर कर दिया गया है। भाजपा द्वारा जारी किए गये 40 स्टार प्रचारक के लिस्ट से पवन सिंह को जगह नहीं दिया गया है। हर चरण में पीएम मोदी, शाह और योगी करेंगे प्रचार बिहार के 40 सीटों पर कब्जे को लेकर बीजेपी ने अपने स्टार प्रचारकों को चरणबद्ध तरीके से उतारने की रणनीति बनाई है। पीएम मोदी, अमित शाह और योगी बिहार में सभी सात चरणों में अलग अलग जिलों में प्रचार के लिए पहुचेंगे।

दरभंगा में गेमचेंजर की भूमिका में हैं ब्राह्मण-मुस्लिम

दरभंगा। बिहार का दरभंगा एकमात्र लोकसभा सीट है, जहां 9 बार ब्राह्मण प्रत्याशी सांसद बने हुए हैं। इस सीट पर ब्राह्मण और मुस्लिम का ही वर्चस्व है। यही किसी का खेल बनाते हैं तो बिगाड़ते भी हैं। दरभंगा को ब्राह्मण जाति का गढ़ कहा जाता है। इस बार भी यहां से गोपाल जी ठाकुर को भाजपा ने उम्मीदवार बनाया है। इस सीट पर शुरूआती दौर से ही ब्राह्मण और मुस्लिम जाति का वर्चस्व रहा है। 1952 से लेकर1980 तक इस सीट पर कांग्रेस के उम्मीदवार लगातार जीत दर्ज करते रहे। सिर्फ 1977 में कांग्रेस की हार हुई थी। पहली बार दरभंगा में 1999 में कमल खिला था। हालांकि, 2004 में हार हुई। इसके बाद लगातार भाजपा जीत दर्ज कर रही है। फरवरी 1961 से अक्टूबर 1963 तक बिहार के मुख्यमंत्री रहे विवेकानंद झा भी दरभंगा से सांसद रहे हैं।दरभंगा लोकसभा के इतिहास में सबसे अधिक वोट से जीतने वाले सांसद भाजपा के गोपाल जी ठाकुर हैं। 2019 में सबसे ज्यादा मतों से इनकी जीत हुई थी। वहीं, दूसरे नंबर पर अब्दुल बारी सिद्धिकी रहे थे। भाजपा की ओर से इस बार भी गोपाल जी ठाकुर को प्रत्याशी बनाया गया है। वे दरभंगा के बेनीपुर विधानसभा से 2010 में भाजपा कोटे से विधायक रह चुके हैं।वहीं, दूसरी ओर महागठबंधन में यह सीट राजद के कोटे में जाना निश्चित है। संभावित उम्मीदवारों में पहला नाम ललित यादव। वे दरभंगा ग्रामीण से विधायक हैं और महागठबंधन की सरकार में मंत्री थे। जबकि, दूसरा नाम राजद के जिला अध्यक्ष उदय शंकर यादव का है। उदय शंकर एमएलसी का चुनाव लड़ चुके हैं। उनकी भी उम्मीदवारी को लेकर चर्चा तेज है। दरभंगा में अक्टक्ट ने मुकाबले को दिलचस्प बना दिया है। बिहार में 11 सीटों पर अक्टक्ट प्रत्याशी उतार रही है।

सड़क हादसे में जीजा की मौत, साला गंभीर

भोजपुर । शहर के नवादा थाना क्षेत्र के गिरजा मोड़ स्थित पड़ी गैस एजेंसी के पास मंगलवार की देर शाम अज्ञात वाहन ने बाइक सवार एफसीआई कमी व उसके साले को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में एफसीआई कर्मी की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। जबकि बाइक पर बैठा उसका साला गंभीर रूप से जख्मी हो गया। जख्मी साले को इलाज के लिए सदर अस्पताल लाया गया। जहां से प्राथमिक उपचार करने के बाद उसकी हालत को चिंताजनक देखते हुए पटना रेफर कर दिया गया है।मृतक की पहचान कृष्णागढ़ थाना क्षेत्र के बलुआ गांव निवासी स्व.जितेंद्र प्रसाद सिंह के बेटे राहुल कुमार सिंह(28) के रूप में हुई है। वह एफसीआई में फील्ड ऑफिसर के पद पर सहरसा जिले में अनुबंध पर कार्यरत थे। वह वर्तमान में नवादा थाना क्षेत्र के सर्किट हाउस के समीप किराए का मकान लेकर रहते थे। जबकि जख्मी युवक नवादा थाना क्षेत्र के सर्किट हाउस निवासी अनिल सिंह का 30 वर्षीय पुत्र व मृतक का साला नीरज कुमार सिंह है। इधर मृतक के बड़े भाई राजेश कुमार सिंह ने बताया कि वह दोनों बाइक से दोस्तों के साथ अबीर-गुलाल खेलकर वापस घर लौट रहे थे।

आपसी विवाद में वृद्ध महिला की हत्या

गया। गया के अति नक्सल प्रभावित बाराचट्टी प्रखण्ड अंतर्गत धनगाई थाना क्षेत्र के कदल गांव में आपसी विवाद में एक महिला की हत्या कर दी गई। सोमवार की देर रात आपसी विवाद में सुकर मांझी की पत्नी कलवा देवी (56) की हत्या उसके ही गोतिया ने कर दी है। यह घटना तब हुई जब लोग आपस में होली पर्व को लेकर खाना-पीना खा रहे थे। ग्रामीणों के अनुसार आपस में गोतिया के साथ कहा सुनी होते-होते लोग हाथापाई करते-करते हत्या तक की घटना को अंजाम तक पहुंच गए। किसी ने कलवा देवी को डंडे से पजंडे पर एक साथ कई वार कर दिए। इसकी वजह से उसकी मौत हो गई। आपसी विवाद का कारण जमीन विवाद बताई जा रही है। दोनों पक्षों के बीच पैतृक जमीन को लेकर पूर्व से विवाद चला आ रहा था। गांव के लोगों का कहना है कि दोनों पक्षों के बीच समझौता कराया गया। बावजूद इसके दोनों के बीच विवाद चल रहा था। वहीं हत्या की घटना को अंजाम दिए जाने के बाद से आरोपी पक्ष के सभी लोग गांव छोड़कर फरार हो गए हैं। थानाध्यक्ष आंनद राम ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि हत्या आपसी विवाद में गोतिया ने किया है।

अजय कानू ने लालू से मुलाकात कर मांगा टिकट

पटना। बिहार में भूमिहार बहुल लोकसभा क्षेत्र गिनती के हैं। बेगूसराय, मुंगेर, जहानाबाद और नवादा। इन सभी सीटों पर लालू यादव ने बड़ा खेल लोकसभा चुनाव में किया है। बेगूसराय सीट सीपीआई को दे दी गई। यहां से यादव जाति के अवधेश राय चुनाव लड़ेंगे। मुंगेर में आरजेडी से अशोक महतो की पत्नी को सिंबल दे दिया गया। नवादा में श्रवण कुशवाहा को उतारा जा रहा। जहानाबाद सीट पर सुरेन्द्र यादव को लड़ाने की चर्चा है, लेकिन बड़ी खबर यह है कि जहानाबाद जेल ब्रेक कांड से जुड़े अजय कानू ने लालू प्रसाद से मुलाकात की है। अजय कानू ने लालू प्रसाद को अपनी पत्नी का बायोडाटा दिया है। वे चाहते हैं कि उनकी पत्नी जहानाबाद से लोकसभा का चुनाव लड़े। चंद्रेश्वर चंद्रवंशी और अजय कानू दोनों अतिपिछड़ा जाति से अब तक लालू प्रसाद ने जहानाबाद से सुरेन्द्र यादव को आरजेडी का सिंबल नहीं दिया है। जहानाबाद लोकसभा सीट पर अभी जेडीयू के चंद्रेश्वर चंद्रवंशी सांसद हैं। वे कहार जाति से आते हैं। अजय कानू, कानू जाति से आते हैं। यह भी कहार जाति की तरह अतिपिछड़ी जाति है। पिछली बार जहानाबाद सीट पर लालू प्रसाद के बड़े पुत्र तेजप्रताप यादव ने खेल कर दिया था और कांग्रेस नेता चंद्रिका राय के बेटे चंद्रप्रताप यादव को खड़ा कर दिया था। चंद्रप्रताप ने साढ़े 7 हजार वोट लाया था। दूसरी तरफ जेडीयू के चंद्रेश्वर चंद्रवंशी को 335584 वोट और आरजेडी के उम्मीदवार सुरेन्द्र यादव को 333833 वोट मिले थे। जहानाबाद भूमिहार बहुल लोकसभा क्षेत्र है लेकिन नीतीश कुमार ने पिछली बार यहां बड़ा प्रयोग करते हुए अतिपिछड़ी जाति के चंद्रेश्वर चंद्रवंशी को टिकट देकर सभी को चौंका दिया था। चंद्रवंशी ने काफी वोट भी लाया था। अतिपिछड़ा कानू जाति को टिकट मिले- अजय कानू अजय कानू शुक्रवार को लालू प्रसाद से राबड़ी देवी के आवास में मिले थे। उन्होंने बताया मैंने लालू प्रसाद को बताया है कानू जाति अतिपिछड़ी जाति से आती है। किसी पार्टी ने कानू को विधान सभा, लोकसभा, विधान परिषद कहीं टिकट नहीं दिया गया है, इसलिए मेरी पत्नी को लोकसभा चुनाव का टिकट दिया जाए। मेरी जन्म भूमि अरवल है और कर्मभूमि जहानाबाद जिला है। दोनों इलाके जहानाबाद लोकसभा क्षेत्र में आते हैं। उन्होंने कहा है कि मुझे उम्मीद है कि लालू प्रसाद हमें टिकट देंगे। अजय कानू की ताकत पहली बात यह कि जेडीयू के चंद्रवेश्वर चंद्रवंशी अतिपिछड़ी जाति से आते हैं इसके जवाब में अजय कानू अतिपिछड़ी हैं। दूसरी यह कि भूमिहारों के विरोध में यह जहानाबाद में बड़ा नाम है। वे मुंगेर के अजय महतो कि तरह राजनीति नहीं कर सकते। कई मामले इन पर हैं। इसलिए पत्नी को चुनाव लड़ाना चाहते हैं। अजय ने जहानाबाद के ही एसएन सिंहा कॉलेज से 1986-88 बैच में बीए तक की पढ़ाई की है। वे पहले एबीवीपी के कॉलेज अध्यक्ष थे। बाद में 1990 से वामपंथी राजनीति करने लगे। हाल के दिनों में वेब सीरीज जहानाबाद ऑफ लव एंड वार से चर्चा में हाल के समय में ओटीटी पर जहानाबाद ऑफ लव एंड वार वेब सीरीज से अजय कानू चर्चा में आए थे। यह 13 नवंबर 2005 में हुए जहानाबाद जेल ब्रेक कांड पर आधारित था। उस समय अपने साथियों को बाहर निकालने के लिए एक हजार माओवादियों ने रात के अंधेरे में जेल पर ही हमला कर दिया था। राजधानी पटना से महज 60 किमी पर यह दुस्साहस दिखाया गया था। शासन- प्रशासन को यह बड़ी चुनौती थी। बम और आधुनिक हथियारों का इस्तेमाल भी इसमें हुआ था। मूल मकसद मगध रेंज के माओवादी एरिया कमांडर अजय कानू और उनके साथियों को जेल से भगाना था।

संक्षिप्त डायरी

बीजेपी की स्टार प्रचारक की लिस्ट से पवन सिंह आउट

भोजपुर। बिहार में भारतीय जानता पार्टी ने लोकसभा चुनावम में उम्मीदवारों की लिस्ट के बाद चुनाव प्रचार के लिए भाजपा के 40 स्टार प्रचारकों की सूची जारी की है। भाजपा द्वारा मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार को स्टार प्रचारकों की सूची सलंग्न कर आवेदन दिया गया था, जिसे मंगलवार को भारत निर्वाचन आयोग ने स्वीकार कर लिया है। वहीं इस सूची में पहले नंबर पर पीएम मोदी का नाम है। दूसरे नंबर पर पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का नाम है। वहीं तीसरे पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और चौथे पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह शामिल हैं। इन स्टार प्रचारकों के साथ-साथ कई केंद्रीय मंत्रियों तो कुछ भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों को भी जगह मिली है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को भी भाजपा ने बिहार लोकसभा चुनाव में प्रचारक बनाया है। स्टार प्रचारकों की लिस्ट में भोजपुरी स्टार पवन सिंह का नाम नहीं है।वहीं भाजपा ने एक बार फिर से पवन सिंह को बिहार से आउट कर दिया है। बिहार के आरा से लोकसभा से चुनाव की बात करने वाले पवन सिंह को भाजपा ने बिहार में कहीं टिकट नहीं दिया था। उसके बाद अब पवन सिंह को स्टार प्रचारक के लिस्ट से भी बाहर कर दिया गया है। भाजपा द्वारा जारी किए गये 40 स्टार प्रचारक के लिस्ट से पवन सिंह को जगह नहीं दिया गया है। वहीं पूरी लिस्ट की बात करें तो नरेंद्र मोदी, जगत प्रकाश नडडा, योगी आदित्यनाथ, विनोद तावड़े, विजय कुमार सिन्हा, राजनाथ सिंह, अमित शाह, नितिन गड़करी, सम्राट चौधरी, गिरिराज सिंह, नित्यानंद राय, अश्विनी कुमार चैबे, दीपक प्रकाश, सुशील कुमार मोदी, नागेन्द्र नाथ त्रिपाठी, भीखूभाई दलसानिया, संजय जयसवाल, मंगल पांडे, रेनू देवी, डॉ. प्रेम कुमार, स्मृति ईरानी, मनोज तिवारी, सैयद शाहनवाज हुसैन, नीरज कुमार सिंह (बबलू), जनक, अवधेश नारायण सिंह, नवल किशोर यादव, कृष्ण नंदन पासवान, डॉ. मोहन यादव, मनन कुमार मिश्रा, सुरेंद्र मेहरा, शम्भू शरण पटेल, मिथिलेश तिवारी, राजेश वर्मा, धर्मशाला गुप्ता, कृष्ण कुमार ऋषि, अनिल शर्मा, प्रमोद कुमार चन्द्रवंशी, निवेदिता सिंह और निक्की हेम्ब्रोम शामिल है।

सगे भाइयों समेत तीन की पिटाई

भोजपुर। जिले के पवना थाना क्षेत्र के पवना गांव में मंगलवार को एक कमरे के के विवाद को लेकर पाटीदारों ने सगे भाइयों समेत तीनों की लाठी-डंडे से जमकर पिटाई कर दी। मारपीट की घटना में तीनों गंभीर रूप से जख्मी हो गए। इसके बाद आननझफानन में तीनों जख्मियों को पड़ोसियों की मदद से आरा सदर अस्पताल लाया गया। जख्मियों में पवना थाना क्षेत्र के पवना गांव निवासी स्वर्गीय शंभू सिंह के 30 वर्षीय पुत्र कमलेश सिंह उनका 26 वर्षीय भाई विमलेश कुमार और ब्रह्मदेव सिंह के 45 वर्षीय पुत्र संतोष सिंह शामिल है। इधर,संतोष सिंह ने बताया कि उनके पाटीदारों से कई सालों से विवाद चल रहा था। पिछले 60 सालों से मकान में एक कमरे का किराया ले रहे थे। फिर उसे तोड़कर नए सिरे से बनाया जा रहा था। इसी बात को लेकर उनके पाटीदारों ने कहा कि यह हिस्सा हम लोगों का है।जब हम लोगों ने इस बात का विरोध किया तो पाटीदार अपने पूरे परिवार के साथ मिलकर जानलेवा हमला करते हुए लाठीडंडे से जमकर पिटाई कर दी। इसके बाद अन्य लोगों की मदद से मामले को शांत कराया गया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जमीन विवाद को लेकर 6 लोगों की पिटाई

भोजपुर । के पवना थाना क्षेत्र के पवना गांव में मंगलवार की देर शाम गाली-गलौज के दौरान उपजे विवाद को लेकर रिश्तेदारों ने मां,पिता समेत आधा दर्जन लोगों की बेरहमी में से पिटाई कर दी। मारपीट की घटना में सभी बुरी तरह जख्मी हो गए। इसके बाद सभी जख्मियों को इलाज के लिए अगिआंव पीएचसी ले जाया गया, जहां से प्राथमिक उपचार के बाद आरा सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया । जख्मियों में पवना थाना क्षेत्र के पवना गांव निवासी स्वर्गीय धुना राउत के 67 वर्षीय पुत्र विद्या शंकर राउत, उनकी पत्नी तीतर देवी (60), दो बेटे पप्पू राउत(40),एवं पिंटू कुमार (19) उनकी बहू पप्पू रावत की 35 वर्षीय पत्नी अनीता देवी और साढू का बेटा नेहाल कुमार शामिल हैं। इधर जख्मी पप्पू राउत ने बताया कि उनके पिता की बहन के परिवार से जमीन को लेकर पूर्व से विवाद चल आ रहा था। करीब 20 साल पूर्व गांव में ही एक कट्ठा जमीन खरीदकर उसपर घर बनाकर रहते हैं। इसी बात को लेकर उनकी फुआ फूफा से मन मुटाव चल रहा था । बराबर गांव छुड़वाने की धमकी भी दिया करते थे।पप्पू ने बताया कि मंगलवार की देर शाम घर के आगे गाना बजाकर नाच रहे थे, तभी फुआ के परिवार वालों ने आकर गाली-गलौज शुरू कर दी।

सद्भाव और मिलन

विगत दो दशक से हर पांच साल बाद एक होली ऐसी आती है, जब तमाम रंगों में चुनावी रंग भी घुला रहता है। तमाम नेता और उनके समस्त कार्यकर्ता कुछ ज्यादा ही उत्साह से गली-गली में लोगों के साथ होली मनाने पहुंचते हैं। यह होली भी वैसी ही है, और यह पूरा फागुन और उसके बाद चैत भी चुनाव की फगुनाहट से सराबोर रहेगा। लगे हाथ रमजान का भी पाक महीना चल रहा है और ईद तक लगभग पूरे महीने जगह-जगह रोजा-इफ्तारी के साथ ही होली मिलन समारोह भी चलेंगे। कोई संदेह नहीं कि चुनावी वर्ष में होली मिलन के आयोजन कुछ ज्यादा ही बढ़ जाते हैं और यह उपयोगी भी है। मानो होली एक संदेश दे रही हो कि समाज की असली जीत परस्पर मिलन और सद्भाव से ही संभव है। होली वैसे भी तमाम द्वेष-विद्वेष को भुलाकर गले मिलने का त्योहार है, पर क्या हमने मिलन के महत्व को ठीक से समझ लिया है? बेशक, अनेक लोग हैं, जो अभी भी मिलन के महत्व को नहीं समझ सकें और एक-दूसरे की कमियों व होड़ में ही डूबे हुए हैं। कमियों में डूबने का नतीजा है कि परस्पर निंदा का सिलसिला भी समय के साथ तेज होता जा रहा है, जिसके दुखद नजारे सोशल मीडिया पर भी खूब देखे जाते हैं? आखिर ऐसा क्यों हो रहा है? हमारे समाज में मिलन का जो अभाव है, उसे सही संदर्भों में समझने की जरूरत है। इस अभाव की पृष्ठभूमि पर हमें जरूर गौर करना चाहिए। अनेक कारण होंगे, पर एक सबसे बड़ा कारण है असमानता। अभी हाल ही में भारतीय समाज में असमानता को दशार्ने वाली एक रिपोर्ट सामने आई है, जिसने बताया है कि देश में सबसे अमीर एक प्रतिशत लोगों के पास देश की 40 प्रतिशत संपत्ति है और देश के सबसे अभावग्रस्त 50 प्रतिशत लोगों के पास महज 6.4 प्रतिशत संपत्ति है। ज्यादा चिंता यह है कि असमानता लगभग पूरी दुनिया में बढ़ रही है। कोई संदेह नहीं कि भारत में ही गरीबी तेजी से घटी है, मोटे अनुमान के अनुसार, विगत दशक भर में 20 करोड़ से भी ज्यादा लोग गरीबी रेखा के ऊपर आए हैं। अगर नोटबंदी का असर नहीं होता और महामारी का कहर न झेलना पड़ता, तो शायद हमारे देश में असमानता की खाइयां बहुत हद तक भर गई होतीं। अभी जब हम होली मना रहे हैं, तब अर्थव्यवस्था में वापस से तेज आ गई है, पर साल 2019 वाली तेजी अभी भी पूरी तरह से हासिल नहीं हुई है। अतः इस होली पर हमें यह भी मनोकामना करनी चाहिए कि देश की अर्थव्यवस्था में तेजी से सुधार हो, ताकि भारतीय समाज में मिलन के स्वाभाविक अवसरों को विस्तार हो। मिलन का भाव और सद्भाव सुनिश्चित करने में सबकी भूमिका है, तो सभी को सोचना चाहिए। कैसे भुला दें कि कम से कम तीन बार होली महामारी से प्रभावित रही है और साल 2020 के बाद पहली बार हम होली निर्भय होकर मना रहे हैं, तो यह हम सबकी खुशनसीबी भी है। सामूहिक संघर्ष और त्याग से ही हमने कोरोना वायरस को पराजित किया है। सामूहिक संघर्ष का यही भाव समाज में निरंतर रहना चाहिए। एक-दूसरे की चिंता का क्रम बने रहना चाहिए, इसी से समाज में सुंदरता बढ़ती है।

जेल से सरकार

कथित शराब घोटाले में गिरफ्तार दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने स्थापित परंपरा से अलग जाते हुए जेल से सरकार चलाने का जो फैसला किया है, उसने एक नए विवाद और नए विमर्श को जन्म दिया है। विवाद इसलिए कि पूर्व में जब भी ऐसी परिस्थिति पैदा हुई, तो संबंधित मुख्यमंत्री ने हिरासत में लिए जाने से पहले अपना त्यागपत्र सौंप दिया। उन मुख्यमंत्रियों के इस्तीफे राजनीतिक शुचिता और सांविधानिक गरिमा की रक्षा के नैतिक दबाव से प्रेरित रहे। मगर, केजरीवाल के रुख ने विरोधियों को उन पर हमले का मौका मुहैया करा दिया है। उनका आरोप है कि मुख्यमंत्री पूछताछ के लिए ईडी की हिरासत में हैं, तो उनके पास लेखन सामग्री कहां से आई कि वह अपने मंत्रियों को निर्देश जारी कर रहे हैं? अब उन्होंने इस मामले की जांच कराने की मांग कर डाली है। जाहिर है, आम चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है, केजरीवाल और उनकी पार्टी के मौजूदा रुख के पीछे जहां दिल्ली व देश के मतदाताओं तक यह पैगाम पहुंचाना है कि सलाखों के पीछे भी आपके हितों के लिए मुख्यमंत्री सक्रिय हैं, तो वहीं भाजपा व एनडीए का पूरा प्रयास उनके इस कदम को अनैतिक ठहराने का है। राजनीतिक आरोपों-प्रत्यारोपों से परे इस प्रकरण ने देश और समाज के आगे विमर्श का एक गंभीर मुद्दा पेश किया है, क्योंकि संविधान इस संदर्भ में मौन है। संविधान यही कहता है कि मंत्रियों की एक परिषद होगी, जो शासन संबंधी फैसले लिया करेगी और मंत्रिपरिषद का मुखिया मुख्यमंत्री होगा। मंत्रिपरिषद की बैठक की सदारत के लिए मुख्यमंत्री की उपस्थिति की भी बाध्यता नहीं है, काबीना का वरिष्ठतम मंत्री यह दायित्व निभा सकता है। ऐसे में, सरकार के दैनंदिन कार्यों में फौरी तौर पर कोई खास व्यवधान नहीं आने वाला। फिर जेल मैनुअल भी विचाराधीन कैदियों को सप्ताह में एक दिन मुलाकात का मौका देता है और यह भी प्रावधान है कि सभी कैदी पंद्रह दिनों में एक बार अपने रिश्तेदारों, साथियों, कानूनी सलाहकारों को पत्र लिख सकते हैं। ऐसे में, यह सवाल स्वाभाविक है कि यदि यह मामला लंबा खिंचता है, तो क्या इस विधानसभा के शेष कार्यकाल में दिल्ली सरकार जेल से चलेगी? निस्संदेह, केंद्र अभी इस स्थिति को लेकर कोई नीतिगत फैसला नहीं कर सकता, क्योंकि आम चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है।

सामाजिक समरसता का उत्सव

ANALYSIS

गिरीश्वर मिश्र

थोड़ा विचार करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारा अनोखा उपहार, क्योंकि सारी तकनीकी प्रगति के बावजूद अभी तक जीवन का कोई विकल्प नहीं मिल सका है। यह अलग बात है कि प्रकृति या दूसरे आदमियों के साथ रिश्तों को लेकर कृतज्ञता का भाव अब दुर्लभ होता जा रहा है। फागुन के महीने की पूर्णिमा से यह उत्सव पूरे भारत में शुरू होता है और बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है । होली का सामुदायिक उत्सव हमें अपने समग्र अस्तित्व को जाग्रत करने वाला होता है। वह हमें हमारे व्यापक अस्तित्व की याद दिलाता है। आज इस तरह की बात आसानी से हमारे ध्यान-पटल पर नहीं उतरती। वहाँ जिन विचारों, अनुभवों और भावनाओं की आपाधापी है, जिनके बीच मारकाट मची हुई है, उनकी भीड़ में आज न प्रकृति को आँख भर निहारने की फुर्सत मिल रही है और न यह सच्चाई ही महसूस हो पा रही है कि हम मूलतः प्रकृति जीवी है। पर इस सच को नहीं झुठलाया जा सकता कि जीवन निरपेक्ष नहीं होता।

भारतीय पर्व और उत्सव अक्सर प्रकृति के जीवन क्रम से जुड़े होते हैं। ऋतुओं के आने-जाने के साथ ही वे भी उपस्थित होते रहते हैं। इसलिए भारत का लोकमानस उसके साथ विलक्षण संगति बिठाता चलता है जिसकी झलक गीत, नृत्य और संगीत की लोक-कलाओं और रीति-रिवाजों सबमें दिखती है। साझे की ज़िंदगी में आनंद की तलाश करने वाले समाज में ऐसा होना स्वाभाविक भी है। हमारा मूल स्वभाव तो यही सुझाता है कि हम प्रकृति में अवस्थित हैं और प्रकृति हममें स्पंदित है। थोड़ा विचार करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारा अनोखा उपहार, क्योंकि सारी तकनीकी प्रगति के बावजूद अभी तक जीवन का कोई विकल्प नहीं मिल सका है। यह अलग बात है कि प्रकृति या दूसरे आदमियों के साथ रिश्तों को लेकर कृतज्ञता का भाव अब दुर्लभ होता जा रहा है। फागुन के महीने की पूर्णिमा से यह उत्सव पूरे भारत में शुरू होता है और बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है । होली का सामुदायिक उत्सव हमें अपने समग्र अस्तित्व को जाग्रत करने वाला होता है। वह हमें हमारे व्यापक अस्तित्व की याद दिलाता है। आज इस तरह की बात आसानी से हमारे ध्यान-पटल पर नहीं उतरती। वहाँ जिन विचारों, अनुभवों और भावनाओं की आपाधापी है, जिनके बीच मारकाट मची हुई है, उनकी भीड़ में आज न प्रकृति को आँख भर निहारने की फुर्सत मिल रही है और न यह सच्चाई ही महसूस हो पा रही है कि हम मूलतः प्रकृति जीवी है। पर इस सच को नहीं झुठलाया जा सकता कि जीवन निरपेक्ष नहीं होता। प्रकृति है तो ही जीवन है। जल, पृथ्वी, आकाश, अग्नि और वायु जैसे तत्व जीवन के अनिवार्य प्राणदायी आधार-स्रोत हैं और आगे भी बने रहेंगे। प्रकृति माता है और हम सब पर प्रकृति का अकूत ऋण है। इस प्रकृति को चुनौती देती और उसे तबदील कर मानव निर्मित तकनीकी सबकुछ पर हावी हो रही है। नित्य बढ़ते तमाम दबावों के बीच डूबता-उतराता आज का आदमी अपने जीवन में तकनीकी के प्रवेश के साथ खुद अपनी प्रकृति या स्वभाव को बेगाना बनाता जा रहा है। उसका तकनीकजीवी बनता जा रहा मानस जीवन और प्रकृति के साथ अपने अटूट रिश्ते को भूलता-बिसराता जा रहा है। तकनीक के सहारे जीवन में तेजी, त्वरा और गति ने कुछ इस तरह प्रवेश किया है कि अब दिन-प्रतिदिन की जगह क्षण-प्रतिक्षण होने वाली उथल-पुथल का हिसाब रखने और उसको सँभालते रहने की उतावली बनी रहती है। अब पग-पग पर तकनीक की जरूरत पड़ रही है और तकनीक के बढ़ते दखल से बेचैनी भी बढ़ रही है। जीवन की दौड़ में विराम, विश्राम और सुकून अब सपने में भी दूभर होता जा रहा है। हाँ, यह जरूर हुआ है कि अब दुःख-सुख, प्रेम-मोहब्बत और मान-मनौवल जैसी भावनाओं का इजहार-इकरार सब कुछ मानवीय संवेदना से दूर तकनीक के सुपुर्द होता जा रहा है। जीवन की गाड़ी उसी के भरोसे चल रही है। तकनीकजीवी का जीवन आदमी का अपना जीवन नहीं होता है। वह टिका हुआ है सूचना के अनवरत प्रवाह पर। इसमें आगत से अधिक अनागत या ठीक से कहें तो जो आने वाला है या आ सकता है उसकी चिंता और भय वर्तमान को डंसे जा रहे हैं। इसलिए कुछ करने से अधिक जो हो रहा है उसकी पल-पल निगरानी और हिसाब-किताब करते रहने की जरूरत बढ़ती जा रही है। लोग लगातार ई-मेल या व्हाट्सएप देखने को बेताब रहते हैं और मोबाइल पर उनकी उंगली लगातार चलती रहती है। श्वास-प्रश्वास की तरह मोबाइल-संचालन हमारे जीवन का एक अहर्निश चलने वाला व्यापार होता जा रहा है। यह जरूर है कि इसमें एक किस्म की सृजनशीलता का भ्रम जरूर छिपा रहता है और लगता है कि हम कुछ कर रहे हैं। तकनीकी संलग्नता के बीच संवाद और संचार तो होता है पर इस उद्यम में अपनी सक्रियता देख-देख यह अहसास भी होने लगता है कि हम अपनी विशिष्टता और अद्वितीयता स्थापित कर रहे हैं। आधुनिक जीवन की यह विकट विडंबना है कि हम अपने अस्तित्व को सबसे विलग (डिस्टिंक्ट) हो कर प्रमाणित करने का अभ्यास करने में लगे रहते हैं। वैयक्तिकता और निजता व्यक्ति के विकास की दिशा निर्धारित कर रहे हैं। अपने आप को भिन्न दिखने-दिखाने की ख्वाहिश या कहें असमान लगने की कामना हमें निपट अकेला करती जाती है। पर अकेलेपन की ओर धकेली जाती ज़िंदगी ज्यादा संतुष्टि और सुख नहीं दे पाती है। आज हम देख रहे हैं कि समायोजन न बैठ पाने के कारण इन स्थितियों की परिणति अवसाद और दुश्चिंता आदि विभिन्न मनोरोगों के रूप में हो रही है। यही नहीं, विशिष्ट बनने के क्रम में दूसरों के साथ टकराव और प्रतिस्पर्धा भी अनिवार्य रूप से शुरू हो जाती है। प्रिय जनों और नातों-रिश्तों में आती दरारों से जुड़ी खबरें आए दिन अखबारों की सुर्खियाँ बन रही हैं। इनसे जुड़ी घटनाओं में क्रूरता, अत्याचार, अपराध और हिंसा प्रमुख होते जा रहे हैं। जाहिर है दुर्दमित आकांक्षाओं के साये में ज़िंदगी जीने का यह नक़्शा आधा-अधूरा है और अपेक्षित रूप से फलदायी नहीं सिद्ध हो रहा है। पर आनंद की खोज की सिर्फ. यही राह नहीं है। गौरतलब है कि मनुष्य समाज में पैदा होता है और उसी में पलता-बढ़ता भी है। सामाजिकता उसकी रगों में बसी रहती है और सामाजिक जीवन प्रकृति के समानांतर चलने को तत्पर रहता है। होली के दौरान उत्फुल्लता मन और वन दोनों में एक साथ निखर कर सामने आती है। वसंत का चरम उत्कर्ष तब होता है जब शीत काल की ठिठुरन बीतने के बाद परिवेश में ऊष्मा का संचार होता है। खिलखिलाते रंग-बिरंगे फूलों के गहनों से लदी सजी प्रकृति सबके स्वागत के लिए सजीव हो उठती है। तब खुद को जीवन-कार्य में जोड़ने की तैयारी का अवसर मिलता है। खेती-किसानी के लिए भी होली एक प्रस्थान विंदु जैसा होता है। के साथ कुछ दिन बाद चैत के महीने में वासंतिक नवरात्र के साथ भारतीय नव वर्ष शुरू होता है। नए की भावना द्वंद्वों और संघर्षों से उबरते हुए नए समारंभ करने की प्रेरणा वाली होती है। रंगों और प्रेम भाव से सुवासित समानता और समता की गारंटी देने वाला होली का उत्सव ऊँच-नीच हर किसी को शामिल होने के लिए आमंत्रित करता है। वह आवाज देता है कि अपने-अपने अहं का विसर्जन कर आगे आओ। होली के पहले रात को होलिका-दहन होता है जिसमें अपने सारे कल्मष जला कर नई शुरूआत करने का संकल्प लिया जाता है। यह वैर का दहन कर उल्लास का प्रसाद बाँटने का अवसर होता है। होली का अवसर राधा कृष्ण के स्मरण के साथ भी अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। अबीर, गुलाल, कुंकुम और रंग की पिचकारी से सराबोर ब्रज-क्षेत्र (मथुरा, वृंदावन, नंद गाँव, बरसाना और गोकुल) की होली दुनिया भर में प्रसिद्ध है। रंगों में भींगने भिंगाने के बाद होली के दिन रुचिकर व्यंजन भी बनते हैं और परिजनों के साथ खान-पान का आनंद लेते हैं। संगीत और काव्य की दृष्टि से होली का अवसर सर्जनशीलता को आमंत्रित करता रहा है। सभी सबको एक रंग में रंगने को आतुर रहते हैं। सब को एक सा बनाने का प्रयोजन सौहार्द और निकटता की भावना को जगाना होता है। इसका एक अभिप्राय यह भी है कि हम उस अविभक्त अव्यय भाव को महसूस करें जो अव्यक्त हो कर सबके अंतर्मन में व्याप्त रहता है। अपनी-अपनी अस्मिताओं को बचाने और बनाने का उत्सव तो सब करते हैं पर उसे छोड़ कर व्यापक समष्टि की अस्मिता अपनाने का साहस दिलाना होली का प्रयोजन है। अपनी अस्मिता को छोड़ या उसका विस्तार कर बड़ी अस्मिता को अंगीकार करना सामाजिक परिवर्तन की शक्ति होता है। समानताओं की पहचान भी जरूरी है। हम सिर्फ.एक दूसरे से भिन्न हैं यह कहना अधूरी बात होगी और असत्य भी क्योंकि हम सबमें व्यापक समानताएँ भी हैं। मनुष्य होने के लक्षण सबमें हैं और मनुष्यता भी इसीलिए जीवित है सभी किसी न किसी सीमा तक उस मनुष्यता से जुड़ रहे हैं। संकुचित और छुद्र अस्मिताओं से ऊपर उठ कर देश और समाज की व्यापक अस्मिता का अंग बनते हुए ही हम उन्नति के पथ पर आगे बढ़ सकते हैं।

लेखक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के पूर्व कुलपति हैं।

होली का इतिहास, परम्परा, हुल्लड़ और सावधानियां

बिहार में कुर्ता फाड़ होली भी खेली जाती है, जो विदेशों में भी काफी प्रसिद्ध है। लोग बताते हैं कि इस दिन के लिए खास तैयारी की जाती है। बाजार में स्पेशल कुर्ते बिकते हैं, जिनकी काफी डिमांड रहती है। यहां होलिका दहन की राख एक-दूसरे को लगाई जाती है, जिसे काफी शुभ माना जाता है। होली वाले दिन पहले गुलाल से सूखी होली खेली जाती है। इसके बाद पुरुष कुर्ता फाड़ होली खेलते हैं। वहीं मथुरा में लठ्ठमार होली तो उत्तराखंड में बैठकी होली की धूम है। इतिहास बताता है कि होली के त्योहार को मनाने की शुरूआत बिहार के पूर्णिया जिले से हुई थी। माना जाता है कि पूर्णिया जिले के बनमनखी प्रखंड के सिकलीगढ़ में आज भी वह स्थान है, जहां होलिका अपने भाई हिरण्यकशिपु के कहने पर भक्त प्रह्लाद को गोद में लेकर जलती चिता पर बैठ गई थी। दावा किया जाता है कि पूर्णिया में ही वह खंभा भी मौजूद है, जहां भगवान विष्णु नरसिंह अवतार में प्रकट हुए थे। इसके बाद उन्होंने हिरण्यकशिपु का वध किया था। सिकलीगढ़ में हिरण्यकशिपु का किला था। यहीं पर भक्त प्रह्लाद रहते थे। स्थानीय बुजुर्गों की मानें तो पूर्णिया में आज भी उस काल के टीले मौजूद हैं। इसी दिन भोलेनाथ ने कामदेव को उनकी तपस्या भंग करने के प्रयास में भस्म कर दिया था। लेकिन देवी रति की प्रार्थना पर उन्होंने कामदेव को क्षमादान देकर पुनर्जन्म दिया। साथ ही रति को यह वरदान दिया कि वह श्रीकृष्णा के पुत्र रूप में जन्म लेंगी। कामदेव के पुनर्जन्म और देवी रति को प्राप्त वरदान की खुशी में संपूर्ण विश्व में फूलों की वर्षा हुई। हर तरफ गुलाल उड़ाकर आंनदोत्सव मनाया गया। कहा जाता है कि यह तिथि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा थी। तब से ही इसे पर्व रूप में मनाया जाने लगा। रंगों और खुशियों का त्योहार होली अक्सर कई परिवारों के लिए बेरंगा और दुखदायी हो जाता है। वजह है खतरनाक रासायनिक रंगों का दुष्प्रभाव। रंग-बिरंगे त्योहार की खुशियाँ हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रही हैं। पुराने समय में होली और रंगों का संबंध सीधे प्रकृति से था, सादगी और समन्वय से था, आज इस त्योहार में अक्सर रंग में भंग होता देखा जा सकता है, वजहें अनेक हैं लेकिन रासायनिक घातक रंगों के दुष्प्रभावों के चलते सेहत की दुर्दशा तय है। बाजार से खरीदे रंग रसायनों से भरपूर हो सकते हैं। इन रंगों का दुष्प्रभाव हमारी सेहत पर इतना ज्यादा हो सकता है कि जिसकी कल्पना करना मुश्किल है। त्वचा पर एलर्जी से लेकर आंखों की रोशनी छिन जाने और कैंसर जैसे भयावह रोग होने तक के प्रमाण मिल चुके हैं। ऐसे में रंगों के त्योहार फगुआ को मनाना जी का जंजाल हो सकता है। रासायनिक रंग हमारे शरीर पर त्वचा रोग, एलर्जी पैदा करते हैं। दूसरी तरफ आँखों में खुजली, लालपन, अंधत्व के अलावा कई दर्दनाक परिणाम देते हैं। इन रंगों की धुलाई होने पर ये नालियों से बहते हुए बड़े नालों और नदियों तक प्रवेश कर जाते हैं और प्रदूषण के कारक बनते हैं। रसायनों से तैयार रंग जैसे काला, किडनी को प्रभावित करता है, हरा रंग आंखों में एलर्जी और कई बार नेत्रहीनता तक ले आता है, वहीं बैंगनी रासायनिक रंग अस्थमा और एलर्जी को जन्म देता है, सिल्वर रंग कैंसर कारक है तो लाल भी त्वचा पर कैंसर जैसे भयावह रोगों को जन्म देता है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि रासायनिक हानिकारक रंगों का इस्तेमाल हम सबकी सेहत के लिए बेहद घातक हो सकता है। होली बेशक मनायी जानी चाहिए लेकिन रंग प्राकृतिक हों और आपकी सेहत पर इनका दुष्प्रभाव ना हो तो रंग में भंग होने के बजाए असली होली का मजा लिया जा सकेगा। हमारे पाठक चाहे तो अपने ही घर में प्राकृतिक रंगों को बना सकते हैं। किचन में ही उपलब्ध अनेक वनस्पतियों का उपयोग कर कई तरह के प्राकृतिक रंगों को बनाया जा सकता है। हरे सूखे रंग को तैयार करने के लिए हिना या मेहंदी का सूखा चूर्ण लिया जाए और इतनी ही मात्रा में कोई भी आटा मिला लिया जाए। सूखी मेहंदी चेहरे पर अपना रंग नहीं छोड़ती और इसके क्षणिक हरे रंग को आसानी से धोकर साफ किया जा सकता है। गुलाबी रंग तैयार करने के लिए एक बीट रूट या चुकन्दर लीजिए, बारीक टुकड़े करके एक लीटर पानी में डालकर पूरी एक रात के लिए रख दीजिए और सुबह गुलाबी रंग तैयार हो जाएगा। गुड़हल के खूब सारे ताजे लाल फूलों को एकत्र कर लें और छांव में सुखा लें। बाद में इन्हें कुचलकर इनका पाउडर तैयार कर लें और इस तरह तैयार हो जाएगा सूखा लाल रंग। यह लाल रंग बालों के लिए जबरदस्त कंडीशनर होता है। साथ ही गुड़हल बालों के असमय पकने को रोकता है और बालों का रंग काला भी करता है। इसी तरह पीला सूखा रंग तैयार करने के लिए हल्दी एक चम्मच और बेसन (2 चम्मच) को मिलाकर सूखा पीला रंग तैयार किया जाता है, ये पीला रंग ना सिर्फ आपकी होली रंगनुमा करेगा बल्कि चेहरा और संपूर्ण शरीर कांतिमय बनाने में मदद भी करेगा क्योंकि त्वचा की सुरक्षा के लिए हल्दी और बेसन के गुणों से आप सभी चिर परिचित हैं। बेसन की उपलब्धता ना होने पर गेहूं, चावल या मक्के के आटा का उपयोग किया जा सकता है। पीला तरल रंग तैयार करने के लिए 4 चम्मच हल्दी को एक लीटर पानी में डालकर उबाल लिया जाए और इसमें लगभग 50-75 पीले गेंदे के फूल डालकर रात भर डुबोकर रखा जाए, अगली सुबह हर्बल पीला तरल रंग तैयार रहेगा। फिर खेलिए खूब होली इस पीले रंग से। पौधे से प्राप्त रंग स्वास्थ्य के लिए उत्तम होने के साथ-साथ पर्यावरण मित्र भी होते हैं, इसके उपयोग से त्वचा पर किसी भी तरह की एलर्जी, संक्रमण या रोग नहीं होते हैं और तो और ये सेहत की बेहतरी में मदद करते हैं। होली खेलते समय आंखों में रंग जाना आम बात है लेकिन ये उतना ही घातक भी हो सकता है। रंग कृत्रिम या रसायन आधारित होंगे तो लेने के देने भी पड़ सकते हैं।

Social Media Corner

सच के हक में...

गरबा जीवन, संस्कृति और भक्ति का उत्सव है। यह लोगों को एक साथ भी लाता है। यह जानकर खुशी हो रही है कि गरबा की वैश्विक लोकप्रियता बढ़ रही है! कुछ समय पहले गरबा को जगह मिली थी @यूनेस्को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची. मुझे खुशी है कि शिलालेख प्रमाणपत्र कुछ दिन पहले पेरिस में प्रस्तुत किया गया था। वहीं, पेरिस में एक यादगार गरबा नाइट का भी आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में भारतीय समुदाय के लोग शामिल हुए।

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 'एक्स' पर पोस्ट)

सहकार भारती और जनता सहकारी बैंक के संस्थापक और सामाजिक उत्थान के नायक माधवराव गोडबोले जी की जंयती पर उन्हें नमन। देश के सहकारी आंदोलन को बल देने में गोडबोले जी की अविस्मरणिय भूमिका थी। सहकारिता के उनके रचनात्मक विचार आज भी प्रासंगिक हैं, जिन्हें प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में सहकारिता मंत्रालय आगे बढ़ा रहा है।

(गृह मंत्री अमित शाह का 'एक्स' पर पोस्ट)

जल संकट पर नये सिरे से चर्चा हो

अब इसमें बहस की जगह तो बची नहीं कि देश में पानी का संकट लगातार बढ़ रहा है। बेंगलुरु, जिसे भारत का सिलिकॉन सिटी कहा जाता है, में ये सबसे बड़ी समस्या बन चुकी है और वहां ठीक वैसी ही स्थिति पैदा हो गयी है, जैसी कोपेनहेगन में थी, जहां पानी राशन में बिका था। असल में पानी, हवा और मिट्टी के प्रति हमने कभी समझ नहीं बनायी। लेकिन अब जब हालात बिगड़ने लगे हैं, तब हमारी बहस शुरू रही है। पानी हमारे लिए आवश्यक है, इसमें कोई सवाल नहीं है। जल बिन जीवन संभव नहीं है। प्रतिदिन दो से तीन लीटर पानी पीने का तो चाहिए ही। उसके अलावा 135 लीटर पानी की आवश्यकता हर व्यक्ति की है। पर 3.5 करोड़ से अधिक लोग आज इस देश में पानी के अभाव में जी रहे हैं और हमारी आवश्यकता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। करीब 812 करोड़ लीटर पानी का हम प्रतिदिन दोहन कर लेते हैं। ऐसे में सवाल यह भी पैदा होता है कि हमारी पानी की उपलब्धता क्या है। साल 1947 में जब भारत स्वतंत्र हुआ था, तो प्रति व्यक्ति 5,000 क्यूबिक मीटर पानी उपलब्ध था। साल 2021 से 2031 के बीच यह 1,486 से गिरकर 1,367 क्यूबिक मीटर हो जायेगा। इसका अर्थ यह है कि ऐसी कम उपलब्धता के साथ हम पानी के संकट में हैं। चिंताजनक यह भी है कि जितना कम पानी उपलब्ध होगा, उतना ही वह प्रदूषित भी होता चला जायेगा। हमें 4,000 अरब क्यूबिक मीटर पानी जो बारिश की कृपा से मिलता है, उसका हम मात्र 1,100 क्यूबिक मीटर ही उपयोग में ला पाते हैं। अपने देश में 70 फीसदी पानी उपयोग के लिए अयोग्य पाया गया है। यही कारण है कि बोतलबंद पानी का व्यापार लगातार बढ़ता जा रहा है। ध्यान रहे, एक लीटर पानी की बोतल के पीछे तीन लीटर पानी खराब होता है और बोतलें प्लास्टिक प्रदूषण भी पैदा कर रही हैं। जब इस्तेमाल किया गया भारी मात्रा में गंदा जल नदियों, जलाशयों या अन्य जल निकायों में जायेगा, तो कई बीमारियों को जन्म देगा। साल 2019 में करीब 23 लाख लोग असमय मौत के शिकार हुए थे। जब शहरों में 17 प्रतिशत की दर से आबादी बढ़ रही हो, तो उसी के अनुसार पानी की मांग भी बढ़ेगी और पानी प्रदूषित भी होगा। एक बेहतर आर्थिकी तभी संभव होती है, जब हमारी पारिस्थितिकी भी मजबूत हो। आज शायद कोई भी राज्य ऐसा नहीं है, जहां पानी का संकट किसी न किसी रूप में खड़ा ना हो। बिहार में पहले 1,200 से 1,500 मिलीमीटर बारिश होती थी, जो अब 800 मिलीमीटर रह गयी है। उसमें भी हम कितना पानी संरक्षित करते हैं, यह सवाल भी है। इसी राज्य में करीब 18 जिले ऐसे हैं, जो आर्सेनिक प्रदूषण की चपेट में हैं। यहां पानी की गंदगी के पीछे बहुत बड़ा कारण यहां की नालियां और घरेलू गंदा पानी हैं, जो सीधे नदियों और अन्य जल निकायों में जाकर मिलते हैं। बिहार में वन क्षेत्र भी कम है। यहां नदियां अवश्य हैं, लेकिन उनको सिंचित करने के लिए वन नहीं हैं। हरियाणा में मात्र 2.3 प्रतिशत वन है। यहां भूजल स्तर में कमी बड़ा संकट बन चुकी है। हमारे देश में मानसून पानी का सबसे बड़ा स्रोत है। इसका संचय करने की व्यवस्था को लेकर सवाल हैं। कैच द रेन, अमृतसरोवर जैसे कार्यक्रम इंगित करते हैं कि सरकार इस पर गंभीर हुई है। लेकिन राज्यों के स्तर पर समुचित सक्रियता नहीं है। यह तो तय है कि आने वाले समय में अगर हम सामूहिक रूप से नहीं जुटेंगे, तो संकट बहुत गहरा हो जायेगा। हमें ऐसी समृद्धि चाहिए, जिसमें विकास के अलावा हवा, पानी और मिट्टी भी हो क्योंकि जीवन सुविधाओं से अधिक आवश्यकताओं पर चलता है। पानी आवश्यकता ही नहीं, हमारे प्राणों से जुड़ा है। इसके लिए हम सबकी पहल जरूरी है, अन्यथा आने वाले समय में क्या देश और क्या दुनिया सभी को प्यासा ही गुजर करना होगा।

बंद हो यह जंग

गाजा पर इजराइल के हमला शुरू करने के साढ़े पांच महीने बाद, 25 मार्च को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) ने फौरन संघर्ष विराम और हमास द्वारा सभी बंधकों की रिहाई का आह्वान किया। इस बीच 32,000 फिलिस्तीनी मारे जा चुके हैं, अन्य 74,000 जख्मी हुए हैं, गाजा की 90 फीसदी से ज्यादा आबादी विस्थापित हो चुकी है और उनमें से लगभग सभी एक भयावह भुखमरी के संकट में धकेल दिये गये हैं। गाजा में फौरन संघर्ष विराम के लिए संयुक्त राष्ट्र में इससे पहले आये हर प्रस्ताव पर वीटो लगाने वाला अमेरिका इस बार मतदान से अलग रहा। यह इस युद्ध को लेकर बाइडेन प्रशासन की नीति में बदलाव का इशारा करता है। ब्रिटेन समेत यूएनएससी के सभी दूसरे सदस्यों ने, जिन्होंने हाल तक संघर्ष विराम का समर्थन करने के आह्वान का विरोध किया था, प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया। इजराइल ने गुस्से से भरी प्रतिक्रिया देते हुए प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के दो करीबी कैबिनेट सहयोगियों की वाशिंगटन की पूर्व-निर्धारित यात्रा रद्द कर दी और संघर्ष विराम के लिए बंधकों की रिहाई की शर्त नहीं लगाने वाले, चीन और रूस द्वारा समर्थित, प्रस्ताव की कड़ी आलोचना की। लेकिन इस गुस्से और भड़ास के पीछे इजराइल की कमजोरी छिपी है। इजराइली नेताओं ने हाल के सप्ताहों में बार-बार कहा कि रफा पर जल्द आक्रमण होने वाला है। इस सबसे दक्षिणी कस्बे में लगभग 14 लाख फिलिस्तीनी ठुंसे हुए हैं। यूएनएससी के 14 सदस्यों द्वारा फौरन संघर्ष विराम का आह्वान किये जाने के बाद, इजराइल के लिए रफा पर हमला करना कतई उचित नहीं होगा। यह हमला एक और खून-खराबे में बदल सकता है। ताजा युद्ध 7 अक्टूबर को हमास के सीमा-पार हमले के बाद भड़का जिसमें कम-से-कम 1200 इजराइली मारे गये थे। उस दिन दुनिया की हमदर्दी और एकजुटता इजराइल के साथ थी।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, 835222, Jharkhand And Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. R.N.I Number - JHABIL/2022/85899, Editor- Fahim Akhtar. Mob - 9431311669, E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

बीते एक साल में मकान बनाना हुआ 30 प्रतिशत मंहगा

नई दिल्ली ।

कोरोना काल समाप्त होने के बाद मकान बनाने से जुड़ी चीजों की कीमतें बढ़ने से यह महंगा हुआ था। अब रिपोर्ट आई है जिसमें बताया गया कि देश के शीर्ष 13 प्रॉपर्टी मार्केट में निर्माणाधीन आवासीय परियोजनाओं की कीमतें 30 फीसदी से भी ज्यादा बढ़ गई हैं। मकान की कीमतों में बढ़ोतरी मांग में वृद्धि के कारण हुई है। यह आंकड़ा इस साल जनवरी और मार्च के बीच का है।

रिपोर्ट के मुताबिक इस साल की पहली तिमाही मतलब जनवरी से मार्च के बीच मकान की कीमतें 30.6 फीसदी बढ़ी हैं। दरअसल कोरोना काल बीत जाने के बाद दफ्तर पूरी तरह से खुल चुके हैं। लोगों को जबरन अपने गांव-कस्बे छोड़ कर वापस शहर लौटना पड़ा है। अचानक मकान की डिमांड बढ़ने से किराया बढ़ गया। बढ़े किराये के बीच लोगों ने सोचा कि जितना किराया दे रहे हैं, उतना ही ईएमआई देकर मकान क्यों नहीं खरीद लिया जाए। इसकारण मकान की कीमतें अचानक चढ़ गई।

रिपोर्ट के मुताबिक इस साल पहली तिमाही के दौरान निर्माणाधीन संपत्तियों की मांग 7.8 प्रतिशत बढ़ी। इस वजह से इनकी कीमतों में 1.7त्न कर इजाफा हुआ। इस दौरान नोएडा और ग्रेटर नोएडा जैसे शहरों में क्रमशः 7.1 प्रतिशत और 6.1 प्रतिशत की तिमाही मूल्य वृद्धि देखी गई। जबकि बेंगलुरु और मुंबई में 5.7 प्रतिशत की मूल्य वृद्धि देखी गई।

खरीदार की पहली पसंद रेडी टू मूव मकान

रिपोर्ट के मुताबिक इस समय लोगों की पसंद अंडर कंस्ट्रक्शन हाउस नहीं बल्कि रेडी टू मूव हाउस है। इससे पहले लोग अंडर कंस्ट्रक्शन प्रोजेक्ट पर भी आसानी से भरोसा कर लेते थे। इस समय जबकि मकान खरीदना महंगा हो रहा है, तब छोट मकान यानी 3बीएचके फ्लैट की डिमांड ज्यादा है। पिछले साल अक्टूबर से दिसंबर की तिमाही के दौरान दो कमरों वाले फ्लैट की हिस्सेदारी 32 फीसदी थी। अब यह बढ़कर 42 फीसदी हो गई है। मतलब कि उनके दायरे में बढ़े फ्लैट नहीं रहे ,तब छोटे फ्लैट को ही खरीदना शुरू कर दिया।

देश भर में पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बदलाव हुआ

नई दिल्ली ।

घरेलू बाजार में पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बदलाव हुआ है। आज कुछ राज्यों में पेट्रोल-डीजल महंगा हुआ। महाराष्ट्र में पेट्रोल की कीमत में 24 पैसे की बढ़त रही जिसके बाद यहां पेट्रोल 104.37 रुपये प्रति लीटर मिल रहा है जबकि डीजल के दाम 23 पैसे बढ़े हैं और यह 90.89 रुपये प्रति लीटर हो गया है। वहीं, बिहार में पेट्रोल 19 पैसे बढ़कर 107.31 रुपये प्रति लीटर हो गया है जबकि डीजल 18 पैसे बढ़कर 94.02 रुपये प्रति लीटर पहुंच गया है। इसके अलावा आंध्रप्रदेश, असम, छत्तीसगढ़, गोवा, हरियाणा, हिमाचल, ओडिशा, पुडुचेरी, राजस्थान,तेलंगाना और यूपी में भी पेट्रोल-डीजल की कीमतों में मामूली बढ़ोतरी की गई है। वहीं, गुजरात, झारखंड, केरल, मध्यप्रदेश, मणिपुर, तामिलनाडु और त्रिपुरा में पेट्रोल-डीजल की कीमतें घटी हैं। प्रदेश के नोएडा में पेट्रोल 94.81 रुपये प्रति लीटर और डीजल 87.94 रुपये प्रति लीटर, गुरुग्रामम्पेट्रोल 95.18 रुपये प्रति लीटर और डीजल 88.03 रुपये प्रति लीटर पर हैं। बेंगलुरु में पेट्रोल 99.82 रुपये प्रति लीटर और डीजल 85.92 रुपये प्रति लीटर, चंडीगढ़म्पेट्रोल 94.22 रुपये प्रति लीटर और डीजल 82.38 रुपये प्रति लीटर। हैदराबादम्पेट्रोल 107.39 रुपये प्रति लीटर और डीजल 95.63 रुपये प्रति लीटर, जयपुरम् पेट्रोल 104.86 रुपये प्रति लीटर और डीजल 90.34 रुपये प्रति लीटर पर है। पटना में पेट्रोल 105.16 रुपये प्रति लीटर और डीजल 92.03 रुपये प्रति लीटर, लखनऊम् पेट्रोल 94.63 रुपये प्रति लीटर और डीजल 87.74 रुपये प्रति लीटर पर है। चारों महानगरों की बात करें तो दिल्ली में पेट्रोल की कीमत 94.76 रुपये और डीजल 87.66 रुपये प्रति लीटर है। मुंबई में पेट्रोल की कीमत 104.19 रुपये और डीजल 92.13 रुपये प्रति लीटर है। वहींकोलकाता में पेट्रोल की कीमत 103.93 रुपये और डीजल 90.74 रुपये प्रति लीटर है। वहीं. चेन्नई में पेट्रोल की कीमत 100.73 रुपये और डीजल 92.32 रुपये प्रति लीटर है।

डिफॉल्ट होने का खतरा मंडराने लगा दुनिया के ताकतवार मुल्क पर

वाशिंगटन ।

दुनिया की सबसे बड़ी इकॉनमी वाले देश अमेरिका पर डिफॉल्ट होने का खतरा मंडरा रहा है। देश की डेट-टु-जीडीपी रेश्यो 124 प्रतिशत पहुंच गया है। साल 1800 के बाद 52 देशों का डेट-टु-जीडीपी रेश्यो 130 प्रतिशत से अधिक हुआ है। इसमें 51 देश डिफॉल्टर हो गए थे। इसकारण अमेरिका में भी तेजी से बढ़ रहे कर्ज पर चिंता जाहिर की जा रही है। जानकारों का कहना है कि नियर टर्म में अमेरिका के डिफॉल्टर होने का खतरा नहीं है, लेकिन अगर इस स्थिति को नजरअंदाज किया गया तब इसके गंभीर दूरगामी परिणाम हो सकते हैं। देश का कर्ज 34 ट्रिलियन डॉलर से ऊपर पहुंच गया है। हालत यह हो गई है कि इस साल अमेरिका को एक ट्रिलियन डॉलर से ज्यादा ब्याज देना पड़ सकता है। अमेरिका का कर्ज पिछले 24 साल में छह गुना बढ़ गया है। साल 2000 में अमेरिका पर 5.7 ट्रिलियन डॉलर का कर्ज था जो अब 34 ट्रिलियन डॉलर से ऊपर पहुंच गया है। साल 2010 में यह 12.3 ट्रिलियन डॉलर और 2020 में 23.2 ट्रिलियन डॉलर था। यूएस कांग्रेस के बजट दस्तावेजों के मुताबिक अगले दशक तक देश का कर्ज 54 ट्रिलियन डॉलर पहुंचने का अनुमान है। पिछले तीन महीने में ही इसमें एक ट्रिलियन डॉलर से ज्यादा का इजाफा हुआ है और यह देश की जीडीपी का करीब 124 प्रतिशत है। पिछले तीन साल में ही देश का कर्ज 10 ट्रिलियन डॉलर से अधिक बढ़ चुका है। अमेरिका को रोज 1.8 अरब डॉलर ब्याज के भुगतान में खर्च करने पड़ रहे हैं। साफ है कि सरकार की कमाई कम हो रही है और खर्च बढ़ गया है। माना जा रहा है कि अगले कुछ साल में अमेरिका का डेट-टु-जीडीपी रेश्यो 200 प्रतिशत तक पहुंच सकता है। मतलब देश का कर्ज जीडीपी से दोगुना पहुंच जाएगा। अगर ऐसा हुआ, तब कर्ज चुकाते-चुकाते ही अमेरिका की इकॉनमी का दम निकल जाएगा। अमेरिका का कर्ज उस वक्त बढ़ रहा है जब देश की इकॉनमी अच्छी स्थिति में है और बेरोजगारी कम है। अगर दुनिया में सबसे ज्यादा डेट-टु-जीडीपी रेश्यो की बात करें तब इस मामले में जापान पहले नंबर पर है। वहां डेट-टु-जीडीपी रेश्यो 269 प्रतिशत है। यूरोपीय देश ग्रीस दूसरे नंबर पर है। इसका डेट-टु-जीडीपी रेश्यो 197 प्रतिशत है। इसके बाद सिंगापुर (165 प्रतिशत) और इटली (135 प्रतिशत) का नंबर है। पुर्तगाल, फ्रांस, स्पेन और बेल्जियम उन देशों में शामिल हैं जिनका डेट-टु-जीडीपी रेश्यो 100 प्रतिशत से अधिक है। यानी इन देशों का कर्ज उनके जीडीपी से अधिक है।

उत्पादन बढ़ने से जीरे की कीमतों में आई गिरावट

नई दिल्ली । पिछले साल जीरे की महंगाई से परेशान उपभोक्ताओं को साल 2024 में राहत मिल रही है। जीरे का उत्पादन बढ़ने से इसकी कीमतों में गिरावट आ रही है। इस महीने जीरे के भाव 10 फीसदी से ज्यादा गिर चुके हैं। बताया जा रहा हैं कि जीरे की कीमतों में आगे भी सुस्ती रह सकती है। पिछले साल जीरे के भाव रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच कर 65 हजार रुपये प्रति क्विंटल पार कर गए थे। इस माह जीरे के भाव में सुस्ती देखने को मिल रही है। बीते 15 दिन से जीरे के भाव लगातार गिर रहे हैं। कमोडिटी एक्सचेंज नेशनल कमोडिटी एंड डेरिवेटिव्स एक्सचेंज पर 11 मार्च को जीरे के अप्रैल अनुबंध ने 26,540 रुपये के भाव पर दिन का उच्च स्तर छुआ था। इसके बाद यह अनुबंध गिरकर आज 23,415 रुपये प्रति क्विंटल पर दिन के निचले स्तर पर पहुंच गया। इस तरह बीते 15 दिन में जीरे के वायदा भाव 10 फीसदी से ज्यादा घट चुके हैं। इस दौरान जीरा की अहम मंडी ऊंझा में जीरे के थोक भाव 26,500 रुपये से घटकर 24,500 रुपये प्रति क्विंटल रह गए हैं। इस साल जीरे के उत्पादन में काफी वृद्धि होने का अनुमान है। कारोबारी अनुमान के मुताबिक इस साल देश में 90 से 95 लाख बोरी जीरे का उत्पादन हो सकता है। पिछले साल 55 से 60 लाख बोरी (55 किलो)उत्पादन हुआ था। इस तरह इस साल जीरे के उत्पादन में 60 फीसदी से ज्यादा इजाफा हुआ है। कमोडिटी जानकारों के अनुसार जीरा सस्ता होने की वजह उत्पादन बढ़ने के कारण जीरे की आवक बढ़ना है। इस साल जीरे का उत्पादन काफी ज्यादा हुआ है और इस समय जीरे की आवक जोरों पर हैं। इसलिए आवक बढ़ने से जीरे के दाम गिर रहे हैंइस महीने 25 मार्च तक मंडियों में 68,513 टन जीरे की आवक हो चुकी है, जो पिछली समान अवधि में हुई 53,179 टन आवक से 28.83 फीसदी ज्यादा है। मुख्य उत्पादक राज्य गुजरात में आवक में करीब 30 फीसदी और राजस्थान में करीब 20 फीसदी इजाफा हुआ है।

शेयर बाजार बढ़त पर बंद

सेंसेक्स 536 अंक, निफ्टी 119 अंक ऊपर आया

मुम्बई ।

घरेलू शेयर बाजार बुधवार को बढ़त पर बंद हुआ। दुनिया भर से मिले-जुले संकेतों के बाद भी बाजार में ये उछाल रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचडीएफसी बैंक और मारुति जैसे शेयरों में तेजी से आया है। आज के कारोबार में व्यापक बाजारों में बीएसई मिडकैप इंडेक्स 0.1 फीसदी बढ़ा और बीएसई स्मॉलकैप इंडेक्स 0.7 फीसदी बढ़कर बंद हुआ। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों वाला बीएसई मानक सूचकांक सेंसेक्स 526.01 अंक करीब 0.73 फीसदी बढ़कर 72,996.31 अंक पर बंद हुआ। वहीं दूसरी ओर पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 118.95 अंक तकरीबन 0.54 फीसदी की बढ़कर दिन के अंत में 22,123.65 अंक पर बंद हुआ।

आज कारोबार के दौरान सेंसेक्स की कंपनियों में रिलायंस इंडस्ट्रीज में सबसे ज्यादा 3.50 फीसदी की बढ़त रही। इसी कारण सेंसेक्स में भी तेजी आई। इसके अलावा मारुति, बजाज फाइनेंस, टाइटन, कोटक महिंद्रा बैंक, एचडीएफसी बैंक, इंडसइंड बैंक, महिंद्रा एंड महिंद्रा और लार्सन एंड टुब्रो के शेयर भी लाभ में रहे। दूसरी ओर विप्रो, एचसीएल टेक्नोलॉजीज, नेस्ले, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज और टाटा मोटर्स के शेयर गिरे हैं।

वहीं एशिया के अन्य बाजारों की बात करें तो जापान का निक्की लाभ में जबकि दक्षिण कोरिया का कॉस्पी, चीन का शंघाई कम्पोजिट और हांगकांग का हैंगसेंग नीचे आया है। यूरोप के प्रमुख बाजारों में शुरुआती कारोबार में मिश्रित रुख रहा। अमेरिकी बाजार वॉल स्ट्रीट में भी गिरावट दर्ज की गयी। शेयर बाजार के आंकड़ों के अनुसार विदेशी संस्थागत निवेशक ने जमकर खरीददारी की। इन्होंने 10.13 करोड़ रुपये मूल्य के शेयर खरीदे। इससे पहले आज सुबह घरेलू शेयर बाजार बढ़त के साथ खुला। बाजार में ये उछाल दुनिया भर से मिश्रित संकेतों के बाद भी खरीददारी हावी रहने से आया है। आज सुबह तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 222 अंक ऊपर आकर 72,692 पर खुला और थोड़ी देर में ही यह 175 अंक उछलकर 72,650 के स्तर पर कारोबार करता दिखा। वहीं पचास

शेयरों वाला एनएसई निफ्टी भी 64 अंक ऊपर बढ़कर 22,069 के स्तर पर कारोबार करता दिखा। आज कारोबार करने के दौरान निजी क्षेत्र की दिग्गज कंपनी रिलायंस के शेयर एक फीसदी ऊपर आया। इसके अलावा मारुति, बजाज फाइनेंस, टाटा मोटर्स, एक्सिस बैंक और लार्सन एंड टुब्रो के शेयर भी उछले। वहीं दूसरी ओर डब्ल्यूप्रो, नेस्ले इंडिया और एचडीएफसी बैंक के शेयर नीचे आये हैं। शुरुआती कारोबार में व्यापक सूचकांकों में भी बढ़त दर्ज की गयी। बीएसई मिडकैप इंडेक्स 0.5 फीसदी जबकि स्मॉलकैप 0.7 फीसदी ऊपर आया।

पैसा कर लें जमा.....बंपर कमाई का मौका देने जा रहा टाटा ग्रुप

कई कंपनियों के आईपीओ लाने पर विचार

मुंबई ।

देश के सबसे बड़े औद्योगिक घराने टाटा ग्रुप कई कंपनियों के आईपीओ लाने पर विचार कर रहा है। इसमें टाटा कैपिटल, टाटा ऑटोकॉम्प सिस्टम्स और टाटा पैसेंजर इलेक्ट्रिक मोबिलिटी जैसी कई कंपनियां शामिल हैं। रतन टाटा का टाटा समूह पिछले दो दशकों में सिर्फ एक इनिशियल पब्लिक ऑफरिंग (आईपीओ) के बाद, अगले दो से तीन सालों में कई पब्लिक इश्यू लाने की तैयारी कर रहा है। मामले से जुड़े अधिकारियों के मुताबिक, टाटा कैपिटल, टाटा ऑटोकॉम्प सिस्टम्स, टाटा पैसेंजर इलेक्ट्रिक मोबिलिटी, बिगबास्केट, टाटा डिजिटल, टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स, टाटा हाउसिंग और टाटा बैटरी उन कंपनियों की लिस्ट में शामिल हैं, जिनके आईपीओ लाने पर विचार किया जा रहा है। टाटा ग्रुप डिजिटल, रिटेल, सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रिक वाहन बैटरी जैसे नए युग के सेक्टरों में आक्रामक रूप से आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा है। पिछले साल नवंबर में टाटा टेक्नोलॉजीज ने 3,000 करोड़ का पब्लिक इश्यू लांच किया था। यह साल 2004 में भारत की सबसे बड़ी सॉफ्टवेयर सेवा निर्यातक, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) के बाद ग्रुप की पहली पब्लिक पेशकश थी। टाटा टेक एक ऑफर-फॉर-सेल था, जिसके माध्यम से टाटा मोटर्स ने 2,314 करोड़ जुटाए थे। जबकि अल्फा टीसी होल्डिंग्स और टाटा कैपिटल ग्रोथ फंड ने क्रमशः 486 करोड़ और 243 करोड़ के शेयर बेचे। आईपीओ को 69 गुना अधिक सब्सक्राइब किया गया था। वहीं लिस्टिंग पर, शेयर ऑफर प्राइस से 165 फीसदी बढ़ गया था। इससे निवेशकों को अच्छा मुनाफा हुआ था। टाटा समूह ने 2022 की अंतिम तिमाही में 2027 तक उभरते उद्योगों में 90 बिलियन का निवेश करने की योजना की घोषणा की थी। इसमें मोबाइल कंपोनेंट्स, सेमीकंडक्टर, इलेक्ट्रिक वाहन, बैटरी, नवीकरणीय ऊर्जा और ईकॉमर्स शामिल हैं। टाटा संस की वित्त वर्ष 23 की वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया है कि ग्रुप ने पूंजी, विकास और बैलेंस शीट को कम करने की जरूरतों के आधार पर नए और मौजूदा व्यवसायों में निवेश किया है।

सोने में तेजी, चांदी की कीमतों में गिरावट

नई दिल्ली । घरेलू बाजार में सोने और चांदी की कीमतों में बदलाव हुआ है। सोने की कीमतों में तेजी आई है जबकि चांदी के दाम गिरे हैं। वहीं वायदा कीमतों में भी आज बढ़त रही। चांदी के वायदा भाव नीचे आये हैं। चांदी के वायदा भाव 74,450 रुपये के करीब कामकाज कर रहे थे। सोना 61,150 रुपये के करीब कारोबार कर रहा था। अंतरराष्ट्रीय बाजार में चांदी के वायदा भाव की शुरुआत गिरावट के साथ हुई। जबकि सोने के वायदा भाव में भी बढ़त रही। सोने के वायदा भाव आज तेजी के साथ खुले। वहीं मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्सा) पर सोने का बेंचमार्क अप्रैल अनुबंध आज 85 रुपये की बढ़त के साथ ही 66,198 रुपये पर खुला। सोने का वायदा भाव गत सप्ताह 66,943 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव के शीर्ष स्तर पर पहुंचा था। दूसरी ओर चांदी के वायदा भाव की शुरूआत भी आज गिरावट के साथ हुई। एमसीएक्सा पर चांदी का बेंचमार्क मई अनुबंध 31 रुपये टूटकर 74,487 रुपये के भाव पर खुला। इस समय ये इतने 74,493 रुपये के भाव पर दिन के उच्च और 74,400 रुपये प्रति किलो के भाव पर दिन के निचले स्तर पर था। गौरतलब है कि पिछले साल दिसंबर महीने में चांदी के वायदा भाव 78,549 रुपये किलो के भाव पर पहुंच गए थे। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने के वायदा भाव की आज शुरुआत तेज रही। कॉमेक्स पर सोना 2,200.50 डॉलर प्रति औंस के भाव पर खुला। इस पिछला बंद भाव 2,199.20 डॉलर था। कॉमेक्स पर चांदी के वायदा भाव 24.59 डॉलर के भाव पर खुले, पिछला बंद भाव 24.62 डॉलर था।

भारत मंडपम में 27-28 मार्च को खेती की तकनीकी चुनौतियों और डिजिटाइजेशन की पहल पर होगी चर्चा

नई दिल्ली।

नई दिल्ली के भारत मंडपम में 27 -28 मार्च को आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम में भारत में कृषि और उससे जुड़े क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ जानकार विचार-विमर्श करेंगे। कृषि क्षेत्र विस्तार को लेकर कई सालों से बातचीत हो रही है और बहस भी लंबे समय से वैचारिक सीमाओं में फंसी हुई हैं। इससे सामान्य हल ढूंढ़ना मुश्किल हो गया है। इस के चलते नई दिल्ली के भारत मंडपम दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है जिसमे भारत में कृषि और उससे जुड़े क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ जानकार अपने-अपने विचार व्यक्त करेंगे। वर्ष 2047 में विकसित भारत में कृषि की भूमिका पर पैनल 28 मार्च को चर्चा करेगा। इसमें देश के कृषि क्षेत्र और इसके भविष्य के प्रभाव की समीक्षा की जाएगी। नीति आयोग के सदस्य एवं कृषि अर्थशास्त्री रमेश चंद, कृषि अर्थशास्त्री अशोक गुलाटी, किसानों का प्रतिनिधित्व करने वाले भारत कृषक समाज के चेयरमैन अजय वीर जाखड़ इस नामचीन पैनल में शामिल होंगे।

यह पैनल न्यूनतम समर्थन मूल्य के कानूनी गारंटी की मांग, खेती के समक्ष बढ़ती जलवायु संबंधी चुनौतियों, कई फसलों की पैदावार में गिरावट व स्थिरता, सीमित संसाधनों के साथ देश की बढ़ती आबादी को भोजन मुहैया कराने की चुनौती, खेती की तकनीकी चुनौतियों और डिजिटाइजेशन की पहल पर चर्चा करेगा। बीते वर्षों में इस चुनौती का हल ढूंढ़ना कई अर्थशास्त्रियों व टिप्पणीकारों के लिए मुश्किल हो गया है। लोगों को खेती बाड़ी छोड़कर अन्य कौशल वाली नौकरियों में जाने के लिए प्रोत्साहित करना है और इसके लिए ग्रामीण गैर कृषि क्षेत्र में पर्याप्त निवेश करने की जरूरत है। इसके अलावा खेती को उत्पादक और फसल पैदा करने वालों के लिए लाभकारी बनाना है।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश की करीब 55 फीसदी जनसंख्या कृषि और उससे संबद्ध गतिविधियों में जुड़ी हुई है। इसलिए 2047 के विकसित भारत के रास्तों को खेतों से होकर गुजरना होगा। एक यह भी तथ्य है कि हाल के वर्षों में देश में खेती और उससे जुड़ी गतिविधियों की सालाना सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सेदारी कम हो गई है जबकि खेती पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी आबादी की निर्भरता इस अनुपात में कम नहीं हुई है।

भारत अगले पांच साल में कुछ और सुधार लागू कर नौ प्रतिशत की वृद्धि हासिल कर सकता हैः पनगढ़िया

नई दिल्ली:

सोलहवें वित्त आयोग के चेयरमैन अरविंद पनगढ़िया ने बुधवार को कहा कि भारत अगले पांच साल में कुछ और सुधारों को लागू करके वास्तविक रूप से अपनी आर्थिक वृद्धि को मौजूदा सात प्रतिशत से बढ़ाकर नौ प्रतिशत के करीब पहुंचा सकता है। पनगढ़िया ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत को कारोबार क्षेत्र के लिए अनुकूल स्थान बनाने को पिछले 10 साल में कड़ी मेहनत की है, इसलिए निवेश आ रहा है। एक सम्मेलन में उन्होंने कहा, आज अर्थव्यवस्था खुली है। अगले दो-तीन दशक में हम बहुत तेजी से वृद्धि कर सकते हैं। चालू वित्त वर्ष (2023-24) की तीसरी तिमाही में भारत की अर्थव्यवस्था उम्मीद से बेहतर 8.4 प्रतिशत की दर से बढ़ी - जो पिछले डेढ़ साल का सबसे ऊंचा आंकड़ा है। प्रमुख अर्थशास्त्री ने कहा, भारत वर्तमान में सात प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है। निश्चित रूप से अगले पांच साल में कुछ और सुधारों के साथ हम वास्तविक रूप से इसे नौ प्रतिशत के करीब पहुंचा सकते हैं ...और इसे कुछ दशक तक आसानी से कायम रखा जा सकता है।

भारतीय स्टार्टअप कंपनियों की फंडिंग में 20 फीसदी की गिरावट

- भारत पहली तिमाही में जुटाई फंडिंग के आधार पर विश्व में चौथे स्थान पर

नई दिल्ली।

क्रमिक आधार पर एक तिमाही पहले के 2 अरब डॉलर के मुकाबले फंडिंग में 20 फीसदी की गिरावट आई है। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि अमेरिका, चीन और ब्रिटेन के बाद भारत पहली तिमाही में जुटाई गई फंडिंग के आधार पर विश्व में चौथे स्थान पर रहा। वर्ष 2024 की पहली तिमाही में भारतीय स्टार्टअप कंपनियों के लिए फंडिंग एक साल पहले की समान अवधि की तुलना में 29 फीसदी कम होकर 1.6 अरब डॉलर रह गई। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि फंडिंग में मंदी और आर्थिक उतार-चढ़ाव के बाद भी भारत का प्रौद्योगिकी स्टार्टअप परिवेश अभी भी दुनिया भर में शीर्ष प्रदर्शन करने वाले प्रौद्योगिकी परिवेश में से एक है। भारत का मजबूत प्रौद्योगिकी परिवेश और जनसांख्यिकीय लाभ उज्ज्वल भविष्य का वादा करते हैं और वैश्विक तकनीक दिग्गज के रूप में स्थिति और मजबूत करते हैं।' पहली तिमाही में खुदरा, फिनटेक और एंटरप्राइज ऐप्लिकेशन क्षेत्र की कंपनियों ने सबसे ज्यादा रकम जुटाई। खुदरा क्षेत्र की कंपनियों ने 49.4 करोड़ डॉलर जुटाई, जो पिछली तिमाही की तुलना में 34 फीसदी कम है। एंटरप्राइज ऐप्लिकेशन क्षेत्र की कंपनियों को 44.8 करोड़ डॉलर मिले। यह पिछले तिमाही के 30.2 करोड़ डॉलर के मुकाबले 48 फीसदी अधिक हैं। फिनटेक को 42.9 करोड़ डॉलर मिले, जो पिछली तिमाही के 28.9 करोड़ डॉलर से 48 फीसदी ज्यादा है। पहली तिमाही में भारतीय कंपनियों ने 1.6 अरब डॉलर जुटाए हैं। शैडोफॉक्स और क्रेडिट सैसन ने सबसे ज्यादा रकम जुटाई है। दोनों कंपनियों ने मिलकर 10 करोड़ डॉलर से अधिक की रकम हासिल की है। कैपिलरी, रेंटोमोजो और कैप्टन फ्रेश अन्य ऐसी स्टार्टअप कंपनियां हैं जो फंडिंग हासिल करने में शीर्ष स्थान पर हैं। पहली तिमाही में दो नए यूनिकॉर्न बने हैं। जिन स्टार्टअप कंपनियों का मूल्यांकन 1 अरब डॉलर से अधिक होता है उन्हें यूनिकॉर्न कहा जाता है। पहली तिमाही में यूनिकॉर्न बनी कंपनियों में फिनटेक फर्म पेरिफियोज और आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (एआई) विशेषज्ञ कृत्रिम का नाम है।

अदाणी पोर्ट्स की गोपालपुर पोर्ट में 95 फीसदी हिस्सेदारी

ग्रुप देश के समुद्र तट पर अपनी मौजूदगी का और विस्तार करेगा

नई दिल्ली। जीपीएल अदाणी समूह के देशव्यापी बंदरगाह नेटवर्क में शामिल होगी। अदाणी पोर्ट्स ऐंड स्पेशल इकनॉमिक जोन ने 3,080 करोड़ रुपये के उद्यम मूल्य पर गोपालपुर पोर्ट में 95 फीसदी हिस्सेदारी हासिल की है। इससे अदाणी पोर्ट्स देश के समुद्र तट पर अपनी मौजूदगी का और विस्तार कर सकेगा। कंपनी ने बुधवार को यह ऐलान करते हुए कहा कि उसने 3,080 करोड़ रुपये के उद्यम मूल्य पर ओडिशा के गोपालपुर पोर्ट (जीपीएल) में 95 फीसदी हिस्सेदारी हासिल की है। कंपनी के मुख्य कार्य अधिकारी करण अदाणी ने कहा कि यह (गोपालपुर पोर्ट) हमें ओडिशा तथा पड़ोसी राज्यों के खनन केंद्रों तक हमारी उपलब्धता बढ़ेगा और हमें अपने आंतरिक इलाकों में लॉजिस्टिक मौजूदगी का विस्तार करने की अनुमति देगा। कंपनी ने कहा कि उम्मीद है कि वित्त वर्ष 24 में जीपीएल (गोपालपुर पोर्ट) तकरीबन 1.13 करोड़ टन कार्गो (सालाना आधार पर 52 प्रतिशत वृद्धि) का प्रबंधन करेगी और 520 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित करेगी तथा 232 करोड़ रुपये का एबिटा हासिल करेगी। कंपनी का मानना है कि गोपालपुर पोर्ट वित्त वर्ष 2025 में जोरदार बढ़ोतरी और मार्जिन विस्तार के लिए पूरी तरह तैयार है। एपीएसईजेड के अनुसार पूर्वी आंतरिक इलाकों में बड़े कच्चे इस्पात संयंत्रों की मौजूदगी से कोकिंग कोयला और चूना पत्थर के आयात को बढ़ावा मिलेगा, साथ ही गोपालपुर के भीतरी इलाकों में थर्मल तटीय कोयले की आवाजाही की संभावना बढ़ेगी है। अदाणी समूह की इस कंपनी के पास पहले से ही पूर्वी तट पर धामरा और गंगावरम जैसे महत्वपूर्ण बंदरगाह हैं। कंपनी शापूरजी पलोनजी (एसपी) समूह से 56 प्रतिशत हिस्सा तथा ओडिशा स्टीवडोर्स लिमिटेड से 39 प्रतिशत हिस्सा लेकर गोपालपुर बंदरगाह में हिस्सेदारी हासिल करेगी, जो इस अधिग्रहण के बाद भी संयुक्त उद्यम में भागीदार के रूप में बनी रहेगी। यह सौदा वित्त वर्ष 2025 की पहली तिमाही में पूरा होने की उम्मीद है।

रिलायंस पावर की दो सब्सिडियरी कंपनियों ने कर्ज का निपटारा किया

मुंबई । रिलायंस पावर लोन चुकाने को लेकर इनदिनों काफी सक्रिय दिख रही है। रिलायंस पावर की दो सब्सिडियरी कंपनियों ने ऑथम इवेंस्टमेंट की शाखा रिलायंस कमर्शियल फाइनेंस के साथ 1,023 करोड़ रुपए के कर्ज का निपटारा कर दिया है। कंपनी ने शेयर बाजार को दी जानकारी में बताया कि रिलायंस पावर लिमिटेड की दो सब्सिडियरी कंपनियों- कलाई पावर प्राइवेट लिमिटेड और रिलायंस क्लीनजेन लिमिटेड ने ऑथम इवेंस्टमेंट एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली सब्सिडियरी कंपनी रिलायंस कमर्शियल फाइनेंस लिमिटेड (आरसीएफएल) के साथ एक लोन निपटान और एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। कंपनी ने बताया कि रिलायंस कमर्शियल फाइनेंस के साथ लोन एग्रीमेंट (ऋण समझौता) रिलायंस पावर की तरफ से महाराष्ट्र में अपनी 45 मेगावाट की पवन ऊर्जा परियोजना को जेएसडब्ल्यू रिन्यूएबल एनर्जी को 132 करोड़ रुपए में बेचने की घोषणा के कुछ दिन बाद आया है। कलाई पावर प्राइवेट लिमिटेड ने दिसंबर 2023 में अरुणाचल प्रदेश में अपनी प्रस्तावित 1,200 मेगावाट की जल-विद्युत परियोजना के विकास अधिकार टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को 128 करोड़ रुपए में बेच दिए थे। रिलायंस पावर के अधिकारी के मुताबिक, इन संपत्तियों की बिक्री से जुटाए गए फंड का इस्तेमाल कर्ज चुकाने में किया गया। ऑथम इवेंस्टमेंट ने बैंकों के नेतृत्व वाली समाधान प्रक्रिया में 2022 में रिलायंस कैपिटल लिमिटेड से रिलायंस कमर्शियल फाइनेंस और रिलायंस होम फाइनेंस का अधिग्रहण किया था। रिलायंस पावर पिछले कुछ महीनों में सक्रिय रूप से डीबीएस बैंक, आईसीआईसीआई बैंक और एक्सिस बैंक सहित विभिन्न बैंकों के साथ ऋण निपटान समझौतों पर हस्ताक्षर कर रही है। खबर के मुताबिक, रिलायंस पावर का लक्ष्य 31 मार्च 2024 के आखिर तक एकल आधार पर एक ऋण-मुक्त कंपनी बनने का है। वित्त वर्ष 2023 के आखिर में कंपनी पर करीब 700 करोड़ रुपए का कर्ज बकाया था।

देख सकेंगे नेत्रहीन

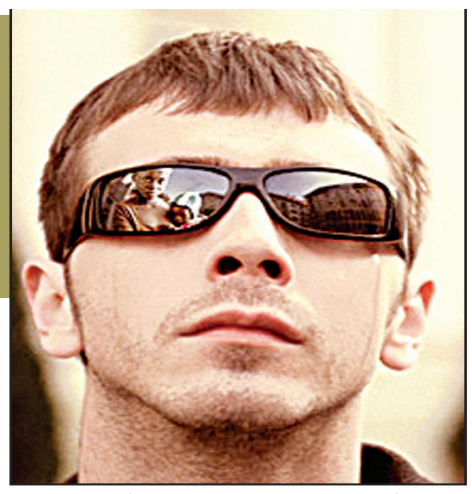

आक्सफाड यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने एक ऐसा इंजेक्शन विकसित करने का दावा किया है जिसके जरिये लाइट-सेंसिंग सेल्स इंजेक्ट करके आखों की रोशनी को दोबारा प्राप्त किया जा सकता है।

यदि सबकुछ सही चलता रहा तो दुनिया देखने की ख्वाहिश रखने वाले नेत्रहीनों के लिए यह नया इंजेक्शन किसी वरदान से कम नहीं साबित होगा। जी हा, यह इंजेक्शन उन्हें अब दुनिया देखने की शक्ति प्रदान करेगा। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने एक ऐसा इंजेक्शन विकसित करने का दावा किया है जिसके जरिये लाइट-सेंसिंग सेल्स इंजेक्ट करके आखों की रोशनी को दोबारा प्राप्त किया जा सकता है। शोधकर्ताओं का कहना है कि पूरी तरह दृष्टिहीन चूहे पर इसका प्रयोग सफल रहा है। अभी मनुष्यों पर इसे आजमाना बाकी है। मालूम हो कि रेटिनीटिस पिग्मेंटोसा के मरीजों में रेटिना की लाइट-सेंसिंग सेल्स धीरे-धीरे खत्म हो जाती हैं। अंत में व्यक्ति की आखों की रोशनी बिल्कुल चली जाती है और वह दृष्टिहीन हो जाता है। शोधकर्ताओं के अनुसार यह इंजेक्शन दो सप्ताह बाद अपना असर दिखाना शुरू कर देता है। इंजेक्शन देने के दो हफ्ते बाद से खत्म हो रही रेटिना की कोशिकाएं फिर से बननी शुरू हो जाती हैं। शोध से जुड़े प्रोफेसर रॉबर्ट मैकलैरेन के मुताबिक यह पहला मौका है जबकि पूरी तरह से नेत्रहीन चूहे पर इस तरह का प्रयोग किया गया है। इससे पूर्व आशिक दृष्टिहीन चूहों पर ही प्रयोग किए गए। यह अध्ययन प्रोसीडिंग ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंस जनरल में प्रकाशित किया गया।

एलोवेरा बनेगा किडनी का सुरक्षा कवच

वनस्पतियों में छिपे औषधीय गुणधर्म हजारों साल से जीवन को संजीवनी देते रहे हैं, लेकिन उनके अनुसंधान पर परिणामी काम नहीं हुआ। अंग्रेजी दवाओं की भेंट चढ़ती जिंदगी में फिर से जान फूंकने के लिए चिकित्सा जगत आयुर्वेद की शरण में खड़ा हैं। लाला लाजपत राय मेडिकल कॉलेज के फार्मोकोलोजी विभाग में गिलोय के बाद अब एलोवेरा पर चल रहे एक शोध में इसे किडनी रोगों पर अत्यंत लाभकारी पाया गया है।

चरक संहिता में भी एलोवेरा को औषधीय गुणों से लवरेज बताया गया है, किंतु वैज्ञानिक शोध पर आधारित पुष्टि की कमी रही। फार्मोकोलोजी विभाग की एमडी की छात्रा डॉ. शालिनी वीरानी ने चूहों पर किए गए एक शोध में पाया कि एलोवेरा के सेवन से एक माह में उनकी किडनी पूरी तरह ठीक हो गई।

इसके लिए चूहों को दो ग्रुप में बाटा गया। पहले ग्रुप में स्वस्थ चूहे, जबकि दूसरे में किडनी के रोगी चूहे रखे गए। स्वस्थ चूहों को लगातार एलोवेरा का डोज दिया गया, जिसके बाद उनमें किडनी रोग का संक्त्रमण नहीं लगा। जिन चूहों की किडनी फेल की गई थी, उन्हें एक माह तक एलोवेरा की खुराक ने पूरी तरह ठीक कर दिया। एलोवेरा की खुराक से चूहों के लीवर की क्षमता भी बढ़ी मिली।

महंगी डायलिसिस से मिलेगी निजात

किडनी रोगियों की संख्या बढ़ने से चिकित्सा के समक्ष एक कठिन चुनौती है। एलोपैथिक में किडनी रोगियों को डायलिसिस पर रखा जाता है, जो महंगा होने के साथ-साथ साइड इफेक्ट भी करता है। एलोवेरा से किडनी रोगों में चमत्कारिक सुधार के संकेत से अब विभाग ट्रायल का दूसरा चरण शुरू करेगा। बाद में इसके पेटेंट के लिए आवेदन किया जाएगा।

व्यायाम को बढ़ावा देता है प्रोटीन

नियमित व्यायाम करने का प्रयास तो कई लोग करते हैं लेकिन ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जो इस संकल्प पर टिकें। अब शोधकर्ताओंको ऐसे प्रोटीन के बारे में पता चला है कि जो न केवल व्यायाम को बढ़ावा देता है, बल्कि लोगों के काम करने के स्तर को बरकरार रखता है।

शोधकर्ताओं को व्यायाम के दौरान प्रमुख रोल अदा करने वाला प्रोटीन सीबी1 केनाबिनॉयड मिला है। व्यायाम करने के दौरान मजा नहीं आता। यही वजह है कि लोग इससे दूर भागते हैं। ऐसे में साफ होता है कि दिमाग का व्यायाम में अहम हिस्सा है।

मुख्य शोधकर्ता ने बताया कि दिमाग व्यायाम के लिए लोगों को मानसिक रूप से तैयार करता है। सीबी1 दिमाग को व्यायाम के लिए तैयार करता है। बायोलॉजिकल साइकिआट्री जर्नल में छपे लेख में कहा गया है कि जिन व्यक्तियों में यह प्रोटीन ज्यादा होता है, वे व्यायाम की उबाऊ प्रक्रिया के दौरान भी उत्साहित रहते हैं।

आध्यात्म से बढ़ जाता है मानसिक बीमारी का खतरा

आध्यात्मिक व्यक्तियों के मानसिक तौर पर बीमार होने की संभावना कहीं ज्यादा होती है। हालिया हुए एक अध्ययन के मुताबिक आध्यात्म व्यक्ति को मानसिक बीमारियों के प्रति ज्यादा संवेदनशील बना देता है। शोधकर्ताओं का कहना है कि खुद को धार्मिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक मानने वाले मानसिक तौर पर ज्यादा बीमार होते हैं। इसके साथ ही उनमें खाने-पीने में अनियमितता, चिंता, न्यूरोसिस और कई तरह के विकार घर कर जाते हैं। डेली मेल की रिपोर्ट के मुताबिक ऐसे लोग आम लोगों की तुलना में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी दवाइयों का प्रयोग भी कहीं अधिक करते हैं।

यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन के प्रोफेसर माइकल किंग के मुताबिक जो लोग जिंदगी को आध्यात्म के नजरिए से देखते हैं वे मानसिक तौर पर ज्यादा परेशान रहते हैं, अपेक्षाकृत उन लोगों के जो न तो धार्मिक होते हैं और न ही आध्यात्मिक। यह अध्ययन लंदन की करीब 7403 महिलाओं और पुरुषों से आध्यात्म और धर्म के संदर्भ में पूछे गए प्रश्नों पर आधारित है। पाया गया कि आध्यात्मिक लोगों में अन्य की तुलना में मानसिक बीमारिया होने की आशंका 50 फीसद अधिक होती है। ऐसे लोगों के दवाइयों के आदी हो जाने की आशंका 77 फीसद अधिक होती है। हालांकि शोधकर्ताओं का कहना है कि इस अध्ययन के संदर्भ में व्यापक परीक्षण करने की जरूरत है।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष — चू चे चो ला ली लू ले लो आ

अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा। बाहरी सहयोग की अपेक्षा रहेगी। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम वाला बन रहा है। शुभांक-1-5-7

वृष — इ उ ए ओ वा वी वू वे वो

आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। पद-प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। शुभांक-2-5-7

मिथुन — का की कू घ ड छ के को हा

कल का परिश्रम आज लाभ देगा। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। शुभांक-3-6-7

कर्क — ही हू हे हो डा डी डू डे डो

परिवार में किसी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अपनी गतिविधियों पर पुनर्विचार करें। वैचारिक द्वन्द्व और असंतोष बना रहेगा। किसी सूचना से पूर्ण निर्णय सम्भव। सुख आरोग्य प्रभावित होगा। शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शुभांक-4-3-6

सिंह — मा मी मू मे मो टा टी टू टे

व्यर्थ की भाग-दौड़ से बचा जाए तो अच्छा है। दुर्लभ स्वप्न साकार होंगे। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। शुभांक-4-6-9

कन्या — टो पा पी पू ष ण ठ पे पो

आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध होंगे। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। सुख-आनंद कारक समय है। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। शुभांक-3-5-6

तुला — रा री रु रे रो ता ती तू ते

आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। मध्याह्न से ही आशाएं बलवती होंगी। महत्त्वपूर्ण कार्यों को आज ही निबटा लें उसके बाद समय व्ययकारी सिद्ध होगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। कामकाज की अधिकता रहेगी। पारिवारिक विवाद टालें। शुभांक-2-6-7

वृश्चिक — तो ना नी नू ने नो य यी यू

व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी। रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। बातचीत में संयम बरतें। व्यावसायिक उपक्रम में उलटफेर की शुरूआत हो सकती है। शुभांक-1-5-7

धनु — ये यो भा भी भू धा फा ढा भे

खान-पान में विशेष सावधानी बरतें। मेहमानों का आगमन होगा। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। नैतिक दायरे में रहें। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। विद्यार्थियों को लाभ। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। वाहन चालन में सावधानी बरतें। बातचीत में संयम बरतें। आय के योग बनेंगें। शुभांक-2-4-5

मकर — भे जा जी खी खू खे खो गा गी

मन प्रसन्न बना रहेगा। अचल संपति की खरीद अथवा कृषि उद्यम में रुचि पैदा होगी। परिवार के साथ मनोरंजनिक स्थल की यात्रा होगी। आपसी प्रेम-भाव में बढ़ोतरी होगी। भविष्य की योजनाओं पर विचार विमर्श होगा। अपनों का सहयोग होगा। अपने आपको अधिक सक्रिय पायेगें। शुभांक-5-7-9

कुंभ — गू गे गो सा सी सू से सो दा

शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ भी होगा और पुराने मित्रों का समागम भी। व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताए भी बढ़ेगी। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूति मिलेगी। रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। शुभांक-3-6-9

मीन — दी दू थ झ ञ दे दो चा ची

आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। शुभांक-3-5-6

काकुरो पहेली - 3134

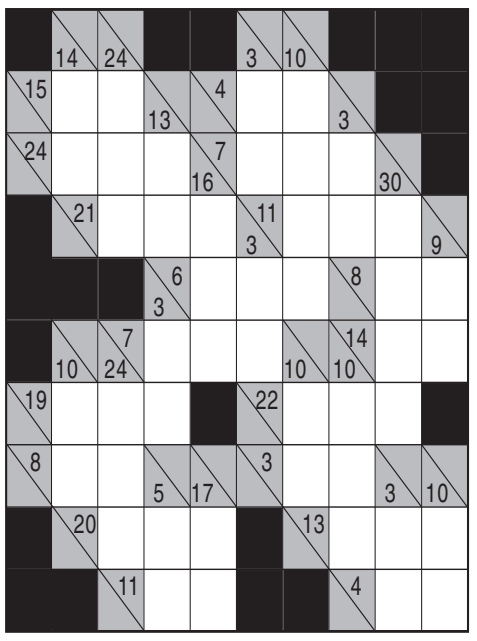

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए.किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणतः

काकुरो - 3133 का हल

			6	23		8	10	
	16 7	11 5	6		3 11	1	2	19 6
20	7	4	1	8	29 11	7	8	9	5
11	9	2	11 13	9	2	17	4 13	3	1
	6	1	5	28 8	9	8	4	7	
		3 19	2	1	16 17	9	7	9	
30 11	9	6	7	8	3 7	2	1	3
5	2	3	6	11 11	9	2	4 12	3	1
29	9	7	5	8	11	1	3	5	2
		4	1	3	13	4	9		

लॉफिंग ज़ोन

चिंकी (सोनू से)- तुम्हें पता है, मेरा भतीजा इतना खराब है कि दिन में कम से कम सात-आठ बार कपड़े बदल ही लेता है।

सोनू परेशान होकर- ऐसा क्यों? क्या उसे कपड़े बदलने की बीमारी हो है?

चिंकी- नहीं नहीं....! अरे पगली! अभी तो वह छः माह का ही है।

□ □ □

शादी की पच्चीसवीं सालगिरह पर पार्टी में आए मेहमानों ने जब नरेश से पूछा कि- बताओ नरेश! आपके हिसाब से सफल वैवाहिक जीवन का राज क्या है?

नरेश बोला- यह वैवाहिक जीवन तभी सफल साबित हो सकता है जब पत्नी बहरी और पति पूरी तरह अंधा बनकर जीवन बिताएँ।

□ □ □

पेशी के दौरान वकील महिला से बोला- जब तुम उस अपराधी से मिलने गई थी और उसने तुमसे जो कहा था, वो अदालत में जज साहब से कह दो।

महिला- नहीं...! मैं वो बात किसी भले आदमी के सामने नहीं कह सकती।

वकील बोला- तो ठीक है! जाकर जज साहब के कान में तो कह ही सकती हो।

□ □ □

फिल्म वर्ग पहेली- 3134

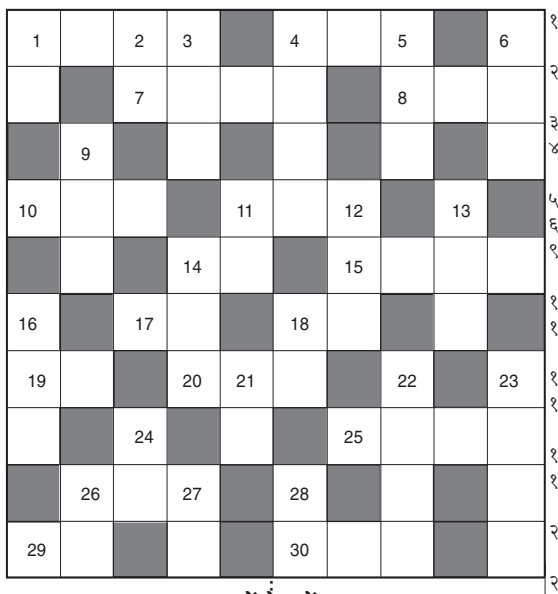

बायें से दायें:-

१. सैफअली खान, रानी मुखर्जी की 'सांसों को सांसों में ढलने दो' गीत वाली फिल्म-२,२
४. 'रंग भरे मौसम से रंग चुराके' गीत वाली जैकी श्रॉफ, जूही चावला की फिल्म-३
७. गोविंदा, मनीषा की 'ठहरो तो सही सोचो तो जरा' गीत वाली फिल्म-४
८. 'संडे की रात थी' गीत वाली गोविंदा, रवीना की फिल्म-३
१०. ऋषिकपूर, शाहरूख, दिव्या भारती की 'तेरी उम्मीद तेरा इंतजार' गीत वाली फिल्म-३
११. फिल्म 'मनोरंजन' में शम्मीकपूर के साथ नायिका कौन थी-३
१४. सलमान, सोमी की 'दिल मेरा यहां' गीत वाली फिल्म-२
१५. 'कब के बिछड़े हुए' गीत वाली अमिताभ, जीनत अमान की फिल्म-४
१७. अमजद खान, बिंदिया गोस्वामी की 'दिल के टुकड़े टुकड़े' गीत वाली फिल्म-२
१८. 'मेरे खयालों की मलिका' गीत वाली शाहरूख, चंद्रचूड़, ऐश्वर्या, प्रिया की फिल्म-२
१९. सुनील शेट्टी, रंभा की 'कहां गये ममता' गीत वाली फिल्म-२
२०. 'तुम भी चलो' गीत वाली अमिताभ, विनोद खन्ना, सायरा बानो की फिल्म-३
२५. अमिताभ, अरशद वारसी, करिश्मा, विजय शांति की फिल्म-४
२६. 'ये दपनियावाले' गीत वाली देवानंद, आशा पारेख की फिल्म-३
२९. धर्मेन्द्र हेमा की 'दुनिया जब' गीत वाली फिल्म-२
३०. अक्षयकुमार, सुनील शेट्टी, करिश्मा, सोनाली की फिल्म-३

ऊपर से नीचेः-

१. नसीरूद्दीनशाह, जैकीश्रॉफ, नगमा की फिल्म-२
२. करणनाथ, मनीषा नतान्यासिंह की 'क्यूं मेरा दिल' गीत वाली फिल्म-२
३. अमिताभ, वहीदा, जीनत की फिल्म-३
४. ऋषिकपूर, श्रीदेवी की 'बदली है ना बदलेगी' गीत वाली फिल्म-४
५. देवानंद, मधुबाला की फिल्म-३
६. 'बनाकेक्यूं बिगाड़ा रे' गीत वाली फिल्म-३
९. अमिताभ, संजयदत्त, अक्षयखन्ना, अमृता राव की फिल्म-३
११. 'यारा ओ यारा' गीत वाली फिल्म-२
१२. 'खाई है रे हमने' गीत वाली राजेंद्र, शर्मिला की फिल्म-३
१३. फिल्म 'सपने साजन के' की नायिका-३
१४. राजकपूर, दिलीपकुमार, नर्गिस की 'झूम झूम के नाचो आज' गीत वाली फिल्म-३
१६. 'हैलो हैलो बोल के' गीत वाली फिल्म-३
१८. सनी देओल, सुष्मिता सेन की 'मैं अपना नाम भूला' गीत वाली फिल्म-२
२१. 'मेरे तो गिरधर गोपाल' गीत वाली फिल्म-२
२२. मनोजकुमार, साधना की फिल्म-४
२३. 'जो उनकी तमन्ना है' गीत वाली फिल्म-४
२४. राजकपूर, नर्गिस की फिल्म-२
२६. 'सुना था देखा ना था' गीत वाली आफताब, उर्मिला की फिल्म-२
२७. अमिताभ, रितिक, प्रीति की फिल्म-२
२८. 'फूलों से जो खुशबू आए' गीत वाली फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली- 3133

दी	वा	ने		फू	ल	औ	र	कां	टे
वा		हा	सि	ल		जा		टे	
र	न		फ		शे	र	नी		धु
	सी		तु	म			य	ती	म
श	ब	न	म		स	पू	त		रू
त		गिं		जू		णिं		तू	
र		स	हे	ली		मा	ई	ल	व
ज	या		रा		ज		मा		र
	रा	ज	म	ह	ल		न		दा
ली	ना			म	वा	ली		डॉ	न

सूडोकु -3134

3				8				9
		8	6		9	5		
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
		6	4		5	8		
9				1				7

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -3133 का हल

8	2	4	3	9	7	5	1	6
3	5	6	1	4	2	7	8	9
1	9	7	6	5	8	2	3	4
9	6	2	5	8	3	1	4	7
5	3	1	4	7	9	8	6	2
4	7	8	2	1	6	9	5	3
2	8	3	9	6	1	4	7	5
6	1	5	7	2	4	3	9	8
7	4	9	8	3	5	6	2	1

शब्द पहेली - 3134

बाएँ से दाएँ

1. सेवक,दास-3
3. निवास करना-3
5. खुजली-2
6. परोपकारी-5
9. प्याला,जाम-2
11. टोंटी,नलका-2
12. आनंद,जूस-2
13. प्रतिज्ञा,शपथ-3
16. सिमरन,सुमरन-3
18. सुअर-3
20. पेन,लेखनी-3
22. कमल,जलज-3
23. क्रोध,गुस्सा-2
24. पाश,फंदा-2
25. शोषण करना-3
28. गौरव,प्रशंसा-3
30. सूत कातने का साधन-3
31. गौरव-3
33. देवर्षि-3
35. अंधकार-2
36. यमराज-2
38. अलमस्त-2
40. सलाह देने वाला-5
41. बीता दिन-2
42. रसदार-3
43. इंद्रियों को जीतने वाला-3

ऊपर से नीचे

1. उर्वरक-2
2. विशाल,श्रेष्ठ-3
3. धनवान,संपन्न-3
4. घ्राणेंद्रिय,इज्जत-2
5. दैत्य,असुर-3
7. मायाजाल-3
8. उद्धार,पार लगाना-3
10. शरण,आश्रय-3
14. चूर-चूर,ढहा-5
15. टोंटी,नलका-2
17. युद्ध,संग्राम-2
18. दूल्हा-2
19. राजपुत्र-5
21. मद्रास का समुद्र तट-3
22. नीले रंग का बहुमूल्य रत्न-3
26. मित्र,दोस्त,मीत-2
27. हूर,अप्सरा
29. मेहंदी-2
30. शीर्ष,पराकाष्ठा-3
31. इसमें पौधा लगाते हैं-3
32. पीहर,नैहर-3
34. युक्तिवाद,पैरवी-3
35. टब,परात,तगारी-3
37. इच्छा-3
39. परत,तह-2
41. कदर,सम्मान-2

शब्द पहेली -3133 का हल

क	म	ला	का	र			कु	रा	न
था	न		र		कै	ला	श		भ	ला
वा			खा	वि	द		ल			य
च	म	क	ना			त		क	स	क
क		या		क	ल	क	ल		ली	
	आ	स		ल		रा		शा	म	
	रा		क	र	ता	र		म		ख
श	म	न		ब			म	त	ल	ब
ह			म		दा	म	न			र
र	थ		ग	र	म		च		दा	दा
	ल	की	र			स	ली	के	दा	र

छत्तीसगढ़ : मुठभेड़ में छह नक्सली ढेर

जगदलपुर। छत्तीसगढ़ के बस्तर में आज सुबह पुलिस के साथ मुठभेड़ में छह नक्सली मारे गए, जिसमें चार पुरुष तथा दो महिलाएं शामिल हैं। घटनास्थल से पुलिस ने भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री बरामद की है। दक्षिण बस्तर रेंज के पुलिस उपमहानिरीक्षक कमलोचन कश्यप ने बताया कि पिछले दिनों बासागुड़ा क्षेत्र में तीन ग्रामीणों की हत्या किए जाने के बाद से पुलिस इन इलाकों में लगातार सर्चिंग कर रही थी। सूचना के आधार पर आज केंद्रीय सुरक्षा बल, कोबरा तथा जिला रिजर्व पुलिस जवानों का संयुक्त दल बासागुड़ा इलाके से निकला था। नक्सलियों के प्लाटून नंबर 10 के साथ लगभग डेढ़ घंटे तक मुठभेड़ हुई, जिसमें 6 नक्सली मारे गए। मारे गए नक्सलियों में एक कमांडर भी है। श्री कश्यप ने बताया कि घटना स्थल से 6 बंदूक, भारी मात्रा में विस्फोट सामग्री, वायरलेस सेट बरामद किया गया है। उन्होंने बताया कि बासागुड़ा क्षेत्र के चिकुरभट्टी के इलाके में तालपेरू नदी के किनारे मुठभेड़ हुई। इलाके में अभियान लगातार जारी है।

बिजनौर में भीषण सड़क हादसे में 4 की मौत, दवाई लेने ऋषिकेश जा रहे थे

बिजनौर। यूपी के बिजनौर में भीषण सड़क हादसा हो गया जिसमें कार सवार 4 परिजनों की मौत हो गई। कार सवार लोग अमरोहा से ऋषिकेश दवाई लेने जा रहे थे। तभी उनकी कार बिजनौर के पास अनियंत्रित होकर पलट गई। मरने वालों में एक सिपाही भी है जो रामपुर में तैनात था। प्राप्त जानकारी के मुताबिक ये सड़क हादसा आज सुबह देहरादून–नैनीताल नेशनल हाईवे पर गांव गुनियापुर के पास हुआ है। चालक को नींद आने के कारण कार पलटने की बात की जा रही है। फिलहाल पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मृतकों के परिजनों को सूचित कर दिया गया है। तड़के कार में सवार रामपुर में तैनात पुलिसकर्मी परविंदर सहित 4 लोग अमरोहा के सिकरेड़ा गांव से ऋषिकेश दवाई लेने जा रहे थे। इनकी कार जैसे ही नेशनल हाईवे 74 पर गांव गुनियापुर के पास पहुंची तो अचानक अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खाई में जा गिरी। घटना के बाद वहां चीख पुकार मच गई। पास से गुजर रहे लोगों ने किसी तरह चारों को कार से बाहर निकाला और पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर बचाव राहत कार्य शुरू किया लेकिन तब तक चारों की मौत हो चुकी थी। इसमें पुलिसकर्मी परविंदर की जेब से मिले आई कार्ड से उसकी पहचान हो पाई है। मृतकों के परिजनों को सूचना दे दी गई है और चारों की लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। मृतक के रिश्तेदार विवेक ने बताया कि मरने वालों में सिपाही परमिंदर, पिता और मामा शामिल हैं। वे दवाई लेने ऋषिकेश जा रहे थे। एक साथ 4 लोगों की मौत से परिवार में कोहराम मच गया है। इस मामले में सीओ निजीवाद देश दीपक सिंह ने फोन पर बताया कि चारों मृतक अमरोहा के सिकरेड़ा गांव के रहने वाले हैं जो आज सवेरे अमरोहा से ऋषिकेश दवाई लेने जा रहे थे। तभी अचानक बनियापुर के पास नेशनल हाईवे 74 पर कार नियंत्रित होकर पलट गई जिसमें चारों की मौत हो गई। पुलिस ने लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के भेज दिया है और परिजनों को सूचना दे दी है। मरने वालों में एक रामपुर में तैनात पुलिसकर्मी भी शामिल है। उसी के आईकार्ड से मृतकों की पहचान हो पाई है।

युवक रो–रोकर लड्डू गोपाल की मूर्ति का इलाज की गुहार कर रहा है नाबालिग!

शाहजहांपुर। शाहजहांपुर के गांव सुजानपुर के एक युवक ने एंबुलेंस को फोन कर लड्डू गोपाल को चोट लगने की सूचना दी। एंबुलेंस चालक ने मौके पर पहुंच कर युवक और लड्डू गोपाल को अस्पताल पहुंचाया। जहां युवक लड्डू गोपाल की मूर्ति का इलाज करने की गुहार कर रहा है। डॉक्टर समझाने में लगे थे लेकिन युवक इलाज की मांग कर रहा है। गांव सुजानपुर के रहने वाले रिंकू ने मंगलवार शाम को 06.40 पर 108 एंबुलेंस को फोन करके गोपाल को चोट लगने की सूचना दी। इसके बाद चालक रामेंद्र कुमार और ईएमटी कीरत यादव एंबुलेंस लेकर 9 किमी दूर गांव सुजानपुर पहुंचे। यहां रिंकू लड्डू गोपाल की मूर्ति लेकर एंबुलेंस में बैठ गया और 07.25 बजे खुटार सीएचसी पहुंच गया। अस्पताल में युवक ने डॉक्टर अंकित वर्मा को मूर्ति दिखाकर रोते हुए बताया कि इनका नाम गोपाल पुत्र वासुदेव है। इनकी उम्र 5 वर्ष है। शाम को वह इन्हें स्नान करा रहा था इस दौरान उनके हाथ से गिर गए और इन्हें चोट लग गई है। डॉक्टर ने लड्डू गोपाल के ठीक होने और घर ले जाने की बात कही लेकिन रिंकू ने डॉक्टर की बात नहीं मानी और जोर–जोर से रोने लगा। 16 वर्षीय नाबालिग युवक को रोता देख आसपास के लोगों की भीड़ लग गई। डेढ़ घंटा बीतने के बाद भी डॉक्टर युवक को समझाने का प्रयास कर रहे थे लेकिन युवक रो–रोकर इलाज की गुहार कर रहा था। रात नौ बजे तक युवक लड्डू गोपाल की मूर्ति गोद में रखकर रो रहा था और लोग उसे समझा रहे थे।

नेपाल की बॉर्डर से चीनी घुसपैठियों को सुरक्षा बलों ने पकड़ा

सिद्धार्थनगर। भारतीय सुरक्षा बलों ने उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर जिले की भारत नेपाल सीमा से दो चीनी घुसपैठियों को पकड़ा है ये दोनों नागरिक अवैध रूप से भारतीय सीमा में घुस आए थे। इनमें एक महिला और एक पुरुष शामिल है। फिलहाल, पुलिस ने एफआईआर दर्ज इन्हें कोर्ट के सामने पेश किया है। दरअसल, पूरा मामला 26 मार्च का है जब इंडो–नेपाल बॉर्डर के पास एसएसबी व मोहाना थाने की फोर्स संयुक्त रूप से पेट्रोलिंग कर रही थी। तभी बभनी चौराहे के पास अवैध रूप से भारत में प्रवेश करने के अपराध में एक पुरुष व एक महिला को गिरफ्तार किया गया। इनके पास से 2 चाइना के पासपोर्ट, 2 नेपाल के वीजा, 2 चाइना के सिम कार्ड व 2 नेपाल के सिम कार्ड, 1 एप्पल का फोन व 1 होनर का फोन व 9 विभिन्न कार्ड बरामद किए गए पकड़े गए अभियुक्त का नाम झोऊ पुलिन है जो चीन के सियाचीन का रहने वाला है, वहीं अभियुक्ता का नाम यूआन यूहान है जो कि हुंगजाउ की रहने वाली है। इन दोनों पर पुलिस ने भारत में अवैध रूप से प्रवेश करने के अपराध में केस दर्ज किया है। मोहाना थाने में धारा 14(ए) विदेशी अधिनियम–1946 के तहत मुकदमा दर्ज करके दोनों को न्यायालय के सामने पेश किया। मामले में सिद्धार्थनगर के एसपी ने बताया कि 26 मार्च को पुलिस व एसएसबी की संयुक्त टीम ने बभनी तिराहे से एक पुरुष व एक महिला को पकड़ा है। जिनसे पूछताछ की गई तो ज्ञात हुआ कि वह चीनी नागरिक हैं तथा बिना किसी वैध डॉक्यूमेंट के भारत में प्रवेश कर गए हैं।

पश्चिम बंगाल में नहीं थम रही हिंसा, फिर हुई खूनी झड़प में कई घायल

कोलकाता। लोकसभा चुनाव के चलते पश्चिम बंगाल में एक बार फिर हिंसा की आग भड़क उठी है। बीते सोमवार को दक्षिण 24 परगना और मुर्शिदाबाद जिलों से उपद्रव की खबरें आई थीं। इसके बाद से शुरू हुआ ये सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। अब सुंदरवन के एक द्वीप कुमिरमारी में भाजपा और टीएमसी के कार्यकर्ताओं के बीच खूनी झड़प होने की खबरें आ रहीं हैं। इसमें कई लोग घायल हुए हैं जिन्हे उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। भाजपा विधायक और राज्य विधानसभा में विपक्ष के नेता सुवेंदु अधिकारी ने राज्यपाल सीवी आनंद बोस के सामने यह मामला उठाया। अधिकारी ने कहा, फ्रप्रथम मिदनापुर में भाजपा बूथ अध्यक्ष के भाई शांतनु घराई की हत्या कर दी गई। दक्षिण 24 परगना के कैनिंग में टीएमसी समर्थित गुंडों के हमले में कम से कम 30 भाजपा कार्यकर्ता घायल हो गए। नादिया के शांतिपुर में एक टीएमसी नेता के बेटे ने एक नाबालिग लड़की के साथ बलात्कार किया। पीड़ित का परिवार भाजपा बूथ नेता है। उन्होंने कहा, पश्चिम बंगाल पुलिस के शीर्ष अधिकारियों द्वारा हमसे मिलने से इनकार करने के बाद हमने राज्यपाल से मुलाकात की। हमने राज्यपाल को बताया है कि राज्य में कानून–व्यवस्था कैसे खराब हो गयी है। हमने राज्यपाल से कैनिंग और पश्चिमी मिदनापुर का दौरा करने का अनुरोध किया है। इससे पहले जनवरी में दक्षिण 24 परगना के भांगर में दीवार पर भित्तिचित्र बनाने को लेकर टीएमसी और इंडियन सेक्युलर फ्रंट (आईएसएफ) कार्यकर्ताओं के बीच झड़प हो गई थी। इस घटना में कम से कम पांच लोग घायल हो गए थे। बारुईपुर पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर कहा, दो व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया है। हमें जो शिकायत मिली है उसके मुताबिक, झड़प की वजह जमीन विवाद को लेकर पुरानी दुश्मनी थी। शिकायत में इस बात का उल्लेख नहीं है कि यह एक राजनीतिक झड़प थी। हालांकि, स्थानीय लोगों ने कहा कि पार्टी के झंडे फहराने को लेकर टीएमसी और बीजेपी कार्यकर्ताओं के बीच झड़प हुई। टीएमसी जिला परिषद नेता अनिमेष मंडल ने कहा, भाजपा ने हमारे कार्यकर्ताओं पर बिना उकसावे के हमला किया। उन्होंने एक या दो राउंड फायरिंग भी की, हालांकि किसी को चोट नहीं आई। स्थानीय भाजपा नेता ने इसका जवाब दिया है। भाजपा के नेता बिकास सरदार ने कहा, हमारे कार्यकर्ता झंडे फहरा रहे थे जब टीएमसी कार्यकर्ताओं ने हम पर हमला किया। हमारे कार्यकर्ताओं पर गोलीबारी की। सौभाग्य से वे चूक गये।

अफस्पा भी हटाएंगे और जम्मू कश्मीर से सेना को भी वापस बुलाएंगे: अमित शाह

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा है कि जम्मू कश्मीर में तैनात सेना को वापस बुलाने पर विचार चल रहा है। यदि सबकुछ ठीक रहा तो सेना की वापसी होगी और अफस्पा भी हटा लिया जाएगा। एक टीवी चैनल को दिए इंटरव्यू में शाह ने कहा कि शाह ने यह भी कहा कि सरकार की योजना केंद्र शासित प्रदेश में सैनिकों को वापस बुलाने और कानून व्यवस्था को अकेले जम्मू-कश्मीर पुलिस पर छोड़ने की है। उन्होंने कहा, 'हमारी योजना सैनिकों को वापस बुलाने और कानून व्यवस्था को जम्मू-कश्मीर पुलिस के हवाले करने की है। पहले, जम्मू-कश्मीर पुलिस पर भरोसा नहीं किया जाता था, लेकिन आज वे अभियान का नेतृत्व कर रहे हैं। विवादास्पद अफस्पा पर गृह मंत्री ने कहा, 'हम अफस्पा हटाने के बारे में भी सोचेंगे।' गृह मंत्री का यह ऐलान जम्मू-कश्मीर के लिहाज से अहम है क्योंकि वह लगातार मांग होती रही है कि अफस्पा को हटाया जाए और आम शहरी एवं ग्रामीण इलाकों में सेना की तैनाती न रहे।

शाह ने दावा किया कि नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) के नेता फारूक अब्दुल्ला और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने आरक्षण के प्रावधानों को लेकर कटुता पैदा करने की पूरी कोशिश की लेकिन लोग अब उनके इरादों को समझ गए हैं। उन्होंने पूछा कि नेकां ने पिछले 75 वर्षों में इन लोगों को आरक्षण क्यों नहीं दिया। गृह मंत्री ने दावा किया कि जब आतंकवाद चरम पर था तो अब्दुल्ला इंग्लैंड चले गए थे। उन्होंने कहा, अब्दुल्ला और महबूबा दोनों को इस मुद्दे पर बोलने का कोई अधिकार नहीं है। शाह ने यह भी कहा कि बातचीत की प्रक्रिया में हुर्रियत कॉन्फ्रेंस का कोई स्थान नहीं है। इंटरव्यू के दौरान अमित शाह ने पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) को भारत का अभिन्न अंग बताया। उन्होंने जोर देकर यह भी कहा कि वहां रहने वाले मुस्लिम और हिंदू दोनों ही भारतीय हैं। जेके मीडिया ग्रुप को दिए एक इंटरव्यू में अमित शाह ने कहा, पीओके में रहने वाले मुस्लिम और हिंदू भाई भारतीय हैं। जिस जमीन पर पाकिस्तान ने अवैध कब्जा किया है, वह भारत की है। इसे वापस पाना हर भारतीय और हर कश्मीरी का लक्ष्य है। इसके अलावा, केंद्रीय गृह मंत्री ने जम्मू-कश्मीर के युवाओं से पाकिस्तान की साजिशों से दूर रहने का भी आग्रह किया।

70 प्रतिशत क्षेत्रों में अफस्पा हटा

अफस्पा अशांत क्षेत्रों में सक्रिय सशस्त्र बलों के कर्मियों को 'लोक व्यवस्था कायम' रखने के लिए आवश्यकता होने पर तलाशी लेने, गिरफ्तार करने और गोली चलाने की व्यापक शक्तियां देता है। शाह ने पहले कहा था कि पूर्वोत्तर राज्यों में 70 प्रतिशत क्षेत्रों में अफस्पा हटा दिया गया है, हालांकि यह जम्मू-कश्मीर में लागू है। जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर राज्यों के विभिन्न संगठनों और व्यक्तियों ने अफस्पा हटाने की मांग की है।शाह ने कहा कि सितंबर से पहले जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव होंगे। उन्होंने कहा, ''जम्मू-कश्मीर में लोकतंत्र को स्थापित करना प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का वादा है और इसे पूरा किया जाएगा। हालांकि, यह लोकतंत्र केवल तीन परिवारों तक सीमित नहीं रहेगा और लोगों का लोकतंत्र होगा।''

तीस लाख सरकारी पद भरेगी कांग्रेस : प्रियंका

नई दिल्ली। कांग्रेस की वरिष्ठ नेता प्रियंका गांधी वाड्रा ने दावा किया है कि यदि कांग्रेस आगामी लोकसभा चुनावों में सत्ता में आती है तो रिक्त सरकारी नौकरी के 30 लाख पदों को भरा जाएगा और परीक्षाओं में नकल रोकने के लिए सख्त कानून बनेगा। श्रीमती वाड्रा ने बुधवार को सोशल मीडिया पर जारी एक संदेश में कहा कि कांग्रेस सरकार रोजगार क्रांति के जरिये देश के युवाओं का हाथ मजबूत करेगी। युवा ही देश का भविष्य हैं। वे मजबूत होंगे तो देश मजबूत होगा। उन्होंने कहा कि देश के कुल श्रमबल में जितने बेरोजगार हैं, उनमें 83 प्रतिशत युवा हैं। कुल बेरोजगारों में शिक्षित युवाओं की हिस्सेदारी वर्ष 2000 में 35.2 प्रतिशत थी जो वर्ष 2022 में यह 65.7 प्रतिशत यानी लगभग दोगुनी हो गई है।उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के मुख्य आर्थिक सलाहकार कह रहे हैं कि सरकार बेरोजगारी की समस्या हल नहीं कर सकती। यही भारतीय जनता पार्टी सरकार की सच्चाई है। आज देश का हर युवा समझ चुका है कि भाजपा रोजगार नहीं दे सकती। कांग्रेस नेता ने कहा कि कांग्रेस पार्टी के पास युवाओं को रोजगार देने की ठोस योजना है। खाली पड़े 30 लाख सरकारी पद तत्काल भरे जाएंगे और हर स्नातक और डिप्लोमाधारक को एक लाख रुपये सालाना की अप्रेंटिसशिप दी जाएगी। पेपर लीक के खिलाफ नया सख्त कानून आएगा तथा गिग श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा की गारंटी मिलेगी। इसके अलावा स्टार्ट–अप के लिए 5000 करोड़ का राष्ट्रीय कोष बनाया जाएगा।

जेल में रहकर भी कुर्सी का मोह नहीं छोड़ पा रहे केजरीवाल: अनुराग ठाकुर

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण और युवा एवं खेल मामलों के मंत्री श्री अनुराग सिंह ठाकुर आज जम्मू कश्मीर प्रवास पर थे। अपने प्रवास के दौरान श्री अनुराग ठाकुर ने सर्वप्रथम उधमपुर में आयोजित बाइक रैली में भाग लिया और इसके बाद उधमपुर भाजपा कार्यालय में आयोजित सांगठनिक बैठक में शामिल हुए। शाम को श्री अनुराग ठाकुर आईआईएम जम्मू और होटल रेडिसन ब्लू में आयोजित विकसित भारत एंबेसडर कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

श्री अनुराग ठाकुर ने आरजेडी लीडर लालू प्रसाद यादव का उदाहरण देते हुए कहा कि जिस समय लालू यादव चारा घोटाले में फंसे हुए थे उस समय राबड़ी देवी जी उनकी तरफ से घोषणाएं करती थी, फिर धीरे-धीरे उन्होंने लालू यादव की गद्दी संभाल ली, अब अरविंद केजरीवाल के मामले में भी यही हो रहा है। जो अरविंद केजरीवाल नैतिकता की बात करते थे, जो कांग्रेस के भ्रष्टाचार के खिलाफ अनशन पर बैठते थे वही आम आदमी पार्टी आज भ्रष्टाचार के दलदल में बुरी तरह फंस गई है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि जेल में रहकर भी अरविन्द केजरीवाल सीएम की कुर्सी का मोह नहीं छोड़ रहे हैं, केजरीवाल ने भ्रष्टाचार के सारे रिकॉर्ड तोड़े हैं। श्री अनुराग ठाकुर ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर निशाना साधा और कहा कि एक महिला मुख्यमंत्री होने के बावजूद वह अपने ही राज्यों की महिलाओं को संरक्षण नहीं दे पाई बल्कि उन्होंने भ्रष्टाचारियों और बलात्कारियों को संरक्षण दिया है'। श्री अनुराग ठाकुर ने आगे कहा, 'अरविंद केजरीवाल कहते थे कि मैं भ्रष्टाचार के खिलाफ हूं, राजनीति में नहीं आऊंगा। ये वही अरविंद केजरीवाल हैं जो कांग्रेस के खिलाफ धरने पर बैठते थे। आज अरविंद केजरीवाल और उनकी आम आदमी पार्टी भ्रष्टाचार के दलदल में नीचे तक धसी हुई है। इनका उपमुख्यमंत्री, शिक्षा मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री, सांसद और पार्षद तक जेल में है। और अब शराब घोटाले के किंगपिन, मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल स्वयं जेल में हैं। इनकी अराजकता और भ्रष्टाचार ने उन्हें आज जेल में डाला है'।

आगे कांग्रेस पर निशाना चाहते हुए श्री अनुराग ठाकुर ने कहा, 'आज सवाल कांग्रेस से भी है कि क्या उन्होंने अपना ज़मीर बेच दिया है? अरविंद केजरीवाल पहले सोनिया गांधी को गिरफ्तार कर दो दिन तक पूछताछ करने की मांग करते थे। ऐसी कौन सी मजबूरी है कि कांग्रेस का आम आदमी पार्टी के भ्रष्टाचार के साथ खड़ा होना जरूरी है? कल तक शराब घोटाले के आंकड़े प्रस्तुत कर मुकदमा करने की बात करने वाले कांग्रेसी नेता आज कहां हैं? आज यह उसके पक्ष में रैली करने की बात कर रहे हैं जिसने भ्रष्टाचार के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। क्या कांग्रेस अरविंद केजरीवाल को निर्दोष मानती है? मोदी जी ने सदैव कहा है ना खाऊंगा, ना खाने दूंगा जांच। जांच एजेंसियों के जांच के बाद इन बेईमानों का दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा।'

पूर्व सीएम ने निकाला ईवीएम का तोड़, बैलेट पेपर से चुनाव कराने सभी कार्यकर्ता करें नामांकन

–कांग्रेस की जीत सुनिश्चित कराने छग के पूर्व सीएम बघेल ने दिया मंत्र

–एक सीट पर हुए 375 प्रत्याशी तो, ईवीएम की जगह लेगा बैलेट पेपर

दुर्ग (एजेंसी)। ऐसा लगता है कि छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने ईवीएम का हल तलाश लिया है। यही वजह है कि वो पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं से लोकसभा चुनाव के लिए नामांकन दाखिल करने के लिए कह रहे हैं। उनका कहना है कि 375 से अधिक प्रत्याशी यदि एक लोकसभा सीट से हो जाते हैं तो फिर ईवीएम की जगह बैलेट पेपर से चुनाव होंगे और तब कांग्रेस की जीत निश्चित ही होगी।

यहां बतलाते चलें कि छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम भूपेश बघेल पाटन विधानसभा के आमालोरी गांव में मंगलवार को कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। इस कार्यक्रम में राजनांदगांव से लोकसभा प्रत्याशी भूपेश बघेल भी मौजूद थे। यहां पर ईवीएम पर सवाल उठाते हुए पूर्व सीएम बघेल ने कहा कि इस बार लोकसभा चुनाव ईवीएम से नहीं होने देना चाहिए। दरअसल बैलेट पेपर से यदि चुनाव होते हैं तो भाजपा की असलियत सभी के सामने आ जाएगी। इस दौरान पूर्व सीएम बघेल ने कार्यकर्ताओं को लोकसभा चुनाव के नियम भी बतलाए। इसी बीच उन्होंने कहा कि यदि किसी सीट पर नाम वापसी के बाद 375 उम्मीदवार चुनाव मैदान में रह जाते हैं तो इस स्थिति में निर्वाचन आयोग को वहां बैलेट पेपर से चुनाव कराना होगा। इसलिए आप सभी लोग चुनाव के लिए फार्म भरें। प्रत्येक लोकसभा सीट पर 375 से अधिक प्रत्याशी नाम वापसी के बाद रहने चाहिए, तभी बैलेट पेपर से चुनाव होंगे और तभी कांग्रेस की जीत भी सुनिश्चित हो सकेगी। इसके लिए कार्यक्रम के दौरान पूर्व सीएम बघेल ने समस्त कार्यकर्ताओं को संकल्प दिलाया कि वो सभी लोकसभा सीटों में 375 से अधिक उम्मीदवार खड़े करने की कोशिश करेंगे। ऐसा करने से ईवीएम की सच्चाई भी अपने आप सामने आ जाएगी। उन्होंने दावा किया कि यदि ऐसा संभव हुआ तो निश्चित ही कांग्रेस सभी जगहों पर जीत दर्ज करेगी।

कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित कर रहे पूर्व सीएम बघेल ने कहा कि हम पर व्यंग्य कसा जाता है और कहा जाता है कि जब चुनाव हार जाते हैं, तो ईवीएम पर सवाल उठाते हैं। जबकि सत्यता यह है कि कांग्रेस ने शुरू से ही स्टैंड ले रखा है कि चुनाव बैलेट से होना चाहिए, क्योंकि ईवीएम को हैक किया जा सकता है।

मायावती का नया दांव– मुस्लिमों को टिकट देकर बिगड़ सकता है बना बनाया खेल

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी यानी बसपा सुप्रीमो मायावती के सियासी पैंतरे समझ पाना आसान नहीं होता है। उन्होंने ने हाल ही में एक बड़ा दांव चला है। इस दांव से कई विरोधियों का बना बनाया खेल बिगड़ सकता है। मायावती ने हाल ही में लोकसभा चुनाव के लिए 16 उम्मीदवारों की एक सूची जारी की है। इसमें 7 उम्मीदवार मुस्लिम हैं। इतनी ज्यादा संख्या में मुस्लिम प्रत्याशियों पर दांव लगाना कई दलों के लिए चुनौती खड़ी कर सकता है। मतलब साफ है कि बसपा के इस फैसले से सपा–कांग्रेस गठबंधन को बसपा कड़ी चुनौती देने जा रही है। सात सीटों पर मुस्लिम वोटों का बंटवारा होने से त्रिकोणीय मुकाबला होने के आसार हैं। राजनीतिक जानकार बताते हैं कि मुस्लिमों को तरजीह देकर इंडिया गठबंधन के लिए मुश्किल खड़ी कर दी है। हालांकि पार्टी की पहली सूची में कोई महिला उम्मीदवार नहीं है। तीन सुरक्षित सीटों पर भी पार्टी ने अपने प्रत्याशी घोषित किए हैं। बसपा की इस रणनीति से इंडिया गठबंधन को नुकसान उठाना पड़ सकता है। विधानसभा चुनाव में भी बसपा की रणनीति कुछ ऐसी ही थी। पार्टी भले ही एक सीट पर सिमट गई, लेकिन कई सीटों पर सपा की हार के अंतर से अधिक वोट उसके उम्मीदवारों को मिले थे।

सीएए के खिलाफ विरोध जारी रहना चाहिए : गायक जुबीन गर्ग

गुवाहाटी (एजेंसी)। लोकप्रिय गायक जुबीन गर्ग ने कहा कि असम के लोग नागरिकता (संशोधन) अधिनियम (सीएए) को कभी स्वीकार नहीं करेंगे और बिना हिंसा के इसके खिलाफ विरोध प्रदर्शन जारी रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि वह विभिन्न मंचों पर सीएए के खिलाफ विरोध जारी रखेंगे। उन्होंने इस अधिनियम को रद्द करने की खातिर कानूनी लड़ाई जीतने के लिए ठोस कदम उठाने का भी आह्वान किया। सोशल मीडिया मंच 'फेसबुक'' पर अपने पोस्ट में गर्ग ने कहा कि 2017 में जब यह विधेयक आया था वह तभी से इसका विरोध कर रहे हैं और वह अपने रुख पर कायम हैं। उन्होंने कहा कि सीएए के खिलाफ विरोध प्रदर्शन जरूरी है, लेकिन इसके कई तरीके हैं। गर्ग ने कहा कि इस तरह के कई आंदोलनों में लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी है, चाहे वह असम आंदोलन हो या 2019 का सीएए विरोधी प्रदर्शन। सीएए विरोधी प्रदर्शन के दौरान पांच युवाओं की जान चली गई थी। उन्होंने कहा कि ऐसे में अब विरोध प्रदर्शन के कारण एक भी जान नहीं जानी चाहिए। राज्य में युवाओं के बीच लोकप्रिय गर्ग ने कहा, 'मैं अपने तरीके से सीएए के खिलाफ विरोध प्रदर्शन जारी रखूंगा। मंच पर या सोशल मीडिया पर जहां भी, जैसे भी संभव हो सके।' उन्होंने दावा किया कि सरकार सीएए को 'थोपने' की कोशिश कर रही है, लेकिन राज्य के लोग इसे कभी स्वीकार नहीं करेंगे।

जेल में रहकर भी कुर्सी का मोह नहीं छोड़ पा रहे केजरीवाल: अनुराग ठाकुर

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण और युवा एवं खेल मामलों के मंत्री श्री अनुराग सिंह ठाकुर आज जम्मू कश्मीर प्रवास पर थे। अपने प्रवास के दौरान श्री अनुराग ठाकुर ने सर्वप्रथम उधमपुर में आयोजित बाइक रैली में भाग लिया और इसके बाद उधमपुर भाजपा कार्यालय में आयोजित सांगठनिक बैठक में शामिल हुए। शाम को श्री अनुराग ठाकुर आईआईएम जम्मू और होटल रेडिसन ब्लू में आयोजित विकसित भारत एंबेसडर कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

श्री अनुराग ठाकुर ने आरजेडी लीडर लालू प्रसाद यादव का उदाहरण देते हुए कहा कि जिस समय लालू यादव चारा घोटाले में फंसे हुए थे उस समय राबड़ी देवी जी उनकी तरफ से घोषणाएं करती थी, फिर धीरे-धीरे उन्होंने लालू यादव की गद्दी संभाल ली, अब अरविंद केजरीवाल के मामले में भी यही हो रहा है। जो अरविंद केजरीवाल नैतिकता की बात करते थे, जो कांग्रेस के भ्रष्टाचार के खिलाफ अनशन पर बैठते थे वही आम आदमी पार्टी आज भ्रष्टाचार के दलदल में बुरी तरह फंस गई है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि जेल में रहकर भी अरविन्द केजरीवाल सीएम की कुर्सी का मोह नहीं छोड़ रहे हैं, केजरीवाल ने भ्रष्टाचार के सारे रिकॉर्ड तोड़े हैं। श्री अनुराग ठाकुर ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर निशाना साधा और कहा कि एक महिला मुख्यमंत्री होने के बावजूद वह अपने ही राज्यों की महिलाओं को संरक्षण नहीं दे पाई बल्कि उन्होंने भ्रष्टाचारियों और बलात्कारियों को संरक्षण दिया है÷

श्री अनुराग ठाकुर ने आगे कहा, ÷अरविंद केजरीवाल कहते थे कि मैं भ्रष्टाचार के खिलाफ हूं, राजनीति में नहीं आऊंगा। ये वही अरविंद केजरीवाल हैं जो कांग्रेस के खिलाफ धरने पर बैठते थे। आज अरविंद केजरीवाल और उनकी आम आदमी पार्टी भ्रष्टाचार के दलदल में नीचे तक धसी हुई है। इनका उपमुख्यमंत्री, शिक्षा मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री, सांसद और पार्षद तक जेल में है। और अब शराब घोटाले के किंगपिन, मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल स्वयं जेल में हैं। इनकी अराजकता और भ्रष्टाचार ने उन्हें आज जेल में डाला है÷

आगे कांग्रेस पर निशाना चाहते हुए श्री अनुराग ठाकुर ने कहा, ÷आज सवाल कांग्रेस से भी है कि क्या उन्होंने अपना ज़मीर बेच दिया है? अरविंद केजरीवाल पहले सोनिया गांधी को गिरफ्तार कर दो दिन तक पूछताछ करने की मांग करते थे। ऐसी कौन सी मजबूरी है कि कांग्रेस का आम आदमी पार्टी के भ्रष्टाचार के साथ खड़ा होना जरूरी है? कल तक शराब घोटाले के आंकड़े प्रस्तुत कर मुकदमा करने की बात करने वाले कांग्रेसी नेता आज कहां हैं? आज यह उसके पक्ष में रैली करने की बात कर रहे हैं जिसने भ्रष्टाचार के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। क्या कांग्रेस अरविंद केजरीवाल को निर्दोष मानती है? मोदी जी ने सदैव कहा है ना खाऊंगा, ना खाने दूंगा जांच। जांच

मुंबई बनी दुनिया की अरबपति राजधानी, बीजिंग को पछाड़ा

– भारत 271 अरबपतियों के साथ वैश्विक स्तर पर तीसरे स्थान पर

नयी दिल्ली (एजेंसी)। मुंबई दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ते अरबपतियों की राजधानी है, इस साल इसमें 26 अरबपति शामिल हुए और यह दुनिया में तीसरा व एशिया में अरबपतियों की राजधानी बन गया है। नई दिल्ली पहली बार शीर्ष 10 में शामिल हुई। सामूहिक रूप से भारतीय अरबपतियों की संपत्ति 1 खरब डॉलर के बराबर है, जो वैश्विक अरबपतियों की संपत्ति का 7 फीसदी है, जो देश के पर्याप्त आर्थिक प्रभाव को दर्शाता है।

मुंबई एशिया की नई अरबपतियों की राजधानी के रूप में उभरा है और इस मामले में यह चीन के बीजिंग शहर को पीछे छोड़ चुका है, जबकि भारत 271 अरबपतियों के साथ वैश्विक स्तर पर जर्मनी को पीछे छोड़कर तीसरे स्थान पर है। यह बात एक ताजा रिपोर्ट में कही गई है।

भारत की आर्थिक शक्ति अरबपति आबादी में हुई बढ़ोतरी से और भी अधिक रेखांकित हुई। देश में आश्चर्यजनक रूप से 94 नए अरबपति जुड़े, जो संयुक्त राज्य अमेरिका को छोड़कर किसी भी देश में सबसे अधिक है। कुल मिलाकर यहां 271 अरबपति हैं। यह उछाल 2013 के बाद से सबसे ज्यादा है और भारतीय अर्थव्यवस्था में बढ़ते आत्मविश्वास का प्रमाण भी है। 2024 में जारी एक रिपोर्ट में कहा गया है कि भारतीय अरबपतियों की संचयी संपत्ति चीन के प्रति अरबपति औसत संपत्ति को पार करते हुए 1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गई। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि उद्योग के लिहाज से फार्मास्युटिकल क्षेत्र 39 अरबपतियों के साथ सबसे आगे है, इसके बाद ऑटोमोबाइल और ऑटो कंपोनेंट उद्योग में 27वां और रसायन क्षेत्र 24वां का स्थान है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि युवा, तकनीक-प्रेमी आबादी और नवाचार पर बढ़ते फोकस के चलते आज भारत इस एआई क्रांति को भुनाने के लिए अच्छी स्थिति में है, जिससे आने वाले सालों में भारत में और भी ज्यादा अरबपतियों की बढ़ोतरी होगी। अरबपतियों की बात करें तो भारतीय अरबपतियों की सूची में सबसे ऊपर रिलायंस इंडस्ट्रीज के मालिक मुकेश अंबानी हैं, जिनकी कुल संपत्ति 115 अरब डॉलर है। अदाणी समूह के संस्थापक गौतम अदाणी की संपत्ति 86 अरब डॉलर है। एक तरफ भारत में

अरबपतियों की संख्या बढ़ गई, तो दूसरी ओर इस मामले में चीन में गिरावट देखी जा रही है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि चीन के लिए यह साल खराब रहा है। हांगकांग 20 फीसदी नीचे, शेनझेन 19 फीसदी नीचे और शंघाई 7 फीसदी नीचे रहा है।

ये लोग हीरो हैं, जिन्होंने लोगों की जान बचाई : मूर

– जहाज के टकराने से टूट गया था पुल, 6 लोगों की हुई थी मौत

वाशिंगटन। अमेरिका के बाल्टीमोर शहर में एक कार्गो शिप के टकराने से पुल पूरी तरह टूट गया था जिसमें छह लोग लापता हो गए थे जिन्हें बाद में मृत मान लिया गया और अमेरिकी अधिकारी ने बुधवार सुबह तक के लिए उनकी तलाश रोक दी है। इस जहाज में सवार 22 सदस्यीय चालक दल के सभी सदस्य भारतीय थे और सभी सुरक्षित हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार कहा जा रहा है कि सिंगापुर के झंडे वाला कंटेनर जहाज मंगलवार तड़के बाल्टीमोर शहर के फ्रांसिस स्कॉट की ब्रिज से यह 300 मीटर लंबा यह जहाज पुल के एक खंभे से टकरा गया। जिसके टकराने कई वाहन और लगभग 20 लोग नदी में गिर गए थे। अमेरिकी अधिकारियों का कहना है कि जहाज के चालक दल ने टक्कर से पहले बिजली की समस्या की सूचना दी थी। रिपोर्ट में बताया कि कंटेनर जहाज डीएएलआई के मालिकों ने बताया कि जहाज मंगलवार को फ्रांसिस स्कॉट के बाल्टीमोर पुल के एक खंभे से टकरा गया था इसमें सवार दो पायलटों सहित चालक दल के सभी सदस्यों का पता लगा लिया गया है और किसी के घायल होने की कोई सूचना नहीं है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि मैरीलैंड के गवर्नर वेस मूर ने कहा कि जहाज, जो 8 समुद्री मील की तेज रफ्तार से आगे बढ़ रहा था जहाज के पुल के खंभे से टकराने से कुछ पल पहले आपात कॉल जारी किया गया था। इस अलर्ट से अधिकारियों ने भी तुरंत कदम उठाते हुए गाड़ियों को पुल पर जाने से रोक दिया। मूर ने कहा, 'हम आभारी हैं कि हमारे पास ऐसे अधिकारी थे, जिन्होंने समय रहते ट्रैफिक को रोक दिया। उन्होंने शिप के क्रू मेंबर्स की तारीफ करते हुए कहा, 'ये लोग हीरो हैं। उन्होंने कल रात लोगों की जान बचाई।

लंदन में किसानों का जाम.... संसद के पास ट्रैक्टर रैली निकाल कर किया प्रदर्शन

लंदन । ब्रिटेन की राजधानी लंदन में किसानों ने संसद के पास ट्रैक्टर निकाल कर अपना विरोध प्रदर्शन किया है। किसानों ने ब्रेक्जिट के बाद के नियमों और व्यापार समझौतों का विरोध करने के लिए ब्रिटिश संसद की ओर धीमी गति के काफिले में दर्जनों ट्रैक्टर चलाए। व्यापार समझौते को लेकर किसानों का कहना है कि ये आजीविका और खाद्य सुरक्षा को खतरे में डाल रहे हैं। सेव ब्रिटिश फार्मिंग एंड फेयरनेस फॉर फार्मर्स ऑफ केंट अभियान समूह के समर्थक दक्षिण-पूर्व इंग्लैंड से और राजधानी के दक्षिणी जिलों से होते हुए पार्लियामेंट स्क्वायर की ओर बढ़े, जहां दर्जनों समर्थक उनके स्वागत के लिए इंतजार कर रहे थे। यूनियन जैक के झंडे या घटिया आयात बंद करो लिखे साइन लहराकर ट्रैक्टरों की कतार टेम्स नदी के किनारे और संसद भवन की ओर बढ़ी और जयकारे लगाते हुए और हॉर्न बजाते हुए पार्लियामेंट स्क्वायर का चक्कर लगाया। ब्रिटेन ने अब तक बड़े पैमाने पर किसानों का विरोध प्रदर्शन नहीं देखा है, जिसने फ्रांस और अन्य यूरोपीय देशों के शहरों को जाम कर दिया है। 27 देशों के यूरोपीय संघ के किसानों ने अनावश्यक नौकरशाही नियमों, स्वच्छ हवा और मिट्टी के लक्ष्य और विदेशों से अनुचित प्रतिस्पर्धा के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया है, जो उन्हें दिवालियापन की ओर ले जा रहा है। ब्रिटेन के यूरोपीय संघ से बाहर निकलने से ब्रिटेन की कृषि पर भारी असर पड़ा है, इसने ब्रिटेन को ब्लॉक के मुक्त व्यापार क्षेत्र और कृषि नियमों के जटिल जाल से बाहर कर दिया है।

कई ब्रिटिश किसानों ने यूरोपीय संघ की बहु-आलोचना वाली सामान्य कृषि नीति के विरोध में ब्रेक्सिट का समर्थन किया। लेकिन अब कई लोग कहते हैं कि ब्रेक्सिट के बाद ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड सहित देशों के बीच व्यापार सौदों ने सस्ते आयात का द्वार खोल दिया है जिससे ब्रिटिश उत्पादकों को नुकसान हो रहा है।

इंसान अक्सर जंगली और घरेलू जानवरों में फैलाते हैं वायरस, ताजा अध्ययन में वैज्ञानिकों ने किया यह दावा

लंदन। इंसान अक्सर जंगली और घरेलू जानवरों में वायरस फैलाते हैं, जिससे उनमें बीमारी का खतरा बढ़ जाता है। यह दावा किया है वैज्ञानिकों ने ताजा अध्ययन में। यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन (यूसीएल) के शोधकर्ताओं ने वायरल जीनोम का विश्लेषण किया जिससे पता चला कि मनुष्यों को कभी भी वायरस फैलाने का स्रोत नहीं माना गया है। मानव-से-पशु में वायरस के फैलने पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। यूसीएल के जेनेटिक्स इंस्टीट्यूट और फ्रांसिस क्रिक इंस्टीट्यूट के डॉक्टरेट छात्र, प्रमुख लेखक सेड्रिक टैन ने कहा, 卐जब जानवर इंसानों से वायरस पकड़ते हैं, तो यह न केवल जानवरों को नुकसान पहुंचा सकता है, बल्कि पूरी प्रजाति के लिए संरक्षण का खतरा पैदा कर सकता है। बल्कि इसे रोकने के लिए बड़ी संख्या में पशुओं को मारने की आवश्यकता होती है।卐卐इसके अलावा, यदि मनुष्यों से लाया गया कोई वायरस किसी नई पशु प्रजाति को संक्रमित करता है, तो मनुष्यों के बीच ख़त्म होने के बाद भी यह पनपता रह सकता है। अध्ययन के लिए, टीम ने लगभग 12 मिलियन वायरल जीनोम का विश्लेषण किया।यूसीएल जेनेटिक्स इंस्टीट्यूट के सह-लेखक प्रोफेसर फ्रेंकोइस बलौक्स ने कहा, मनुष्यों से जानवरों में वायरस का फैलना संक्रमण का एक तरीका है, इसके अलावा और भी तरीके हैं।शोधकर्ताओं ने पाया कि 卐इंसानों से जानवर में फैलने वाला वायरस लगभग दोगुने से अधिक है। यह पैटर्न अधिकांश वायरल परिवारों में सुसंगत था।

समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने वाला विधेयक थाइलैंड के निचले सदन में पारित

बैंकॉक। थाइलैंड की संसद के निचले सदन ने बुधवार को एक विवाह समानता विधेयक को भारी बहुमत से पारित कर दिया जिसमें समलैंगिक विवाह समेत किसी भी लैंगिक पहचान के लोगों के बीच विवाह संबंधों को मान्यता दी गई है। इस विधेयक के कानून बनने के साथ थाइलैंड किसी भी लैंगिक पहचान वाले जीवनसाथियों के समानता के अधिकार को कानूनी मान्यता देने वाला दक्षिण पूर्व एशिया का पहला देश बन जाएगा। प्रतिनिधि सभा में उपस्थित 415 सदस्यों में से 400 ने विधेयक के पक्ष में मतदान किया, वहीं 10 लोगों ने इसके खिलाफ मतदान किया। पांच सदस्यों ने मतदान से दूरी बनाई या उसमें भाग नहीं लिया। विधेयक में नागरिक और व्यावसायिक संहिता में संशोधन कर 'पुरुषों और महिलाओं' तथा 'पति और पत्नी' शब्दों की जगह 'लोग' और 'वैवाहिक जीवनसाथी' शब्द डाले गए हैं। यह विधेयक 'एलजीबीटीक्यू प्लस' दंपतियों को पूरी तरह कानूनी, वित्तीय और चिकित्सा अधिकार प्रदान करेगा। विधेयक अब सीनेट में जाएगा, जो निचले सदन से पारित होने वाले किसी भी विधेयक को बमुश्किल ही कभी खारिज करता है। इसके बाद विधेयक को थाइलैंड के नरेश की स्वीकृति के लिए भेजा जाएगा। इसके कानून बनने के बाद थाइलैंड दक्षिण पूर्व एशिया का पहला और एशिया में ताइवान तथा नेपाल के बाद तीसरा ऐसा देश बन जाएगा जहां इस तरह का कानून पारित हुआ है।

वाशिंगटन में गर्भपात के अधिकारों को लेकर अदालत के सामने विरोध प्रदर्शन करते हुए लोग।

अमेरिका और ब्रिटेन का आरोप, चीन व्यापक साइबर जासूसी अभियान चला रहा

वाशिंगटन (ईएमएस)। अमेरिका ने चीन की जिनपिंग सरकार पर व्यापक साइबर जासूसी अभियान चलाने का आरोप लगाया है। अमेरिकी विदेश विभाग ने कहा कि चीन साइबर जासूसी से वैश्विक स्तर पर लाखों लोग प्रभावित हुए हैं। एडवांस्ड पर्सिस्टेंट थ्रेट 31 (एपीटी 31) कहा जाने वाला हैकिंग समूह कथित तौर पर चीन के सुरक्षा मंत्रालय से जुड़ा हुआ है। संबंधित डेवलपमेंट में न्यूजीलैंड ने 2021 में दुर्भावनापूर्ण साइबर हमले के लिए राज्य प्रायोजित चीनी हैकरों को जिम्मेदार ठहराया है। सुरक्षा सेवा मंत्री जूडिथ कोलिन्स ने संवेदनशील सरकारी जानकारी को साइबर खतरों से सुरक्षित रखने पर जोर दिया। साइबर हमलों के निशाने पर कथित तौर पर कानून निर्माता, शिक्षाविद्, पत्रकार और बीजिंग के आलोचक सरकारी अधिकारी, साथ ही रक्षा ठेकेदार और इस्पात, ऊर्जा और परिधान जैसे क्षेत्रों की विभिन्न कंपनियां शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, कहा जाता है कि वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारियों और सांसदों के पति-पत्नी भी निशाना बनाया गया था। उप अमेरिकी अटॉर्नी जनरल लिसा मोनाको के अनुसार, हैकिंग ऑपरेशन का प्राथमिक मकसद चीनी शासन के आलोचकों को चुप कराना, सरकारी संस्थानों में घुसपैठ करना और व्यापार रहस्यों को चुराना था। अमेरिकी अभियोजकों ने सात कथित चीनी हैकरों के खिलाफ अभियोग खोल दिया है, जिसमें उन पर लाखों अमेरिकियों के कार्य खातों, व्यक्तिगत ईमेल, ऑनलाइन स्टोरेज और टेलीफोन कॉल रिकॉर्ड से समझौता करने का आरोप लगाया गया है। इस बीच, ब्रिटिश अधिकारियों ने एपीटी 31पर चीन के आलोचक ब्रिटिश सांसदों को निशाना बनाने का आरोप लगाया है, इतना ही नहीं चीनी जासूसों के एक अलग समूह को ब्रिटेन के चुनावी निगरानी में हैक के लिए जिम्मेदार ठहराया है, जिसने ब्रिटेन में लाखों लोगों के डेटा से समझौता किया है। यूके और यूएस दोनों में चीनी राजनयिकों ने आरोपों को खारिज कर उन्हें निराधार और दुर्भावनापूर्ण बताया है। फिर भी, दोनों देशों ने कथित तौर पर चीन के राज्य सुरक्षा मंत्रालय से जुड़ी एक फर्म पर प्रतिबंध लगाया है, जिसे वे हैकिंग गतिविधि के लिए अग्रणी कंपनी होने का दावा करते हैं।

भारत ने फिलीपींस का समर्थन किया तो भड़क उठा चीन

बीजिंग(एजेंसी)। चीन की विस्तावदी नीति ही चीन के लिए चुनौतियां खड़ीं कर रही हैं। इसी नीति के कारण उसका कई देशों से पंगा चल रहा है। भारत पर भी चीन की हमेशा ही टेढ़ी नजर रहती है। इसी बीच भारत के विदेश मंत्री जयशंकर ने दक्षिण चीन सागर में चीन के साथ फिलीपीन के विवाद के बीच कहा था कि अपनी राष्ट्रीय संप्रभुत्ता को बनाए रखने में दक्षिणपूर्व एशियाई देश का भारत दृढ़ता से समर्थन करता है और वह रक्षा व सुरक्षा समेत सहयोग के नए क्षेत्रों में संभावनाएं तलाशना चाहता है। मनालो के साथ संवाददाता सम्मेलन में जयशंकर ने दक्षिण चीन सागर को लेकर चीन-फिलीपीन के बीच विवाद पर एक सवाल का जवाब दिया। उन्होंने कहा, संयुक्त राष्ट्र समुद्र विधि समझौता (यूएनसीएलओएस 1982) इस संबंध में समुद्र के विधान के तौर पर विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। सभी पक्षों को इसका अक्षरशः पूरी तरह पालन करना चाहिए। मैं इस अवसर पर फिलीपीन की राष्ट्रीय संप्रभुता को बनाए रखने के लिए भारत के समर्थन को दृढ़ता से दोहराता हूं।

बीजिंग ने भारत से विवादित दक्षिण चीन सागर पर उसके संप्रभुता के दावों और समुद्री हितों का सम्मान करने की अपील की। साथ ही कहा कि तीसरे पक्ष को इसमें हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। दरअसल, भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा था कि भारत फिलीपीन की संप्रभुता का समर्थन करता है। इसे लेकर सवाल पूछे जाने पर चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता लिन जियान ने कहा, समुद्री विवाद संबंधित देशों के बीच के मुद्दे हैं। तीसरे पक्ष को किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि हम संबंधित पक्षों से दक्षिण चीन सागर मुद्दे पर तथ्यों और सच्चाई का सीधे तौर पर सामना करने की अपील करते हैं। साथ ही चीन की क्षेत्रीय संप्रभुता और समुद्री अधिकारों व दक्षिण चीन सागर को शांतिपूर्ण रखने के क्षेत्रीय देशों के प्रयासों का सम्मान होना चाहिए। मालूम हो कि एस जयशंकर इस समय आधिकारिक यात्रा पर मनीला में हैं। इस दौरान उन्होंने फिलीपीन के विदेश मंत्री एनरिक मनालो से बातचीत की।

ये है विवाद का मुख्य कारण

चीन दक्षिण चीन सागर के अधिकांश हिस्से पर अपना दावा करता है जबकि फिलीपीन, वियतनाम, मलेशिया, ब्रुनेई और ताइवान समुद्री क्षेत्र पर अपना दावा करते हैं। फिलहाल चीन और फिलीपीन के बीच विवाद है, क्योंकि दोनों देशों के तटरक्षक जहाज दक्षिण चीन सागर में सेकंड थॉमस शोल पर अपना दावा जताने के लिए होड़ कर रहे हैं, जिसे दोनों अपना हिस्सा मानते हैं। चीन ने शिकायत की थी कि फिलीपीन ने चट्टान पर खड़े एक पुराने युद्धपोत तक निर्माण सामग्री पहुंचाने के लिए 2 तटरक्षक जहाज और एक आपूर्ति जहाज भेजा था। चीन का कहना है कि फिलीपीन ने 1999 में जानबूझकर एक युद्धपोत को खड़ा कर दिया था। वहीं, मनीला ने चीनी तटरक्षकों पर उनके जहाज को रोकने और पानी की बौछारों का इस्तेमाल करने का आरोप लगाया। फिलीपीन के विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता टेरेसिटा डाजा ने कहा कि फिलीपीन के विशेष आर्थिक क्षेत्र में उसकी नियमित और वैध गतिविधियों में चीन का निरंतर हस्तक्षेप अस्वीकार्य है।

महिलाओं के लिए सऊदी अरब ने कई पाबंदियां हटाई, अब मिस यूनिवर्स में हिस्सा ले रहीं रुमी

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। रियाद(ईएमएस)। इस्लामिक देश सऊदी अरब अब महिलाओं के प्रति काफी उदार होता जा रहा है। मोहम्मद बिन सलमान अल के राज में महिलाओं के लिए लगीं तमाम पाबंदियों को हटाया गया है। यही वजह है कि 27 साल की खूबसूरत मॉडल रूमी अलकाहतानी देश का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। यह सऊदी अरब के लिए एक और ऐतिहासिक कदम है। इससे पहले हाल ही में सऊदी अरब ने गैर-मुस्लिम राजनयिकों को शराब खरीदने की अनुमति दी थी। इसके अलावा महिलाओं को सार्वजनिक रूप से गाड़ी चलाने और पुरुषों के साथ कार्यक्रम में हिस्सा लेने की इजाजत दी थी। मॉडल रूमी अलकाहतानी ने सोमवार को इंस्टाग्राम पर जानकारी दी कि वह मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता में अपने देश सऊदी अरब से पहली प्रतिभागी होंगी।

बता दें कि सऊदी अरब की राजधानी रियाद की रहने वाली रूमी को इंटरनेशनल फेस्टिवलों में भाग लेने के लिए जाना जाता है। कुछ हफ्ते पहले मलेशिया में आयोजित मिस एंड मिसेज ग्लोबल एशियन में वो हिस्सा ले चुकी हैं। रिपोर्ट के अनुसार रूमी अलकाहतानी ने कहा, मेरा योगदान वैश्विक संस्कृतियों के बारे में सीखना और सऊदी संस्कृति और विरासत को दुनिया के सामने लाना है। मिस सऊदी अरब का ताज पहनने के अलावा, उनके पास मिस मिडिल ईस्ट (सऊदी अरब), मिस अरब वर्ल्ड पीस 2021 और मिस वुमन (सऊदी अरब) का खिताब भी है।

सऊदी अरब में हो रहे कई बदलाव- सऊदी अरब, जो लंबे समय से अपनी रूढ़िवादिता के लिए जाना जाता है, वर्तमान में 38 वर्षीय क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान के नेतृत्व में परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। अरब प्रायद्वीप में सबसे बड़े देश के रूप में सऊदी अरब ने ऐतिहासिक रूप से सख्त सामाजिक और धार्मिक नियंत्रण बनाए रखा है। हालांकि, हाल के महीनों में यहां कड़े प्रतिबंधों में ढील देखी गई है। सऊदी अरब में हो रहे इन बदलावों ने दुनिया भर का ध्यान खींचा है। विशेष रूप से महिलाओं पर प्रतिबंध हटाने लेकर। जिसमें उन्हें गाड़ी चलाने, पुरुषों संग कार्यक्रमों में भाग लेने और बिना पुरुष गार्जन के पासपोर्ट के लिए आवेदन करने की अनुमति दी गई है। इसके अलावा, सऊदी अरब, जो अपने सख्त शराब नीतियों के लिए जाना जाता है, ने हाल ही में गैर-मुस्लिम राजनयिकों को शराब खरीदने की अनुमति दी है।

कंधार से जुड़ रहे मॉस्को हमले के तार ,वीडियो भी सामने आया

मॉस्को (एजेंसी)। मॉस्को में हुए आतंकी हमले के तार अफगानिस्तान के कंधार से भी जुड रहे हैं। हमला किसने और क्यों किया इसको लेकर कई जांच एजेंसियां लगातार काम कर रही हैं। इसको लेकर एक वीडियो भी सामने आया है। अफगानिस्तान के कंधार स्थित काबुल बैंक के सामने पिछले सप्ताह उस समय आत्मघाती हमला हुआ, जब सैंकड़ों सरकारी कर्मचारी अपना वेतन लेने के लिए बैंक में पहुंचे हुए थे। इस आत्मघाती हमले में कम से कम 30 लोग मारे गए थे और अनेकों घायल हुए थे। जांच के दौरान इस आत्मघाती हमले का एक वीडियो सामने आया है। इस वीडियो में साफ तौर पर दिखाई दे रहा है कि आत्मघाती हमलावर विस्फोटक से भरा हुआ बैग लेकर बैंक के अंदर पहुंचता है। इसमें शीशे की दूसरी तरफ बड़ी तादाद में सरकारी कर्मचारी वेतन लेने के लिए जुटे हुए हैं। इतने में हमलावर विस्फोटक से भरे बैग के साथ नीचे बैठता है और उसके बाद अपने शरीर पर लगे विस्फोटक के साथ बेल्ट का आत्मघाती बटन ऑन करके खुद को उड़ा लेता है। इस मामले में हो रही जांच पर अफगानिस्तान की तालिबान सरकार ने बयान जारी करते हुए बताया कि यह हमला आतंकवादी संगठन आईएस द्वारा किया गया था और हमलावर उज्बेकिस्तान का मूल निवासी असदबेक मदियारोव था, जिसने सेंट पीटर्सबर्ग में उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। तालिबान के दावे के मुताबिक, यह हमलावर साल 2021 में भर्ती हुआ था और उसके बाद उसे इस्लामिक स्टेट के खुरासान मॉड्यूल में बड़ी वारदात अंजाम देने के लिए भेज दिया गया था। तालिबान जांच कर रहा है कि कहीं यह हमलावर इससे पहले मास्को वाले हमलावरों के साथ तो मौजूद नहीं था। जांच के दौरान यह बात सामने आ रही है कि हमलावरों ने पाकिस्तानी समर्थक गुटों से ट्रेनिंग ली थी।

हमास ने यूएनएससी के प्रस्ताव को ठुकराया ,गाजा में जारी रहेगी जंग

जेनेवा (एजेंसी)। आतंकी संगठन हमास की अकड़ के चलते गाजा में हजारों लोगों की जान चली गई। महिलाएं,बच्चे और बुजुर्ग प्रताड़ना का शिकार हैं। लोगों को भोजन पानी और बुनियादी जरुरतों से वंचित कर दिया गया है। भुखमरी की कगार में पहुंचे गाजा में मानवता कराह रही है। इसके बाद भी हमास का दिल नहीं पसीज रहा। यूएनएससी ने शांति का प्रस्ताव दिया था,लेकिन हमास ने एक झटके में उसे ठुकरा दिया। अब संभावना जताई जा रही है कि जंग फिलहाल नहीं रुकेगी और किस अंजाम तक पहुंचे कोई नहीं जानता।

हमास के बयान से कुछ समय पहले ही संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने गाजा में बंदी बनाए गए सभी लोगों की रिहाई और तत्काल युद्धविराम करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी थी। इस संबंध में मतदान से इजराइल और अमेरिका के बीच गतिरोध पैदा हो गया। अमेरिका ने सोमवार को मतदान में अपने 'वीटो' अधिकार का इस्तेमाल नहीं करने का फैसला किया। जवाब में इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल की प्रस्तावित वाशिंगटन यात्रा को निरस्त कर दिया। नेतन्याहू ने हमास की मांगों को खारिज कर दिया है। वहीं नेतन्याहू ने अमेरिका से भी नाराजगी जताते हुए कहा कि वह यूएनएससी में अपनी नीति से पीछे हट गया है। उसे इस प्रस्ताव के खिलाफ वीटो का इस्तेमाल करना चाहिए था क्योंकि प्रस्ताव में बंधकों की रिहाई की बात नहीं कही गई है। बता दें कि इससे पहले अमेरिका भी सीजफायर को लेकर एक प्रस्ताव पेश किया था लेकिन रूस और चीन ने इसपर वीटो लगा दिया था। इसमें बंधकों की रिहाई की भी बात कही गई थी।

हमास ने इजराइल पर नए युद्धविराम प्रस्ताव की प्रमुख मांगों की अनदेखी करने का आरोप लगाते हुए इसे खारिज कर दिया है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में पास इस प्रस्ताव में युद्ध की समाप्ति और गाजा से सैनिकों की पूर्ण वापसी की बात कही गई है। मुस्लिम देशों द्वारा लाए गए यूएनएससी के अस्थायी सदस्यों के इस प्रस्ताव का चीन और रूस ने भी समर्थन किया था। वहीं अमेरिका ने वोटिंग से दूरी बना ली थी।हमास ने सोमवार देर रात एक बयान में कहा कि उसने मध्यस्थों को सूचित किया है कि वह अपनी मूल स्थिति पर कायम है, जिसे मार्च की शुरुआत में बताया गया था। इसमें कहा गया है कि इजराइल ने 'व्यापक युद्धविराम, गाजा पट्टी से (इजराइली सैनिकों की) वापसी, विस्थापित लोगों की वापसी और वास्तविक कैदियों की अदला-बदली' की उसकी मूल मांगों का जवाब नहीं दिया है।

अमेरिका ने उगला भारत के खिलाफ जहर ,सीएए पर जताई चिंता

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। भारत में सीएए लागू होने के बाद अमेरिका ने इस पर चिंता जाहिर की है। अमेरिकी आयोग का कहना है कि सीएए से स्पष्ट होता है कि मुस्लिमों को सीएए परेशानी डाल सकता है। अमेरिका सरकार के बाद अब अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता संबंधी अमेरिकी आयोग (यूएससीआईआरएफ) ने नागरिकता (संशोधन) अधिनियम (सीएए) को लागू करने के लिए भारत सरकार द्वारा जारी अधिसूचना पर चिंता व्यक्त की है। अमेरिकी आयोग ने कहा है कि किसी को भी धर्म या विश्वास के आधार पर नागरिकता से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। यूएससीआईआरएफ के आयुक्त स्टीफन श्नेक ने एक बयान में कहा, 'समस्याग्रस्त सीएए पड़ोसी देशों से भागकर भारत में शरण लेने आए लोगों के लिए धार्मिक अनिवार्यता का प्रावधान स्थापित करता है।' श्नेक ने कहा कि सीएए हिंदुओं, पारसियों, सिखों, बौद्धों, जैनियों और ईसाइयों के लिए त्वरित नागरिकता का मार्ग प्रशस्त करता है, लेकिन इस कानून के दायरे से मुसलमानों को स्पष्ट रूप से बाहर रखा गया है। आलोचकों ने अधिनियम से मुसलमानों को बाहर रखने को लेकर सरकार पर सवाल उठाया है, लेकिन भारत ने अपने कदम का मजबूती से बचाव किया है।

वही दूसरी तरफ भारत और भारतीय समुदाय से संबंधित नीतियों का अध्ययन एवं विश्लेषण कर उनके बारे में जागरूकता फैलाने वाले 'फाउंडेशन फॉर इंडिया एंड इंडियन डायस्पोरा स्टडीज' (एफआईआईडीएस) ने कहा कि सीएए के ''तथ्यात्मक विश्लेषण'' के अनुसार, इस प्रावधान का उद्देश्य भारत के तीन पड़ोसी इस्लामिक देशों के प्रताड़ित धार्मिक अल्पसंख्यकों को नागरिकता प्रदान करना है। उसने कहा, गलतफहमियों के विपरीत, इसमें भारत में मुसलमानों को नागरिकता से वंचित करने या उनकी नागरिकता रद्द करने या उन्हें निर्वासित करने का प्रावधान नहीं है इसलिए, इसे 'उत्पीड़ित धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए शीघ्र नागरिकता अधिनियम' कहना उचित होगा।इसमें कहा गया है, 'हमें भरोसा है कि यूएससीआईआरएफ अन्य एजेंसियां और अन्य संस्थाएं सीएए पर इस जानकारी को उचित मानेंगी और यह समझेंगी कि सीएए अफगानिस्तान, बांग्लादेश और पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की स्थिति के बारे में यूएससीआईआरएफ द्वारा उठाई गई कुछ चिंताओं को सीधे तौर पर दूर करता है।श्नेक ने अपने बयान में कहा, अगर वास्तव में इस कानून का उद्देश्य उत्पीड़न झेलने वाले धार्मिक अल्पसंख्यकों की रक्षा करना होता, तो इसमें बर्मा (म्यांमा) के रोहिंग्या मुसलमान, पाकिस्तान के अहमदिया मुसलमान या अफगानिस्तान के हजारा शिया समेत अन्य समुदाय भी शामिल होते। किसी को भी धर्म या विश्वास के आधार पर नागरिकता से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। भारत के गृह मंत्रालय का कहना है कि इन देशों के मुसलमान भी मौजूदा कानूनों के तहत भारतीय नागरिकता के लिए आवेदन कर सकते हैं।

आईपीएल में आज होगा दिल्ली कैपिटल्स और राजस्थान रॉयल्स में मुकाबला

जयपुर (एजेंसी)। आईपीएल 2024 में दिल्ली कैपिटल्स गुरुवार को यहां राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ मुकाबले में जीत दर्ज करने के इरादे से उतरेगी। दिल्ली कैपिटल्स को अपने पहले ही मैच में हार का सामना करना पड़ा था। ऐसे में अब उसका लक्ष्य जीत की राह पर लौटन रहेगा। इस मैच में कप्तान ऋषभ पंत भी बड़ी पारी खेलना चाहेंगे। मैदान पर वापसी करते हुए पहले मैच में वह अधिक रन तो नहीं बना पाये थे पर वह अच्छी लय में दिखे थे। पहले मैच में उनकी विकेकीपिंग भी अच्छी थी जिससे पता चलता है कि वह अब पहले की तरह ही फिट हो गये हैं।

टीम के मुख्य कोच रिकी पोंटिंग ने पहले मैच में डेविड वार्नर और मिशेल मार्श को पारी की शुरुआत के लिए भेजा था पर ये दोनो ही बड़ा स्कोर नहीं बना पाये थे। जिससे मध्यक्रम पर दबाव आ गया था।

विकेटकीपर बल्लेबाज अभिषेक पोरेल ने हालांकि नाबाद 32 रन की तेजतर्रार पारी खेली जिससे दिल्ली की टीम नौ विकेट पर 174 रन का सम्मानजनक स्कोर खड़ा करने में सफल रही। पोरेल को 'इंपेक्ट प्लेयर के रूप में उतारा गया था। इससे दिल्ली के पास एक गेंदबाज कम हो गया। इसके बाद इशांत शर्मा का टखना मुड़ने से टीम की परेशानी बढ़ गयी थी।

इस मैच में कुलदीप यादव और अक्षर पटेल की स्पिन जोड़ी से भी टीम को अच्छी उम्मीद रहेंगी। वहीं दूसरी ओर राजस्थान रॉयल्स ने संजू सैमसन के नाबाद 82 रनों की सहायता से मुकाबला जीत लिया था।

रॉयल्स के रेयान पराग भी अच्छी लय में नजर आए हैं। रॉयल्स के शीर्ष चार बल्लेबाज दिल्ली के गेंदबाजी क्रम के खिलाफ आक्रामक रुख अपनाकर दबाव बनाने का प्रयास करेंगे। ऐसे में देखना होगा कि दिल्ली के स्पिनर कुलदीप

और अक्षर पटेल किस प्रकार विरोधी बल्लेबाजों पर अंकुश लगा पाते हैं। भूमिका अहम होगी। रॉयल्स के गेंदबाज भी अब तक अच्छी लय में नजर आये हैं। रॉयल्स के बोल्ट के अलावा संदीप शर्मा ने भी डेथ ओवरों में अच्छा प्रदर्शन किया है। दिल्ली की बल्लेबाजी वार्नर, मार्श के अलावा ऋषभ पर अधारित रहेगी। वहीं राजस्थान के पास जोस बटलर, यशस्वी रोमांचक रहेगा।

टीम

राजस्थान रॉयल्स: संजू सैमसन (कप्तान और विकेटकीपर), जोस बटलर, यशस्वी जयसवाल, रियान पराग, शिम्रोन हेटमायर, ध्रुव जुरेल, रविचंद्रन अश्विन, ट्रेंट बोल्ट, नंद्रे बर्गर, अवेश खान, युजवेंद्र चहल

दिल्ली कैपिटल्स : ऋषभ पंत (कप्तान और विकेटकीपर), डेविड वार्नर, मिशेल मार्श, शाई होप, रिकी भुई, ट्रिस्टन स्टब्स, अक्षर पटेल, सुमित कुमार, कुलदीप यादव, ईशांत शर्मा, खलील अहमद

धोनी ने कहा था अपना स्वाभाविक खेल खेलो : समीर रिजवी

चेन्नई (एजेंसी)। गुजरात टाइटंस के खिलाफ आक्रामक पारी खेलने वाले चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के नये बल्लेबाज समीर रिजवी अपने प्रदर्शन से खुश हैं। समीर ने इस मैच में छह गेंदों में 14 रन बनाये थे। उन्होंने मैच के बाद कहा कि पूर्व कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी ने उन्हें अपना स्वाभाविक खेल खेलने और दबाव में नहीं आने को कहा था। समीर ने कहा कि इससे उनका हौंसला बढ़ा था। साथ ही कहा कि बल्लेबाजी के लिए उतरते समय वह किसी भी गेंद पर बड़ा शॉट लगाने के लिए तैयार थे। रिजवी ने कहा कि वह सीएसके द्वारा चुने जाने से खुश हैं क्योंकि धोनी से मिलना उनका जीवन भर का सपना था। उन्होंने कहा, जब नीलामी हुई, सीएसके ने मुझे चुना, मैं खुश था क्योंकि धोनी से मिलना एक सपना था जो पूरा हुआ था, उनके साथ खेलना तो दूर की बात है। यह पूरा हो गया है। मुझे उनसे और स्टाफ से बहुत कुछ सीखने को मिला। मैं सीखने की कोशिश कर रहा हूं। जितना संभव हो उतना अच्छा करो।

धोनी की सलाह को याद करते हुए रिजवी ने कहा कि उन्होंने मुझे अपना स्वाभाविक खेल खेलने के लिए कहा था। रिजवी ने कहा, उन्होंने मुझे वैसे ही खेलने के लिए कहा है जैसे मैं खेलता हूं, उन्होंने मुझे बताया कि खेल वही है, कौशल वही है पर मानसिकता अलग है। उन्होंने मुझे दबाव महसूस न करने और स्थिति के अनुसार खेलने के लिए कहा है। उन्होंने मुझे पहले मैच में भारी भीड़ के सामने अपनी घबराहट पर नियंत्रण रखने को कहा था।

अपने जर्सी नंबर के बारे में रिजवी ने कहा कि वह मूल रूप से सात नंबर पहनते थे पर उन्हें नंबर एक से ही संतुष्ट होना पड़ा क्योंकि उनका पसंदीदा नंबर पहले से ही धोनी के अलावा कोई और नहीं इस्तेमाल कर रहा था। उन्होंने कहा, मेरी जर्सी का नंबर 7 है। मुझे यह नहीं मिल सका। इसलिए मुझे जर्सी नंबर एक मिला।

रुतुराज सीएसके के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ियों की सूची में शामिल, जडेजा को पीछे छोड़ा

चेन्नई (एजेंसी)। चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के कप्तान रुतुराज गायकवाड़ ने गुजरात टाइटंस के खिलाफ मैच में 46 रनों की अपनी पारी के साथ ही एक अहम उपलब्धि अपने नाम कर ली है। रुतुराज अब आईपीएल में सीएसके के लिए सबसे अधिक रन बनाने वाले सातवें खिलाड़ी बन गये हैं। उन्होंने ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा को पीछे छोड़ दिया है। रुतुराज ने 127.78 के स्ट्राइक रेट से रन बनाये हैं। उन्होंने सीएसके की ओर से 54 आईपीएल मैचों में 38.70 की औसत और 134.93 की स्ट्राइक रेट से 1,858 रन बनाए हैं। 53 पारियों में उन्होंने एक शतक और 14 अर्धशतक लगाए हैं और उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 101 रन है। वहीं दूसरी ओर सीएसके के लिए 174 मैचों में जडेजा ने 25.97 की औसत और 137.1 के स्ट्राइक रेट से दो अर्धशतकों के साथ 1,818 रन बनाए हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 62 है। सीएसके के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज सुरेश रैना हैं। रैना ने 200 मैचों में खेली गई 195 पारियों में 33.10 की औसत और 138.91 की स्ट्राइक रेट से 5,529 रन बनाए जिसमें दो शतक और 38 अर्द्धशतक शामिल हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 109 रन है। इसके अलावा सीएसके के लिए सबसे अधिक रन बनाने वाले अन्य खिलाड़ियों में पूर्व कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी के नाम 246 मैचों में 38.72 की औसत और 137.80 की स्ट्राइक रेट से 4,957 रन और फाफ डु प्लेसिस के नाम 100 मैचों में 34.90 के औसत और 132.07 के स्ट्राइक रेट के साथ 21 अर्द्धशतक सहित 2,932 रन हैं।

मुंबई में हार्दिक पांड्या को करना पड़ सकता है हूटिंग का सामना : मनोज तिवारी

मुंबई (एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर मनोज तिवारी को लगता है कि मुंबई इंडियन्स एक अप्रैल को यहां जब अपना पहला घरेलू आईपीएल मैच खेलेगा तो कप्तान हार्दिक पांड्या को और अधिक हूटिंग का सामना करना पड़ सकता है। तिवारी का हालांकि मानना है कि इस ऑलराउंडर के पास इस तरह की स्थिति से निपटने के लिए जरूरी धैर्य है। सत्र की शुरुआत से पहले मुंबई के कप्तान के रूप में रोहित शर्मा की जगह लेने वाले हार्दिक रविवार को जब अपनी पूर्व फ्रेंचाइजी गुजरात टाइटंस के खिलाफ खेलने उतरे तो अहमदाबाद में प्रशंसकों ने उनकी हूटिंग की।

मुंबई इंडियन्स की टीम टाइटंस से छह रन से हार गई और अगले सप्ताह सोमवार को यहां वानखेड़े स्टेडियम में राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ अपना

पहला घरेलू मैच खेलेगी। तिवारी ने कहा, 'आपको यह देखना होगा कि यहां मुंबई में उसका स्वागत कैसे किया जाता है। मुझे लगता है कि यहां उसकी थोड़ी अधिक हूटिंग होने वाली है क्योंकि एक प्रशंसक के रूप में मुंबई या रोहित शर्मा के प्रशंसक के रूप में, किसी ने भी उम्मीद नहीं की थी कि कप्तानी हार्दिक को दी जाएगी।'

उन्होंने कहा, 'रोहित ने मुंबई इंडियंस को पांच ट्रॉफियां दीं, इसके बावजूद उन्हें कप्तानी गंवानी पड़ी। मुझे नहीं पता कि क्या कारण है लेकिन मुझे लगता है कि यह प्रशंसकों को पसंद नहीं आया। और मैदान पर आपको इसी की प्रतिक्रिया दिख रही है।' हालांकि हार्दिक इस स्थिति से जिस तरह निपटे उससे तिवारी प्रभावित हैं। उन्होंने कहा, 'मैं हाल ही में टेलीविजन के माध्यम से जो कुछ भी देख रहा हूं, हूटिंग के बावजूद उसने धैर्य बनाए रखा, वह नर्वस नहीं हुआ जो अच्छे स्वभाव की निशानी है।' पश्चिम बंगाल के खेल मंत्री तिवारी ने कहा कि हार्दिक को अपने प्रदर्शन पर ध्यान केंद्रित करना होगा जिससे कि वह एक जून से अमेरिका और वेस्टइंडीज में शुरू होने वाले टी20 विश्व कप के लिए अच्छी स्थिति में रहें।

शुभमन पर धीमी ओवर गति के लिए जुर्माना

चेन्नई । आईपीएल 2024 में गुजरात टाइटंस टीम के कप्तान शुभमन गिल पर जुर्माना लगा है। शुभमन पर ये जुर्माना उनकी टीम की चेन्नई सुपरकिंग्स (सीएसके) टीम के खिलाफ मुकाबले में धीमी ओवर गति के लिए लगाया गया है। गुजरात टाइटंस को इस मैच में हार का सामना करना पड़ा था। अब जुर्माना लगने से उसकी मुश्किलें और बढ़ गयी हैं। आईपीएल की ओर से इस मामले में कहा गया, न्यूनतम ओवर गति से संबंधित आचार संहिता के तहत यह गुजरात टीम का सत्र का ये पहला अपराध था, इसलिए शुभमन पर 12 लाख रुपये का जुर्माना ही लगाया गया है। इस मैच में गुजरात टाइटंस की टीम के लिए कुछ भी अच्छा नहीं रहा और उसके बल्लेबाज व गेंदबाज विफल रहे। शुभमन भी इस मैच में रन बनाने में असफल रहे और शुरुआत में ही पेवेलियन लौट गये। गुजरात टाइटंस अब तक इस टूर्नामेंट में एक जीत और एक हार के साथ अंक तालिका में छठे स्थान पर फिसल गयी है।

2026 विश्वकप के लिए भारतीय टीम क्वालीफाई नहीं कर पायी तो पद छोड़ दूंगा : स्टीमेक

नई दिल्ली। भारतीय फुटबॉल टीम अभी मुख्य कोच इगोर स्टीमेक के मार्गदर्शन में अभ्यास कर रही है। टीम 2026 के फीफा विश्वकप क्वालीफायर्स के लिए प्रयास कर रही है। इसी बीच स्टीमेक ने कहा है कि अगर उनकी टीम इस बार क्वालीफाई करने में विफल रही तो वह अपना पद छोड़ देंगे। स्टिमक ने कहा कि अगर भारतीय फुटबॉल टीम फीफा विश्व कप 2026 के क्वालीफायर्स के तीसरे दौर में पहुंचने में विफल रही तो वह अपने पद पर बने नहीं रहेंगे। स्टिमक का लक्ष्य टीम को विश्व कप क्वालीफायर के तीसरे दौर में पहुंचाना और एएफसी एशिया कप 2027 में सीधे प्रवेश दिलाना है। स्टिमक ने कहा,''अगर मैं भारत को तीसरे दौर में पहुंचाने में नाकाम रहता हूं तो मैं अपना पद छोड़ दूंगा। मैंने पिछले 5 वर्षों में जो कुछ भी काम किया उसके सम्मान के साथ मैं यह पद किसी और के लिए छोड़ दूंगा।''स्टिमक ने 2019 में भारत के मुख्य कोच का पद संभाला था और उसके बाद से ही भारतीय फुटबॉल टीम को प्रदर्शन लगातार बेहतर हुआ है। पिछले साल उनका अनुबंध जून 2026 तक बढ़ा दिया गया था। भारतीय टीम अभी विश्वकप क्वालीफाइंग ग्रुप ए में तीन मैच में चार अंक लेकर दूसरे स्थान पर है। वह कुवैत से एक अंक आगे है जिसके तीन मैच में तीन अंक हैं। भारतीय टीम अब भी तीसरे दौर में जगह बना सकती है हालांकि पिछले मैच में अफगानिस्तान के खिलाफ अंक बांटने से उसकी संभावनाओं को करारा झटका लगा है। उन्होंने कहा कि वह अफगानिस्तान के भारत ने अच्छा खेला था। उन्होंने कहा कि बड़ी प्रतियोगिताओं से पहले लंबे समय के और अभ्यास शिविर लगाये जाने चाहिये।

बाबर आजम को फिर कप्तान बनाने पर विचार कर रहा पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) को राष्ट्रीय टीम का नेतृत्व करने के लिए शान मसूद और शाहीन शाह अफरीदी की क्षमता पर भरोसा नहीं रह गया है और उसे लगता है कि पूर्व कप्तान बाबर आजम एक बार फिर टीम की कप्तानी के लिए सर्वश्रेष्ठ विकल्प हैं।

पिछले साल भारत में एकदिवसीय विश्व कप के दौरान पाकिस्तान के ग्रुप चरण से आगे नहीं बढ़ पाने के बाद बाबर ने सभी प्रारूपों में टीम की कप्तानी छोड़ दी थी। मसूद को जहां टेस्ट टीम का कप्तान नियुक्त किया गया तो वहीं शाहीन को टी20 टीम का कप्तान बनाया गया। पीसीबी थिंक टैंक के सूत्रों ने कहा कि बोर्ड इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि कोई व्यावहारिक विकल्प उपलब्ध नहीं होने के कारण बाबर फिर से टीम का

नेतृत्व करने के लिए सबसे अच्छा विकल्प हैं।

एक सूत्र ने बताया, 'मजेदार बात यह है कि ऐसा प्रतीत होता है कि बोर्ड के अध्यक्ष में बदलाव के साथ ही पदाधिकारियों ने टेस्ट और टी20 प्रारूपों में राष्ट्रीय टीम का नेतृत्व करने की शान मसूद और शाहीन शाह अफरीदी की क्षमता पर भरोसा खो दिया है।' सूत्र ने कहा कि दिलचस्प बात यह है कि बाबर अब कुछ तेवर दिखा रहे हैं। सूत्र ने कहा, 'बाबर से यह पता लगाने की कोशिश की गई कि क्या वह फिर से कार्यभार संभालने के लिए तैयार हैं और उन्होंने कुछ आशंकाएं जताई हैं। जाहिर है कि वह बोर्ड अध्यक्ष से कुछ आश्वासन चाहते हैं।%

जका अशरफ जब पीसीबी अध्यक्ष थे तो विश्व कप के तुरंत बाद बाबर को सफेद गेंद के प्रारूप के कप्तान के पद से हटा दिया गया था। इसके बाद उन्होंने टेस्ट टीम के कप्तान का पद भी छोड़ने का विकल्प चुना। बाबर 2020 से सभी प्रारूपों में टीम के कप्तान थे लेकिन एशिया कप और विश्व कप में खराब प्रदर्शन के कारण उन्हें कप्तानी से हटा दिया गया।

विश्व कप क्वालीफायर: छेत्री का 150वां अंतरराष्ट्रीय मैच, अफगानिस्तान ने भारत को 2-1 से हराया

मुंबई (एजेंसी)। निचली रैंकिंग की अफगानिस्तान ने मंगलवार को 2026 फीफा विश्व कप क्वालीफायर में भारत को 2-1 से शिकस्त दी जिससे घरेलू टीम को हाल के वर्षों में अपनी सबसे शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा। भारत के करिश्माई स्ट्राइकर सुनील छेत्री के अपने 150वें मैच में 94वां अंतरराष्ट्रीय गोल दागा लेकिन इसके बावजूद घरेलू टीम हार गयी। उन्होंने 37वें मिनट में पेनल्टी पर गोल दागा। विश्व कप और 2027 एएफसी एशियाई कप के संयुक्त क्वालीफायर के दूसरे चरण में भारत के घरेलू मैच में अफगानिस्तान ने 71वें मिनट में रहमत अकबरी के गोल से बराबरी हासिल कर ली। फिर घरेलू टीम को झटका लगा जब गुरप्रीत सिंह को पीला कार्ड दिखाया गया। इसके बाद मिली पेनल्टी पर शरीफ मुखम्मद ने 88वें मिनट में अपनी टीम को निर्धारित समय में केवल दो मिनट रहते 2-1 की बढ़त दिलाकर जीत दिलायी। भारत और अफगानिस्तान ने 22 मार्च को सऊदी अरब के आभा में पहले चरण में गोलरहित ड्रा खेला था।

नोवाक जोकोविच ने कोच इवानिसेविच से नाता तोड़ा, जीते हैं 12 ग्रैंड स्लैम

लंदन । शीर्ष रैंकिंग के टेनिस खिलाड़ी नोवाक जोकोविच ने 2018 से उनके कोच रहे गोरान इवानिसेविच से अलग होने का फैसला किया है। इवानिसेविच के साथ रहते हुए सर्बिया के खिलाड़ी जोकोविच ने 12 ग्रैंड स्लैम खिताब जीते हैं। जोकोविच रिकॉर्ड 24 खिताब के साथ पुरुष वर्ग में सबसे ज्यादा ग्रैंड स्लैम जीतने वाले खिलाड़ी हैं। जोकोविच ने बुधवार को 'इंस्टाग्राम' पर लिखा कि उन्होंने 'कुछ दिन पहले से' इवानिसेविच के साथ काम करना छोड़ दिया था। जोकोविच ने लिखा, 'कोर्ट पर हमारे रिश्तों में कई उतार-चढ़ाव रहे लेकिन हमारी दोस्ती हमेशा काफी मजबूत रही।' जोकोविच ने साल 2024 में अब तक कोई खिताब नहीं जीता है। वह ऑस्ट्रेलियाई ओपन के सेमीफाइनल में हार गए थे। इवानिसेविच ने 2001 में वाइल्ड कार्डधारी के तौर पर विंबलडन का खिताब जीता था।

ग्रीम स्मिथ के नाम है ये अनौखा रिकार्ड

नई दिल्ली । ग्रीम स्मिथ एक बेहतरीन बल्लेबाज होने के साथ ही दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान भी रहे हैं। उनके नाम एक अनौखा रिकार्ड भी दर्ज है। ये है टीम को टेस्ट में सबसे अधिक जीत और हार का रिकार्ड। स्मिथ ने 108 टेस्ट में अपनी टीम की कप्तानी की थ। स्मिथ की कप्तानी में दक्षिण अफ्रीकी टीम को सबसे अधिक 53 टेस्ट में जीत हासिल हुई जबकि 29 हार भी उन्ही ही कार्यकाल में मिली। इसके अलावा भी उन्होंने एक मैच में आईसीसी एकादश की भी कप्तानी की थी जिसमें भी उनकी टीम को हार मिली। स्मिथ ऐसे एकमात्र कप्तान हैं जिन्होंने अपनी अगुवाई में टीम को 50 से अधिक टेस्ट में जीत दिलाई है। इस मामले में ऑस्ट्रेलिया के रिकी पोंटिंग और स्टीव वॉ उनसे कही पीछे हैं। पोंटिंग ने 77 टेस्ट में कप्तानी करते हुए ऑस्ट्रेलिया को 48 जीत दिलाई जबकि स्टीव वॉ ने 57 टेस्ट में 41 जीत हासिल की। भारतीय टीम के पूर्व कप्तान विराट कोहली इस मामले में चौथे स्थान पर हैं जिन्होंने 68 टेस्ट में भारत की कप्तानी करते हुए 40 में टीम को जीत दिलाई। स्मिथ अगर सबसे सफल कप्तान हैं तो टीम को सबसे अधिक हार भी उन?हीं की क?तानी में मिली है। उनकी कप्तानी में टीम को 29 टेस्ट (28 में दक्षिण अफ्रीका और एक में आईसीसी एकादश के कप्तान) में हार का सामना करना पड़ा है। इस मामले में दूसरे स्थान पर न्यूजीलैंड के कप्तान स्टीफन फ्लेमिंग और तीसरे स्थान पर इंग्लैंड के जो रूट व वेस्टइंडीज के ब्रायन लारा हैं। फ्लेमिंग की कप्तानी में कीवी टीम को 27 टेस्ट और रूट व लारा की कप्तानी में उनकी टीम को 26-26 टेस्ट में हार का सामना करना पड़ा। स्मिथ कप्तानी के साथ ही अपने शानदार बल्लेबाजों के लिए भी जाने जाते हैं। टेस्ट क्रिकेट में 117 टेस्ट में उन्होंने 48.25 के औसत से 9265 रन बनाए जिसमें 27 शतक भी हैं। 109 टेस्ट में कप्तानी के अलावा स्मिथ ने 150 एकदिवसीय अफ्रीकी टीम की कप्तानी भी है जिसमें 92 मैच में टीम को जीत मिली, 51 में हार, एक मैच टाई रहा जबकि छह में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। उन्होंने 27 टी20 में दक्षिण अफ्रीका टीम की कप्तानी की जिसमें से 18 में टीम को हार मिली जबकि 9 में हार का सामना करना पड़ा। उन्होंने अपने करियर में पांच दोहरे शतक भी लगाये हैं। वह भारतीय टीम के पूर्व तेज जहीर खान के सबसे अधिक 14 बार शिकार बने।

भारत-पाक द्विपक्षीय श्रृंखला को लेकर क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने दिखाई रुचि: रिपोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। नई दिल्ली -क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) ने भारत और पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय श्रृंखला की मेजबानी में रुचि व्यक्त की है, क्या बीसीसीआई और पीसीबी दोनों के बीच मैचों के लिए आपसी सहमति से सहमत होंगे। भारत और पाकिस्तान ने 2012-13 के बाद से कोई द्विपक्षीय श्रृंखला नहीं खेली है और दोनों देश केवल विश्व कप और चैंपियंस ट्रॉफी जैसे वैश्विक आईसीसी आयोजनों में ही भिड़ते हैं।

दोनों एशियाई देश इस नवंबर में एक ही समय पर ऑस्ट्रेलिया में होंगे, क्योंकि सीए ने 22 नवंबर से शुरू होने वाली बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी श्रृंखला के लिए भारत के पहुंचने से कुछ समय पहले पाकिस्तान के साथ अपने अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम की घोषणा की थी, जिसमें तीन एकदिवसीय मैच और तीन टी20 मैच खेले जाएंगे। रिपोर्ट के अनुसार सीए के क्रिकेट संचालन प्रबंधक पीटर रोच ने मंगलवार को कहा कि राष्ट्रीय संस्था भारत और पाकिस्तान के बीच मैच की मेजबानी करने में सक्षम होना पसंद करेगी और दोनों देशों के बोर्डों के प्रति रुचि व्यक्त करना जारी रखेगी।

रोच ने कहा, 'हम हमेशा मैचों और सामग्री के अवसरों में रुचि रखते हैं जो हमारे प्रशंसकों को शामिल करेंगे और यह कहना उचित है कि दुनिया का हर देश भारत और पाकिस्तान को अपने देश में प्रतिस्पर्धा करते देखना पसंद करेगा। हम रिकॉर्ड पर कह रहे हैं कि हम उन देशों में से एक हैं जिन्होंने सवाल पूछा है। इस समय कार्यक्रम में ऐसा करने के लिए कोई जगह नहीं है लेकिन हम उनसे किसी भी अन्य अवसर के बारे में बात करते रहेंगे। लेकिन इस विशिष्ट उदाहरण में, उस शेड्यूल में कोई बदलाव नहीं होने जा रहा है।'

2022 में एमसीजी में प्रतिद्वंद्वी देशों के बीच टी20 विश्व कप मुकाबले के टिकट पांच मिनट के भीतर बिक गए थे जिससे 90,000 से अधिक प्रशंसक आकर्षित हुए। इसी तरह 2015 में एडिलेड में हुई भिड़ंत भी काफी चर्चित रही थी। इस मांग ने सुझाव दिया होगा कि भविष्य में पाकिस्तान-भारत मैचों के लिए ऑस्ट्रेलिया एक आदर्श तटस्थ स्थल हो सकता है।

सीए के मुख्य कार्यकारी निक हॉकले ने भी द्विपक्षीय श्रृंखला के लिए दो एशियाई देशों की मेजबानी करने की इच्छा दोहराई। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि जो कोई भी एमसीजी में भारत-पाकिस्तान मैच के लिए यहां आया था, वह इसे सबसे यादगार अवसरों में से एक के रूप में याद रखेगा, न कि केवल खेल के अवसरों में, जहां मैं कभी गया हूं। अगर अवसर मिला तो हम इसकी मेजबानी करना पसंद करेंगे यदि हम कोई भूमिका निभा सकते हैं, तो हमें

अच्छा लगेगा।' उन्होंने कहा, 'हम पाकिस्तान की मेजबानी करने के लिए बहुत उत्साहित हैं। हम भारत की मेजबानी करने के लिए बहुत उत्साहित हैं। अगर हम मदद कर सकते हैं, तो यह बहुत अच्छा है। लेकिन मुझे लगता है कि कई मायनों में, यह एक द्विपक्षीय श्रृंखला है।'

क्रू की कहानी सुनी तो हंसी नहीं रोक पाई कृति

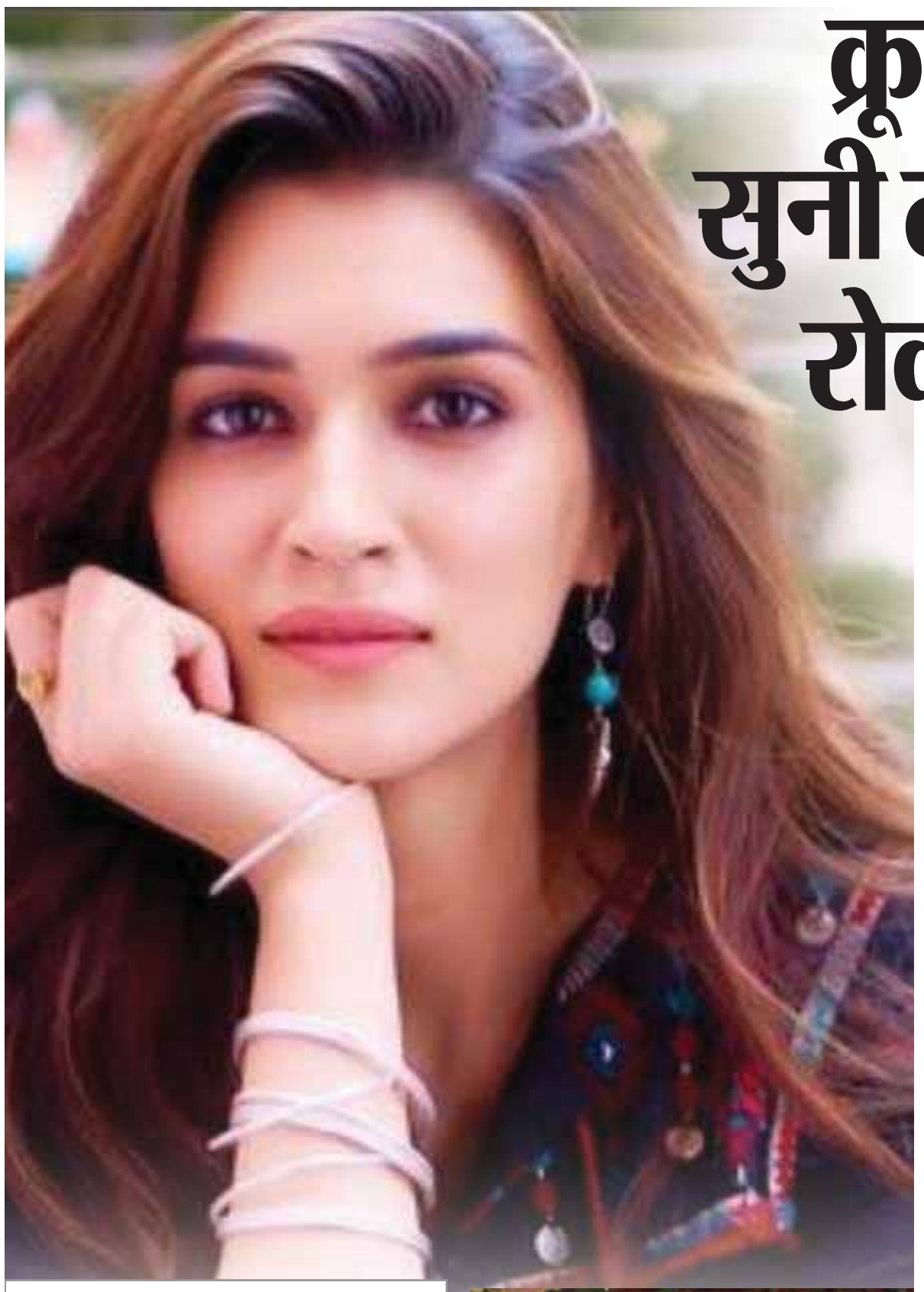

बालीवुड फिल्म क्रू की रिलीज में सिर्फ एक हफ्ता बचा है, ऐसे में दर्शकों के उत्साह को और बढ़ाते के लिए राइटर मेहुल सूरी और निधि मेहरा ने एक दिलचस्प जानकारी शेयर की है।

उन्होंने बताया हैं कि कृति सेनन को क्रू के लिए किस तरह से ऑन बोर्ड लाया गया।क्रू वह फिल्म है जिसका दर्शकों द्वारा बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। फिल्म में ट्रेलर ने बिल्कुल साफ़ कर दिया है कि फिल्म दर्शकों के लिए बहुत सारा एंटरटेनमेंट लेकर आने वाली है, लेकिन कृति सेनन को फिल्म में लाने की कहानी और भी ज्यादा दिलचस्प है। कृति सेनन के ऑन बोर्ड आने की कहानी को शेयर करते हुए राइटर मेहुल सूरी और निधि मेहरा ने कहा है, कृति ने जब स्क्रिप्ट सुनी तो वह अपनी हंसी नहीं रोक पाईं, उन्हें यह बेहद मजेदार लगी। उन्हें यह इतनी पसंद आई कि उन्होंने पूरी कहानी सुने बिना ही तुरंत इस रोल के लिए हामी भर दी। उनके जेनुइन रिएक्शन ने साबित कर दिया कि स्क्रिप्ट वाकई कितनी मजेदार है।卐

क्रू के साथ एक शानदार सिनेमेटिक यात्रा पर निकलने के लिए तैयार हो जाइए। राजेश ए कृष्णन के, डायरेक्शन और बालाजी टेलीफिल्म्स और अनिल कपूर फिल्म एंड कम्युनिकेशन नेटवर्क के सहयोग में बनीं, यह फिल्म 29 मार्च 2024 को सिनेमाघर में रिलीज होने के लिए तैयार है। ऐसे में तैयार हो जाइए एक ऐसे शानदार एडवेंचर के लिए, जो आपको बिल्कुल अपने साथ बांधे रखेगी।

फिल्म से उम्मीद है कि यह एक ऐसी सिनेमैटिक स्पेक्टाकल देगी जो आपको यादगार पलों में ले जाएगी। बता दें कि क्रू के ट्रेलर और गाने को दर्शकों से शानदार रिस्पॉन्स मिल रहा है। यह कहा जा सकता है कि इस कमर्शियल फैमिली एंटरटेनर के आने के लिए इसने एक परफेक्ट टोन सेट किया है, साथ ही साथ इस चीज ने दर्शकों की उत्सुकता को भी फिल्म देखने के लिए बढ़ा दिया है।

जान्हवी 50 बार यात्रा कर चुकी तिरुपति बालाजी की

हाल ही में अपने बर्थडे पर बालीवुड एक्ट्रेस जाह्नवी बॉयफ्रेंड शिखर पहाड़िया और बेस्ट फ्रेंड ओरी के साथ भगवान से प्रार्थना करने व आशीर्वाद लेने के लिए मंदिर गईं। अब एक्ट्रेस की एक वीडियो सामने आया है जिसे ओरी ने कैमरे में कैप्चर किया है और इसे अपने यूट्यूब चैनल पर भी शेयर किया।

तीनों ने अपनी जर्नी शुरू की और शाकाहारी भोजन के लिए जाह्नवी की आंटी के घर गए। इसके बाद वे सभी मंदिर गए। इस वीडियो में जिसने सबका ध्यान खींचा वह था जाह्नवी का घुटनों के बल मंदिल की सीढ़ियां चढ़ना। हां, एक निश्चित संख्या में सीढ़ियां चढ़ने के बाद जाह्नवी, ओरी और अन्य लोगों ने घुटनों के बल सीढ़ियां चढ़ना शुरू कर दिया क्योंकि यह वहां की एक लोकप्रिय प्रथा है। ओरी ने कुछ कदम चलने के बाद हार मान ली लेकिन जान्हवी ने घुटनों के बल अपनी जर्नी जारी रखी जो काफी कठिन थी। इस मंदिर से अपने जुड़ाव पर जाह्नवी ने कहा–मुझे पवित्र मंदिर के साथ एक आध्यात्मिक जुड़ाव है और मैं लगभग 50 बार धाम यात्रा कर चुकी हूं। मैंने भगवान बालाजी के साथ अपनी प्रार्थना पूरी करने के लिए सीढ़ियों पर अपनी घुटनों पर चढ़ाई की। आंध्र प्रदेश का तिरुपति वेंकटेश्वर मन्दिर की हिंदुओं में बड़ी मान?यता है।

आंध्र प्रदेश के तिरुपति जिले के पहाड़ी शहर तिरुमला में स्थित इस मंदिर में लाखों श्रद्धालु पहुंचते हैं। यह मंदिर भगवान विष्णु के एक रूप भगवान वेंकटेश्वर को समर्पित है, जिनके बारे में माना जाता है कि वे मानव जाति को कलियुग की परीक्षाओं और परेशानियों से बचाने के लिए पृथ्वी पर प्रकट हुए थे। काम की बात करें तो जाह्नवी आने वाले दिनों में कई बड़ी फिल्मों में नजर आने वाली हैं। इनमें जूनियर एनटीआर की फिल्म देवरा का नाम शामिल है। जाह्नवी कपूर और जूनियर एनटीआर की देवरा पार्ट 1 10 अक्टूबर 2024 को तेलुगु, तमिल, हिंदी, कन्नड़ और मलयालम में थिएटर्स में रिलीज होगी।

फिल्म देवरा में जाह्नवी और एनटीआर के साथ सैफ अली खान भी लीड रोल प्ले कर रहे हैं। यह जाह्नवी की पहली तेलुगु फिल्म है। बता दें कि बालीवुड की स्टार किड एक्ट्रेस जाह्नवी कपूर काफी धार्मिक हैं। उन्हें अक्सर पवित्र तीर्थस्थलों पर स्पाट किया जाता है। इनमें तिरुपति बालाजी मंदिर जाह्नवी के दिल के बहुत करीब है, क्योंकि उनकी मां श्रीदेवी अक्सर वहां जाती रहती थीं और वह भी ऐसा ही करना चाहती हैं।

शाहरुख, अक्षय की फिल्में पुनः होगी प्रदर्शित

बालीवुड की सुपरहिट फिल्म बाजीगर और अक्षय कुमार फिल्म मैं खिलाड़ी तू खिलाड़ी व खिलाड़ी रेट्रो फिल्म फेस्टिवल में सिनेमाघरों में दोबारा रिलीज होगी। शाहरुख ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर बाजीगर को लेकर अपडेट शेयर की है।

शाहरुख ने पोस्टर शेयर करते हुए लिखा, 卐उस समय का फ्लैशबैक जब सिल्वर स्क्रीन पर इस फिल्म का जादू सब पर छाया था। बॉलीवुड क्लासिक बाजीगर के साथ हमारे रेट्रो फिल्म फेस्टिवल में उन पलों को फिर से जीने के लिए इनवाइट कर रहा हूं। मैं इन पुरानी यादों की यात्रा में आपके साथ शामिल होने के लिए काफी एक्साइटेड हूं। आइए एक साथ मिलकर बॉलीवुड रेट्रो फिल्म फेस्टिवल का जश्न मनाएं!卐 रेट्रो फिल्म फेस्टिवल 22 से 28 मार्च तक चलेगा। इस दौरान देश के करीब 25 सिनेपॉलिस थिएटर्स में बाजीगर, खिलाड़ी और मैं खिलाड़ी तू अनाड़ी को री रिलीज किया जा रहा है। इनकी एडवांस बुकिंग शुरू हो गई है। बता दें कि शाहरुख खान, शिल्पा शेट्टी और काजोल स्टारर बाजीगर साल 1993 में रिलीज हुई थी। यह फिल्म आज भी लोगों के दिलों पर राज करती है। यह आए दिन टीवी पर किसी न किसी चैनल पर आती रहती है और लोग इसका पूरा मजा लेते हैं। अब्बास मस्तान के डायरेक्शन में बनी इस रोमांटिक थ्रिलर के डायलॉग, गाने और शाहरुख की एक्टिंग ने कमाल कर दिया था। यह मूवी एक कल्ट क्लासिक बन चुकी है।

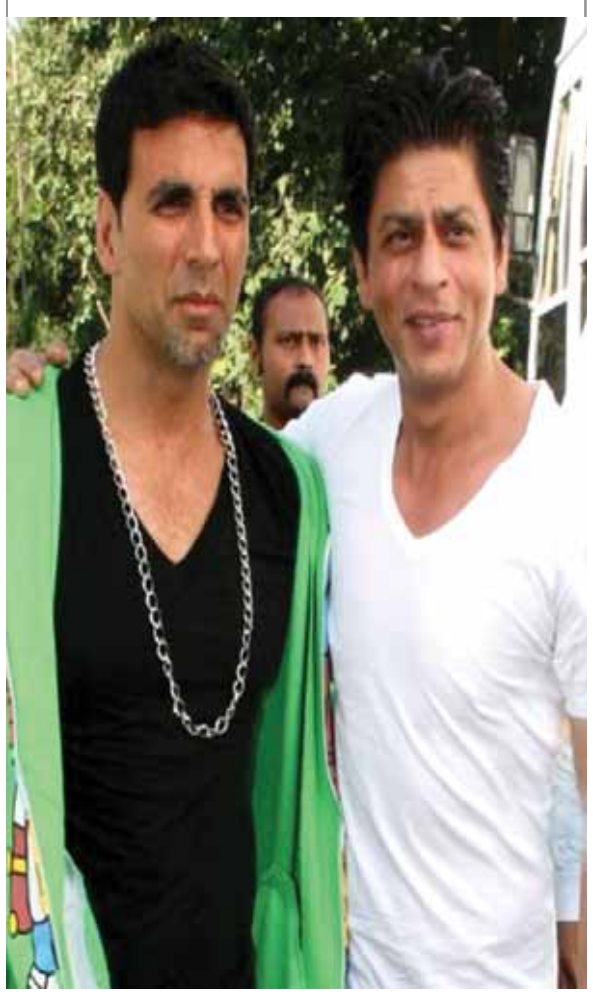

एक ही रंग की ड्रेस में दिखी फराह-अनन्या पांडे

हाल ही में बालीवुड की मशहूर कोरियोग्राफर–निर्देशक फराह खान अपने सिंगर फ्रेंड एड शीरन के साथ एक पार्टी में नजर आईं। इस पार्टी में एक ही रंग की ड्रेस में दिखी फराह खान और अनन्या पांडे दिखाई दी। फराह ने इंस्टाग्राम पर एक रील शेयर की, जिसमें उनके साथ एक ?ट्रेस अनन्या पांडे को भी देखा जा सकता है। फराह ने मुंबई में करण जौहर की पार्टी में शिरकत की। जहां उनकी मुलाकात एक ?ट्रेस अनन्या पांडे से हुई। फराह ने इस पल को कैमरे में कैद कर लिया, जिसे उन?होंने इंस्टाग्राम पर शेयर किया। इंस्टाग्राम पर शेयर की गई रील में फराह और अनन्या एक ही रंग की ड्रेस में दिखाई दे रही हैं। फराह ने कैप्शन में लिखा, जब कोई युवा और हॉट एक ही रंग पहनता है।नेटिजन्स ने कमेंट सेक्शन में रील पर मजेदार प्रतिक्रियाएं दी।एक यूजर ने लिखा, 卐इसमें कोई शक नहीं कि अनन्या क्यूट हैं, लेकिन आप कभी भी उस पर हावी हो जाती हैं। इस बात पर अनन्या भी असहमत नहीं होंगी। एक अन्य ने लिखा, आप दोनों लाल रंग में शानदार लग रही हैं। वीडियो जाहिर तौर पर हंसी–मजाक के लिए बनाया गया था, जिसमें दोनों को शांत दिखाया गया है।

भूमिका के लिए डांस बार में बिताई अदा शर्मा ने रातें

बालीवुड एक्ट्रेस अदा शर्मा का कहना है कि उन्होंने अपनी भूमिका के लिए एक डांस बार में रातें बिताईं। वह स्क्रीन पर प्रभावकारी दिखना चाहती थीं। एक्ट्रेस ने सनफ्लॉवर 2 में अपनी भूमिका को लेकर खुलासा किया है। एक्ट्रेस अदा शर्मा ने कहा कि मैं प्रभावकारी दिखना चाहती थी। यह सिर्फ इस बारे में नहीं है कि आप डांस कब कर रहे हैं बल्कि यह इस बारे में है कि आप कैसे बैठते और खड़े होते हैं और परफॉर्मेंस नहीं करने के दौरान आप अपने शरीर के साथ कितने सहज हैं। एक्ट्रेस ने कहा कि वह कभी–कभी ध्यान देने के लिए डांस बार में सुबह 5 बजे तक रुकती थीं। एक्ट्रेस ने आगे कहा कि वे इतने अच्छे थे कि उन्होंने मुझे बार में रुकने और चीजों को देखने की इजाजत दी। कस्टमर्स से बात करते समय उनके आत्मविश्वास को मैंने देखने की कोशिश की। मैं रात को 9 बजे जाती थी, कभी–कभी सुबह 4 से 5 बजे तक रुकती थी। वेब सीरीज सनफ्लॉवर सीरीज एक हाउसिंग सोसाइटी के निवासियों के जीवन पर आधारित है।

फिल्म फाइटर अब नेटफ्लिक्स पर रिलीज

रिपब्लिक डे के मौके पर सिल्वर स्क्रीन पर शानदार परफॉर्मेंस दे चुकी फिल्म फाइटर अब नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई है और नंबर 1 पोजीशन पर अपनी जगह बना के रखी है। ऋतिक ने एक बार फिर अपनी परफॉर्मेंस की जादू से दिल जीतने का काम किया है।

एक स्क्वाड्रन लीडर की भूमिका को बखूबी निभाते हुए, सुपरस्टार ने देशभक्ति और अपने अनबीटेबल चार्म से फिल्म को बड़े पर्दे पर ऊंची उड़ान दी है। ऐसे में अब यह ओटीटी एरिना में भी रिलीज हो चुकी है और शुरुआत से ही मजबूत पोजीशन बनाई हुए है। बता दें कि नेटिज़ेंस ऋतिक के शानदार प्रदर्शन और लुक के लिए उनकी तारीफ कर रहे हैं। फाइटरऑननेटफिलिक्स के साथ, फैन्स अपने प्यार का इजहार कर रहे हैं। यहां देखें नेटिज़ेंस के रिएक्शन – ऋतिक को दर्शकों से बेहद प्यार मिला है और उनकी फिल्म में जबर्दस्त परफॉर्मेंस के लिए बेहद अच्छे रिव्यूज भी मिले हैं। फाइटर को सिद्धार्थ आनंद ने डायरेक्ट किया है और इसमें दीपिका पादुकोण, अनिल कपूर, करण सिंह ग्रोवर और अक्षय ओबेरॉय भी अहम भूमिका में हैं।

यह फिल्म एक भारतीय वायुसेना के पायलट की जिंदगी में गोते लगाती है, जिसे ऋतिक रोशन ने निभाया है, और उनका देश और अपनों की सुरक्षा के लिए यात्रा को पेश किया है।बता दें कि नेटिज़ेंस ऋतिक के शानदार परफॉर्मेंस की तारीफ करने से खुद को रोक नहीं पा रहे हैं। ऋतिक रोशन की फाइटर नेटफ्लिक्स पर फुल फोर्स के साथ आई है और नंबर 1 पर ट्रेंड कर रही है।

होली सेलिब्रेशन की झलक शेयर की कियारा ने

अपने पति सिद्धार्थ मल्होत्रा के साथ एक्ट्रेस कियारा आडवाणी ने होली सेलिब्रेशन की झलक शेयर की। कियारा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर रंगों से खेलने के बाद अपनी और पति सिद्धार्थ मल्होत्रा की एक तस्वीर शेयर की। कियारा ने पोस्ट को कैप्शन दिया, मेरे होमी के साथ होली। वहीं बॉलीवुड की डिंपल गर्ल प्रीति जिंटा ने पति जीन गुडइनफ और दोस्तों के साथ होली समारोह की तस्वीरें शेयर कीं। एक्ट्रेस ने अपने फैंस और फॉलोअर्स को शुभकामनाएं देते हुए पोस्ट को कैप्शन दिया, आप सभी को होली की शुभकामनाएं। रंगों का यह त्योहार आपके और आपके परिवार के लिए खुशी, खुशहाली और शांति लाए। इसी तरह से बालीवुड के कई सितारों ने मुंबई में अपने–अपने करीबियों के साथ जमकर होली का लुत्फ उठाया।